₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कौमी

जनवरी 2016



- महानतम व्यक्तित्व मुहम्मद (सल्ल॰)
  –प्रो॰ मिर्ज़ा रफ़ीउद्दीन अहमद
- ब्याजरहित आर्थिक प्रणाली
  –डॉ॰ फ़रहत हुसैन
- हिन्दी काव्य में दलित चेतना
  –प्रो॰ डॉ॰ संजय गडपायले
- अपराध के साये में ज़िन्दगी
  –डॉ॰ अनुराग श्रीवास्तव

With Best Wishes From :



QUALITY FOODS

Seafood Processors & Exporters
AN ISO 9001 : 2008 COMPANY

FACTORY

PLOT NOS. 5B 39 & 5B 50A, CUNCOLIM INDUSTRIAL ESTATE,
CUNCOLIM, SALCETE, GOA-403 703
TEL. : 91 832 2865610/11/12, FAX : 832 2865609
E-mail : qualityfoods@sancharnet.in/qualityfoods@rediffmail.com

QUALITY EXPORTS

SEAFOOD PROCESSORS & EXPORTERS

FACTORY

Plot Nos. 5B 64, 65 66 & 67 Cuncolim Industrial Estate
Cuncolim, Salcete, GOA-403 703
E-mail : qualityexportsgoa@yahoo.com/mmigoa@yahoomail.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 25 अंक 7 जनवरी 2016

ऐ नबी, हमने तुम्हें भेजा है गवाह बनाकर, खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर, अल्लाह की अनुमति से उसकी ओर निमंत्रण देने वाला बनाकर और प्रकाशमान प्रदीप बनाकर । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

मानव का उत्थान

हम मानव हैं, मानवता का क्यों न करें सम्मान ?
मानवता के बिना न कोई मानव हुआ महान ॥

सत्य-न्याय-सद्भाव, सनातन
मानवता का मर्म,
है कर्तव्य कर्म करना ही
मानव-कुल का धर्म,
मानवता के बिना व्यर्थ है सारा धर्म-विधान ।
मानवता के बिना न कोई मानव हुआ महान ॥

सहज सरल निश्छल जीवन हो
सेवा पर-उपकार,
कभी किसी के धन-जीवन पर
करें नहीं अधिकार,
मंत्र यही है मानवता का मंगल-मोद प्रधान ।
मानवता के बिना न कोई मानव हुआ महान ॥

रहे पवित्र चरित्र परस्पर
सबके प्रति अनुकूल,
मानवता-वन में विलसेंगे
तभी मधुर फल-फूल,
मानवता की उन्नति ही है मानव का उत्थान ।
मानवता के बिना न कोई मानव हुआ महान ॥

● **भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'**

संपादक, 'सहकार' पत्रिका

अकबरपुर, अंबेडकर नगर,

उ०प्र०–224122



कहां क्या है ?

मानव का उत्थान	–भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'	3
कुरआन ज्योति		5
हदीस मंजरी		6
कब आएंगे अच्छे दिन ? (संपादकीय)		7
हिन्दी दिवस (आपके पत्र)		9
किसकी नक़ल की जाए	–सीताराम गुप्ता	13
दूसरों की ज़रूरतें पूरी करना	–मजदी फ़तहुल सैयद	15
हज़रत फ़ातिमा ज़ह्रा (रज़ि॰)	–संपादन प्रभाग	17
क़त्ल कलबुर्गी का (कविता)	–सीताराम गुप्ता	19
विजय (कहानी)	–जीतसिंह चौहान	21
ग्रीन टी के फ़ायदे	–संपादन प्रभाग	25
अधिकार (कविता)	–महादेवी वर्मा	25
दुनिया के महानतम व्यक्तित्व हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)	–प्रो॰ मिर्ज़ा रफ़ीउद्दीन अहमद	26,27
ब्याजरहित वैकल्पिक आर्थिक प्रणाली	–डॉ॰ फ़रहत हुसैन	37
सार्थक प्रयास से बदलेगी भ्रष्ट व्यवस्था	–विद्या प्रकाश	41
हिन्दी काव्य में दलित चेतना	–प्रो॰ डॉ॰ संजय गडपायले	43
ग़रीबी उन्मूलन में ज़कात की भूमिका	–संपादन प्रभाग	45
अपराध के साये में मजबूर ज़िन्दगी	–डॉ॰ अनुराग श्रीवास्तव	47
छोटे ऊंट जैसा जानवर 'लामा' (बालवीथी)	–संपादन प्रभाग	49

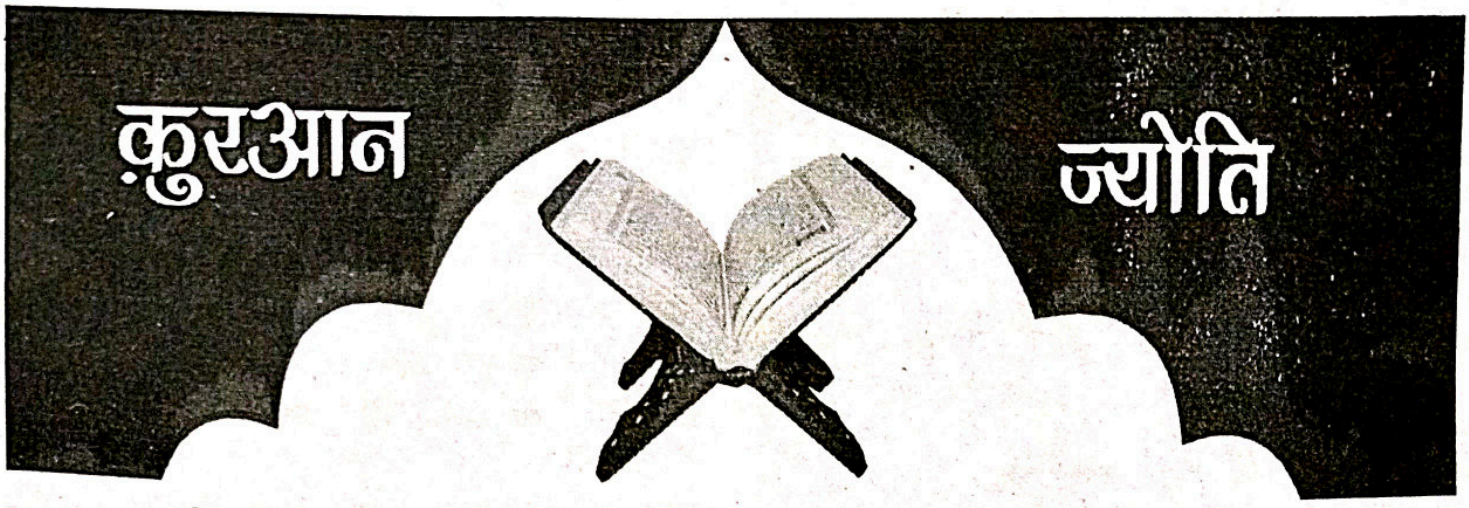

(97) ये अरब बद्दू कुफ़्र (इंकार) व निफ़ाक़ (कपटाचार) में अधिक कठोर हैं और इनके मामले में इस बात की संभावनाएं अधिक हैं कि उस दीन की सीमाओं को न जानें जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारा है ।[95] अल्लाह सब कुछ जानता है और तत्वदर्शी और सर्वज्ञ है ।

–क़ुरआन, 9 : 97

95. जैसा कि हम पहले उल्लेख कर चुके हैं, यहां अरब बद्दुओं से तात्पर्य वे देहाती और रेगिस्तानी स्थानों में रहने वाले अरब हैं जो मदीना के चारों ओर आबाद थे । ये लोग मदीना में एक सुदृढ़ और संगठित शक्ति को उठते देखकर पहले तो भयभीत हो गये । फिर इस्लाम और कुफ़्र के संघर्ष के दौरान में एक समय तक अवसरवाद और स्वार्थ-सिद्धि की रीति पर चलते रहे । फिर जब इस्लामी राज्य की सत्ता हिजाज़ और नज्द के एक बड़े भाग पर छा गयी और विरोधी क़बीलों का ज़ोर उसके मुक़ाबले में टूटने लगा, तो इन लोगों ने अपना हित इसी में देखा कि इस्लाम की परिधि में प्रवेश कर जाएं, लेकिन इनमें कम लोग ऐसे थे जो इस दीन को सच्चा दीन समझकर सच्चे दिल से ईमान लाए हों और निष्ठापूर्ण ढंग से उसके तक़ाज़ों को पूरा करने पर तैयार हों । अधिकतर बद्दुओं के लिए इस्लाम अपनाने की हैसियत ईमान और आस्था की नहीं, बल्कि मात्र स्वार्थ और नीति की थी । वे चाहते थे कि उनके हिस्से में केवल वे लाभ आ जाएं जो सत्ता में रहने वाले गिरोह का सदस्य बनने से प्राप्त हुआ करते हैं । मगर वे नैतिक बंधन जो इस्लाम उन पर लगाता था, वह नमाज़-रोज़े की पाबंदियां जो इस दीन को अपनाते ही उन पर लग जाती थीं, वह ज़कात जो विधिवत वसूल करने वालों के द्वारा उनके बाग़ों और उनके रेवड़ों से वुसूल की जाती थी, वह अनुशासन और व्यवस्था जिसके बंधन में वे अपने इतिहास में पहली बार कसे गये थे, वे जान व माल की क़ुरबानियां जो लुटमार की लड़ाइयों में नहीं, बल्कि अल्लाह के विशुद्ध रास्ते में जिहाद में आये दिन उनसे तलब की जा रही थीं, ये सारी चीज़ें उनको अत्यंत अप्रिय थीं और वे उनसे पीछा छुड़ाने के लिए हर तरह की चालबाज़ियां और बहानेबाज़ियां करते रहते थे । उनको इससे कोई मतलब न था कि सत्य क्या है और उनकी और तमाम इन्सानों की वास्तविक सफलता किस चीज़ में है । उन्हें जो कुछ भी दिलचस्पी थी वह अपने आर्थिक लाभ, अपने आराम, अपनी ज़मीनों, अपने ऊंटों और अपनी बकरियों और अपने ख़ेमे के आसपास की सीमित दुनिया से थी । इससे ऊपर किसी चीज़ के साथ वे उस तरह की श्रद्धा तो रख सकते थे जैसी पीरों और फ़क़ीरों से रखी जाती है कि ये उनके आगे नज़्र व नियाज़ पेश करें और वे उसके बदले रोज़गार की तरक़्क़ी, आफ़तों से बचाव और ऐसे ही दूसरे कामों के लिए उनको तावीज़-गंडे दें और उनके लिए दुआएं करें, लेकिन ऐसे ईमान और आस्था के लिए वे तैयार न थे जो उनके पूरे सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन को नैतिकता और विधानों की जकड़नों में कस दे और साथ ही एक विश्वव्यापी सुधारात्मक मिशन के लिए उनसे जान व माल की क़ुरबानियों की मांग भी करे ।

उनकी इसी दशा का यहां इस प्रकार उल्लेख किया गया है कि शहर वालों की अपेक्षा ये देहाती और रेगिस्तानी

(शेष पृष्ठ 11 पर)



स्त्रियों के विषय में वसीयत

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "स्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करो क्योंकि स्त्री पसली से पैदा की गयी है । और पसली का सबसे टेढ़ा भाग उसका ऊपरी भाग होता है । अगर तुम उसे सीधा करने की कोशिश करोगे, तो उसे तोड़कर रख दोगे और अगर उसे छोड़ दोगे तो वह बराबर टेढ़ी ही रहेगी । अत: औरतों के साथ अच्छा व्यवहार किया करो ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अम्र बिन अल-अहवस अल-जोसमी (रज़ि॰) से रिवायत है कि उन्होंने 'हज्जतुलविदा' (आप सल्ल॰ के अन्तिम हज) के अवसर पर नबी (सल्ल॰) को सुना । आपने अल्लाह तआला की स्तुति और तारीफ़ की और नसीहत की । इसके बाद आपने कहा : "सावधान ! स्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करो क्योंकि वे तुम्हारे पास क़ैद हैं । (स्त्री-संभोग) के सिवा तुम उनके किसी चीज़ के मालिक नहीं हो, किन्तु यह कि वे स्पष्ट अशोभनीय कर्म करें । और अगर वे ऐसा करें, तो उन्हें अपने बिस्तरों में तन्हा छोड़ दो और उन्हें मारो, ऐसी मार जो बहुत कष्टदायक न हो । फिर अगर वे तुम्हारी बात मान लें तो उनके विरुद्ध कोई राह न ढूंढ़ो । जान लो कि तुम्हारी स्त्रियों पर तुम्हारा हक़ है और तुम पर स्त्रियों का हक़ भी है । तुम्हारा उन पर यह हक़ है कि वे तुम्हारे बिस्तर पर किसी ऐसे व्यक्ति को न बिठाएं जिसे तुम पसन्द नहीं करते और न तुम्हारे घरों में किसी ऐसे व्यक्ति को आने की अनुमति दें जिसे तुम नापसन्द करते हो । जान लो कि तुम पर उनका यह हक़ भी है कि तुम उनके कपड़े और खाने के मामले में उनके साथ अच्छी रीति अपनाओ ।"

–तिरमिज़ी

● हज़रत मुआविया बिन हैदह (रज़ि॰) कहते हैं कि मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल, हममें से किसी की स्त्री का उस पर क्या हक़ है ? आपने कहा : "यह कि जब तुम खाओ, तो उसे भी खिलाओ और जब तुम कपड़े पहनो, तो उसे भी पहनाओ और उसके मुंह पर न मारो और न उससे यह कहो कि अल्लाह तुझे अच्छाई से वंचित रखे और न उसे अलग करो किन्तु इस तरह कि वह घर ही में रहे ।"

–अबू दाऊद

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "मोमिनों में ईमान की दृष्टि से सबसे पूर्ण वह है जो उनमें अख़्लाक़ की दुष्टि से सबसे अच्छा हो । और तुममें सबसे अच्छा वह है जो अपनी स्त्रियों के प्रति अच्छा हो ।"

–अबू दाऊद । अबू दाऊद ने इसे सहीह सनद के साथ रिवायत किया है ।

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "दुनिया एक सुख-सामग्री है और उसकी बेहतरीन सुख-सामग्री नेक स्त्री है ।" –मुस्लिम

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

कब आएंगे अच्छे दिन ?

क्या कोई बता सकता है कि अच्छे दिन आने का जो सब्ज़बाग़ भाजपा ने दिखाया था, वह ज़मीनी हक़ीक़त में कब परिवर्तित होगा ? सत्ताधारी दल के लोग और विभिन्न स्तरों के भाजपाई पहले यह कहते नहीं थकते थे कि 30 दिनों में ही ये अच्छे दिन नहीं आ सकते, इनके लिए तीन-छह महीने का वक़्त तो दीजिए । अब तो केन्द्र सरकार गठन के डेढ़ वर्ष से अधिक हो चुके हैं, मगर मुश्किलों और कठिनाई भरे दिनों के सिवा सरकार ने दिया क्या है ? लगातार बढ़ रही महंगाई ने जन-जीवन को आक्रांत कर रखा है । और सरकार है कि जनता को जबरन भाषण पर भाषण पिलाये जा रही है । नये भारत का सपना जनधन खाते भी नहीं पूरा कर पाए, डिजिटल भारत की कल्पना की जा रही है । आधार कार्ड को तमाम ख़ामियों के बावजूद थोपा जा रहा है, जब आधार सारे विश्व में विफल हो चुका है । इन्हीं विसंगतियों के चलते भाजपा दिल्ली के बाद बिहार में भी नहीं उठ पायी । उपचुनाव में रतलाम-झाबुआ सीट भी भाजपा ने खो दी । अब मोदी सरकार सातवें वेतन आयोग का झुनझुना बजा रही है । इस आयोग की जो सिफ़ारिशें आयी हैं, उससे अधिक आशंका है कि समाज में विभिन्न तबक़ों के बीच आयगत असमानता और बढ़ेगी । इससे न केवल विकास के रास्ते में मुश्किलें खड़ी होंगी, बल्कि जो लोग क्रयशक्ति की दृष्टि से हाशिए पर हैं, उन्हें जीवन-यापन में और दुश्वारियां पेश आएंगी । राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण की जो ताज़ा रिपोर्ट आयी है, उसने संकेत दिये हैं कि आयगत विसंगतियों के चलते क़रीब साढ़े चार करोड़ लोगों के और ग़रीबी रेखा के नीचे आने की आशंका है । दूसरी तरफ़ ज़्यादातर राज्य अपना ख़र्च अन्य आय के स्रोतों से भी उठाने में सक्षम नहीं हैं । ऐसे में यदि सातवें वेतन आयोग की सिफ़ारिशों के अनुरूप राज्य-कर्मचारियों को भी वेतन दिये जाते हैं तो राज्यों का ख़र्च और बढ़ जाएगा । ज़ाहिर है, ये सिफ़ारिशें यदि आय के बढ़िया उपादान नहीं खोजे गये, तो देश की अर्थव्यवस्था पर बोझ साबित होंगी । मोदी सरकार कहती है कि अपना सोना हमें दो, हम उसे गला कर बिस्कुट बना देंगे, फिर उसी बिस्कुट को ब्याज के रूप में खाना । जनता को यह सब बिल्कुल स्वीकार नहीं है । सवाल यह है कि सरकार की खोपड़ी में ऐसे प्लान आते कहां से हैं, जो घोर अयथार्थवादी और अव्यावहारिक हैं । क्या ऐसी योजनाओं और बातों से आमजन का पेट भरेगा ? पेट्रोल, डीज़ल के जो दाम घटे हैं, कुछ भाजपाई इसे सरकार की उपलब्धि बताकर जनता को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं । सच्चाई यह है कि ये दाम तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तेल के दाम घटने से ही संभव हो पाये हैं । लेकिन यहां भी सरकार ने दंडी मारी है और महंगाई की मार से कराहती जनता को जितनी राहत मिलनी चाहिए, उतनी राहत नहीं मिल पायी ! मतलब यह तेल के दाम जितने घटे हमारे देश में उतने कम नहीं हुए ! तेल कंपनियों को जान-बूझकर मालामाल किया जा रहा है और आम जनता को कंगाल ! मतदाताओं ने बढ़ती महंगाई और सब्सीडी पाने के लिए आधार जैसे जंजाल में जनता को फांसने की वजह से कांग्रेस को सत्ता से हटाया था । भाजपा ने इन समस्याओं से निजात दिलाने का

वादा भी किया था । सत्ता में आने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, वित्त मंत्री अरुण जेटली, वाणिज्य मंत्री निर्मला सीतारमण आदि ने इस ओर प्राथमिकता के साथ क़दम उठाने के बयान दिये थे, मगर अच्छे दिन न आने, न ही आ सके । फिर इन मोर्चों पर नाकामी को देखते हुए केन्द्र सरकार ने कांग्रेस की तर्ज़ पर पुराना राग अलापना शुरू कर दिया है । प्रधानमंत्री महोदय ने यह कहना शुरू कर दिया है कि जनता के दीर्घकालीन कल्याण के लिए थोड़ी कड़वी घूंट तो पीनी ही होगी । दूसरी ओर यह भी कहा जा रहा है कि मोदी सरकार की कोशिशों से देश का औद्योगिक उत्पादन बढ़ा है, लेकिन औद्योगिक उत्पादन बढ़ने का लाभ आम जन को कितना और किस रूप में मिल रहा है, कोई नहीं बता पा रहा है !

सच है कि आर्थिक शब्दजालों से आम जनता अनजान है । वह समझती है कि महंगाई दर घटने का मतलब उपभोक्ता सामानों का सस्ता होना है । लेकिन जब वह बाज़ार जाता है, तो पिछले महीने की तुलना में अधिक क़ीमत पर चीज़ें ख़रीद कर लाता है । तब उसे अस्लियत का पता चलता है । वास्तव में महंगाई घटना एक भ्रमित शब्दजाल है । इसकी सच्चाई ट्रेन की स्पीड के उदाहरण से समझा जा सकता है । माना कि पिछले साल अक्टूबर में खुदरा महंगाई के रेल 110 किमी की रफ़्तार से दौड़ रही थी । अब उसकी रफ़्तार धीमी होकर 65 किमी हो गयी है । इसी प्रकार थोक क़ीमतों की मुद्रास्फीति रेल पिछले साल 72 किमी की रफ़्तार से दौड़ रही थी । अब यह धीमी होकर 17 किमी की रफ़्तार से चल रही रही है । कहने का मतलब है कि महंगाई कम नहीं हुई है, बल्कि बढ़ने की रफ़्तार धीमी हुई । वर्तमान परिस्थितियों में धीमी रफ़्तार भी एक उपलब्धि है । वस्तुओं की लागत में वृद्धि के कारण महंगाई शून्य स्तर पर तो नहीं लायी जा सकती, किन्तु इसे न्यूनतम स्तर पर रखा जा सकता है । आज हालत यह है कि खाद्य पदार्थ ख़ासकर दाल, चावल, खाद्य तेल, फल और सब्ज़ियों के दाम बेतहाशा बढ़ रहे हैं । यहां तक कि वे मध्यम वर्ग के लोगों की पहुंच से भी बाहर हो रहे हैं । सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि सब्ज़ी के दाम ख़ासकर प्याज, टमाटर आदि के दाम बेतहाशा बढ़ गये हैं । किसानों को उससे कोई लाभ नहीं मिल रहा है । उधर उपभोक्ता पिस रहे हैं । जमाख़ोर और बिचौलिये चांदी काट रहे हैं और सरकार चुप्पी साधे बैठी है ! कुछ अर्थशास्त्री यह मानते हैं कि सकल घरेलू उत्पाद (जी॰डी॰पी॰) में वृद्धि आवश्यक है । अत: आम आदमी के काम में आने वाली रोज़मर्रा की वस्तुओं के उत्पादन में तेज़ी से वृद्धि ज़रूरी है । इस विचार से बहुत सहमत नहीं हुआ जा सकता, क्योंकि जनहित पहले है और हमारे देश लोकतांत्रिक देश है, जो 'जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा' के सिद्धांत पर चलता है । इसलिए ज़रूरी है कि महंगाई घटे और आम जन को राहत मिले । साथ ही जनता की समस्याओं को कम करने वाले क़दम उठाए जाएं । भारत जैसे ग़रीब और ग्रामीण समाज में काग़ज़ी कार्रवाइयों का प्रचलन बढ़ा दिया गया है, जो अनावश्यक परेशानियां बढ़ाने वाला है । प्रधानमंत्री ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश का आदर न करके पिछले कुछ महीने पहले सभी बैंकों को ईमेल के ज़रिए संदेश भेजकर निर्देश दिया था कि सभी जनधन खातों को 'आधार' से जोड़ा जाए । के॰वाई॰सी॰ के नियम भी जनता की परेशानी को बढ़ाने वाले हैं । बार-बार इसकी मांग भी अवांछित है । अंधाधुंध करारोपण का प्रचलन भी बढ़ा है, जिसके चलते भ्रष्टाचार भी बढ़ा है । निश्चय ही इन फ़ालतू काग़ज़ी कार्रवाई के कामों से जनसमस्याओं में ग़ैर-ज़रूरी बढ़त हुई है, जिसका ख़ामियाजा सत्ताधारियों को आने वाले समय में और भुगतना पड़ेगा । इससे देश की अर्थव्यवस्था कदापि नहीं सुधर सकती ।

हिन्दी दिवस

मासिक पत्रिका 'कान्ति' नवम्बर 2015 का प्राप्त हुआ । 'हिन्दी सम्मेलन बनाम हिन्दी दुर्दशा ।' लेखक सी०के० रहमानी का मैंने अध्ययन किया । लेखक के विचारों का पूर्णतया मैं समर्थक हूं ।

आज से 66 वर्ष पूर्व 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राष्ट्र भाषा एवं देवनागरी लिपि को राष्ट्रीय लिपि घोषित कर स्वतंत्र भारत की स्वतंत्रता का स्वर्णिम अध्ययन प्रारंभ किया गया था । हिन्दी है हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा डॉ० इक़बाल की इस पंक्ति में हिन्दी शब्द में निहित व्यापकता, गरिमा और सच्चाई स्पष्ट है । प्रत्येक वर्ष हिन्दी दिवस हिन्दी पखवाड़ा मनाये जाने तक ही सीमित है । डॉ० मैकाले ने भारतवर्ष में अंग्रेज़ी भाषा की इतनी अमिट छाप छोड़ दी जिसके कारण अधिकांश राज्यों में अंग्रेज़ी भाषा की इतनी अमिट छाप छोड़ दी, जिसके कारण अधिकांश राज्यों में अंग्रेज़ी भाषा का इतना जाल बिछं गया है चाहे कोई भी विभाग हो बीमा विभाग, शिक्षा विभाग, रेलवे विभाग में प्रपत्र अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से ही होते हैं । उनका प्रत्युत्तर भी अंग्रेज़ी भाषा में ही दिये जाते हैं ।

अंग्रेज़ी भाषा के कारण ही हमारे देश में पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति हावी होती जा रही है । इसी के कारण हमारा खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार, रीति-रिवाज, घर की सजावट आदि पर इसका असर पड़ रहा है । जन्म दिन पर मोमबत्ती बुझाने और केक काटने वालों को जान लेना चाहिए कि हमारा अभ्युदय दीपक जलाने से संभव है, बुझाने से तो भौतिकवाद के अज्ञान का सूत्रपात हो सकता है ।

हे भाषा का प्रदूषण ।
अब ताक रुक जा कुछ क्षण ।
जिससे थोड़ी देर तक लेंगे,
हम निज मातृभाषा हिन्दी का प्रयोग,
जिससे बढ़ेगी भारतीय सभ्यता ।
संस्कृति शिष्टाचार व सदाचार की आयु
हो रहा है वातावरण दूषित ।
जिससे हो रहे हैं लोग अनैतिक,
कर्तव्य विमुख ।
बढ़ रही है पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति,
जिससे होता नहीं नसीब ।
आध्यात्मिक ज्ञान,
मातृभाषा हिन्दी है ।
हमारे जीवन का मुख्य अंग
परन्तु इसका प्रयोग व्यावहारिक जीवन ।
में भूलता जा रहा है मानव
प्रतिदिन मिला रहा है ।
अंग्रेज़ी भाषा का ज़हरीला पदार्थ
काट रहा है अपने
जीवन के अंग को स्वयं ।
हो रहे यह सब मानव
अज्ञानता के कारण ।
जिसको देते आ रहे,
अर्द्ध शताब्दी से अधिक शरण ।
अब भी समय है
मानव उठो व जागो ।
स्वयं मातृभाषा हिन्दी का प्रयोग सांस्कृतिक करने को,
तभी हमारा वातावरण सुन्दर व सुशोभित होगा ।

रामस्वरूप झैवर
शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा (राज०)

भावनाएं

महान व्यक्तियों का सानिध्य प्रत्येक के भाग्य में नहीं होता है मगर उनके अपने व्यक्तिगत जीवन और उनके द्वारा किये गये कार्यों से या उनके द्वारा लिखे गये शब्दों से हम अपने आपको समृद्धि कर सकते हैं ।

जब कोई भावनाओं के आवेश में होता है तो उनके द्वारा बोले गये शब्दों में साहित्यिक लचक कम हो जाती है एवं भाव इही अश्रु के धारा की रूप में या लड़खड़ाते शब्दों में बाहर आते हैं । भाव हमारे सांसों में बसते हैं, इस प्रकार के भावों के लिए भाषा की शुद्धता का कोई महत्व नहीं

होता । महान लेखक रसकिन जी का कथन मुझे हमेशा याद दिलाता है–

"The highest thoughts are those least dependent on languge."

अत: मैं अपनी भाषा में अपने विचारों को पाठकों के समक्ष पहुंचाने की कोशिश कर रही हूं, मेरी साहित्यिक त्रुटियों को क्षमा करें । मुझे उस परमेश्वर पर अटूट विश्वास है कि मेरे ये विचार असंख्य लोगों तक पहुंचेंगे और संभवत: उन्हें उसे प्रेरणा मिलेगी ।

के॰ कविता

ए-68, हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड

कोरवा, अमेठी

बार-बार बधाई

आपके यशस्वी संपादन में प्रकाशित मासिक 'कान्ति' का अक्तूबर 2015 अंक मिला, एतदर्थ हार्दिक आभार । प्रस्तुत अंक में आपने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में मुसलमानों के योगदान का खुलासा करके अति आवश्यक एवं उल्लेखनीय कार्य किया है ।

'कान्ति' उदार वतनपरस्ती के साथ इन्सानियत एवं लोक मंगल की उज्ज्वल उजास विश्व भर मेमं प्रसारित करने में सफल-सार्थक होती रहे, यही आज युग को आश्य एवं अपेक्षा है । 'कान्ति' के महत्वपूर्ण संपादन प्रकाशन हेतु पत्रिका परिवार को बार-बार बधाई ।

भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

अकबरपुर, अम्बेडकरनगर (उ०प्र०)

ज्ञान-विज्ञान में योगदान

'कान्ति' हिन्दी पत्रिका का अक्तूबर 2015 विशेषांक बेहतरीन व उम्दा ढंग से प्रस्तुत किया है । मुस्लिम समाज के मनीषियों, चिंतकों, विचारकों और अनुशंधानकर्ताओं ने समय-समय पर उत्साहवर्धक एवं लाभप्रद योगदान दिया है । जिसे भारतीय समाज सदैव स्मरणीय रखेगा । इस अंक का यदि पाठकगण क्रमबद्धता से अध्ययन करते हैं तो डॉ॰ सुरेन्द्र ज्ञात जी ने पुनर्जागरण के आन्दोलन का इतिहास खंगालमारा है उन्होंने यूनानी और रसायनशास्त्र के विद्वानों के योगदान की महत्वपूर्ण बतलाया है । वारिस हुसैन का विचारणीय लेख पढ़ने से इस्लाम ध र्म की भूमिका और प्रेरणा के प्रभाव से हमारी बहुत उन्नति हुई है ।

इरफ़ान अहमद सिद्दीक़ी, अरविन्द कुमार सिंह, मौलाना सिराजुद्दीन नदवी, डॉ॰ मुहम्मद अहमद, प्रो॰ जे॰डी॰ बरनाल, जकरिया बर्क, हबीब अहमद सिद्दीक़ी, डॉ॰ फ़रहत हुसैन, मौलाना अक़ीदतुल्लाह क़ासिमी, अब्दुल क़ादिर लोन एवं कान्ति पत्रिका के संपादन विभाग ने विज्ञान कला, साहित्य, ज्योतिष, खगोलशास्त्र, भौतिकी ज्ञान एवं विभिन्न प्रकार के विषयों पर मुस्लिम समाज के अनुसंधान की बातें पठनीय एवं प्रेरणादायक लगीं ।

डॉ॰ जसवंत सिंह जनमेजय

कटवरिया सराय, नयी दिल्ली

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

www.kanti.in

प्रचार-प्रसार मुहिम के लिए विशेष छूट

मासिक कान्ति के प्रचार-प्रसार हेतु एक मुहिम शुरू की गयी है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति 'मासिक कान्ति' के 5 नये ख़रीदार बनाता है तो उसे मुफ़्त में एक और ख़रीदार बनाने की छूट होगी । इस अवसर से लाभ उठाने के लिए एक साथ एक हज़ार एक सौ रुपये (Rs. 1100/-) सीधे कान्ति के कार्यालय में जमा करने होंगे । प्रचार-प्रसार की यह मुहिम आगामी कुछ महीनों तक चलती रहेगी । मासिक कान्ति के पाठक इस विशेष छूट का लाभ उठाने के लिए अपने-अपने इलाक़ों में अपने सगे-संबंधियों एवं अन्य साथियों को प्रेरित कर सकते हैं । विस्तार से जानने के लिए सम्पर्क करें :

मैनेजर

मासिक कान्ति

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,

जामिया नगर, नई दिल्ली-110025

09818799223, 011-26949430

E-mail : kanti hindimonthly@yahoo.com

सुसंस्कार दीजिए

एक बार एक फ़क़ीर किसी गांव में आये और अपने प्रवचनों से लोगों की समस्याओं का समाधान भी करते थे। उनके पास एक व्यक्ति आया और बोला कि मैंने कड़ी मेहनत से धन संग्रह किया परन्तु मेरा बेटा उसे बेरहमी से उड़ा रहा है। फ़क़ीर ने कहा तुम्हारे पिता ने तुम्हारे लिए कितना धन छोड़ा था–उसने कहा मेरे पिता तो ग़रीब थे और कुछ नहीं छोड़ा। फिर भी तुम इतने धनवान हो और विचार करते हो कि तुम्हारा बेटा तुम्हारे बाद बुरे दिन नहीं कोटेगा। फ़क़ीर ने कहा बेटे के लिए धन संग्रह करने के स्थान पर उसे पढ़ाने और योग्य बनाने की ओर विचार करो। बाक़ी तो वह सब कुछ ठीक कर लेगा। सेठ की समझ में फ़क़ीर की बात आयी और बेटे को अच्छी से अच्छी तालीम देने का प्रबंध किया। जिससे वह बाद में एक सुसंस्कार और योग्य व्यक्ति बन गया।

क्या ही अच्छा हो यदि हम हमारे बच्चों का सुसंस्कारित व योग्य बनाने की दिशा में पहल करें तो बालक ग़लत दिशा में जाने से रुकेगा। अत: बच्चों को अच्छे स्कूलों में पढ़ाईये ताकि संपूर्ण समाज सुधर सके।

घेवरचन्द गोदीका

किशनपोल बाज़ार, जयपुर

चिन्तनीय

औरंगज़ेब रोड के साथ मुसलमान बादशाहों के नामों से नामांकित स्थानों को बदले जाने की पहल चल रही है। इस संबंध में मुस्लिम वर्ग के नाम पर उनकी असहमति अथवा विरोध के बावजूद कहीं-कहीं उनकी जानकारी को सहमति के रूप में दर्जा भी दिया जा रहा है।

यह सर्वविदित है कि मुस्लिम बादशाहों का भारत देश के प्रति अत्यधिक एवं महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जहां तक औरंगज़ेब बादशाह के क्रम में कहा जाए तो उनका एक फ़रमान आज भी महत्वपूर्ण माना जाता है कि "कुछ लोग द्वेष एवं वैमनस्यता के कारण बनारस और उसके आसपास के क्षेत्रों में कुछ ब्राह्मणों को परेशान कर रहे हैं, साथ ही मंदिरों की देखभाल करने वाले ब्राह्मणों को उनके पदों से हटाना भी चाहते हैं, जिससे उस संप्रदाय में असंतोष पैदा हो सकता है। इस शाही फ़रमान में बताया गया है कि भविष्य में ब्राह्मणों व अन्य हिन्दुओं को किसी प्रकार के अन्याय का सामना न करना पड़े। इस प्रकार के सभी शांतिपूर्वक अपने व्यवसाय में लगे रहें एवं हमारे अल्लाह द्वारा किये गये साम्राज्य में पूजा पाठ करते रहें।"

भारत शासन ही ने विभिन्न स्थलों को उनकी यादगार में नामांकित किया था। अत: उन्हें उसी अनुसार रहने दिया जाना चाहिए।

मलिक

नागपुर

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

इलाक़ों के रहने वाले अधिक निफ़ाक़ भरा रवैया रखते हैं और सत्या से इन्कार की स्थिति उनके भीतर अधिक पायी जाती है। फिर इसका कारण भी बता दिया है कि शहर के लोग तो ज्ञानियों और सत्य के मानने वालों की संगति से अधिक लाभ उठाकर कुछ दीन को और उसकी सीमाओं को जान भी लेते हैं, मगर ये बद्दू चूंकि सारी-सारी उम्र बिल्कुल एक आर्थिक पशु की तरह रात-दिन रोज़ी के चक्कर में ही पड़े रहते हैं और पशुवत जीवन की ज़रूरतों से ऊपर उठकर किसी चीज़ की ओर ध्यान देने का उन्हें अवसर ही नहीं मिलता, इसलिए दीन और उसकी मर्यादाओं से उनके अनभिज्ञ रहने की संभावनाएं अधिक हैं, आगे आयत 122 में उनके इस रोग का इलाज प्रस्तावित किया गया है।

यहां इस तथ्य की ओर भी इशारा कर देना अनुचित न होगा कि इन आयतों के उतरने से लगभग दो साल बाद हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) के आरंभिक ख़िलाफ़त-काल में इस्लाम से विमुख होने और ज़कात न देने का जो तूफ़ान उठ खड़ा हुआ था, उसके कारणों में एक बड़ा कारण यही था जिसका उल्लेख इन आयतों में किया गया है।

सहयोग राशि वृद्धि की सूचना

काग़ज़, छपाई और अन्य मदों के ख़र्चों में लगातार वृद्धि के कारण हमें 'कान्ति' (मासिक) की सहयोग राशि बढ़ाने के लिए विवश होना पड़ रहा है। अत: अगले अंक फ़रवरी 2016 ई॰ से सहयोग राशि प्रति कॉपी 25 रुपये और वार्षिक 270 रुपये होगी। आशा है कि पूर्व की भांति हमें आपका सहयोग मिलता रहेगा।

-प्रबंधक

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

HALAL

INVESTMENT & FINANCE

Eat Halal Earn Halal

HALAL

INVESTMENT & FINANCE

Best Concept For Bright Future & Best Economic Conditions

Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE INVESTMENT & FINANCE

Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99
Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,
N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)

Chairman
Janab Imammuddin Nihaluddin Shaikh

Contact Us : 9022665544, 9869641648

किसकी नक़ल करनी चाहिए व किसकी नहीं यह जानना ही अस्ली अक़लमन्दी है

■ सीताराम गुप्ता

उर्दू शायद 'इक़बाल' कहते हैं–

तक़्लीद की रविश से तो बेहतर है खुदकुशी,
रस्ता भी ढूंढ़ ख़िज्र का सौदा भी छोड़ दे ।

तक़्लीद अर्थात अनुसरण या किसी के पीछे चलने की आदम से तो आत्मघात कर लेना बेहतर है । पाश्चात्य विचारक एमर्सन ने भी कहा है कि ''इमिटेशन इज़ सूइसाइड'' अर्थात अनुकरण आत्मघात के समान है । वैसे अनुकरण अथवा नक़ल करना बुरी नहीं, क्योंकि यह एक स्वाभाविक क्रिया है । सीखने की प्रक्रिया में अनुकरण अथवा नक़ल का महत्वपूर्ण स्थान है । हम केवल स्वयं के अनुभवों अथवा प्रयोगों के द्वारा कितना सीख पाएंगे? बहुत कम । अनुकरण अथवा नक़ल द्वारा हम आसानी से दूसरों के अनुभवों का लाभ उठाकर अधिकाधिक सीख सकते हैं, लेकिन जीवन के हर क्षेत्र में नक़ल करना हमारे लिए अच्छा नहीं । अब परीक्षाओं को ही लीजिए । परीक्षाएं जीवन की कसौटी होती हैं, लेकिन आजकल परीक्षाओं के दौरान ही सबसे ज़्यादा नक़ल करना आम बात हो गयी है ।

अनुकरण अथवा नक़ल द्वारा हम आसानी से दूसरों के अनुभवों का लाभ उठाकर अधिकाधिक सीख सकते हैं, लेकिन जीवन के हर क्षेत्र में नक़ल करना हमारे लिए अच्छा नहीं । अब परीक्षाओं को ही लीजिए । परीक्षाएं जीवन की कसौटी होती हैं, लेकिन आजकल परीक्षाओं के दौरान ही सबसे ज़्यादा नक़ल करना आम बात हो गयी है ।

कमज़ोर विद्यार्थी पास होने के लिए तथा सामान्य विद्यार्थी अधिक अंक पाने के लिए नक़ल का सहारा लेने से नहीं चूकते । विद्यार्थी ही नहीं अन्य व्यक्ति भी नक़ल के मामले में उनसे कम नहीं । कोई किसी की दिनचर्या की नक़ल करने का प्रयास करता है तो कोई किसी की जीवनशैली की नक़ल करने का । कोई किसी के केश विन्यास की नक़ल कर रहा है तो कोई किसी के कपड़ों-जूतों की । अपराध, आतंक, भ्रष्टाचार व अनैतिक कार्यों में लिप्त लोग तो नक़ल के मामले में सबसे आगे पाये जाते हैं । मिर्ज़ा 'ग़ालिब' का एक शेर है–

हैं और भी दुनिया में सुख़नवर बहुत अच्छे,
कहते हैं कि 'ग़ालिब' का है अंदाज़े-बयां और ।

अर्थात दुनिया में और भी कई बहुत अच्छे सुखनवर (कवि) हैं लेकिन लोग कहते हैं कि 'ग़ालिब' का है अंदाज़े-बयां (वर्णन करने का तरीक़ा) और ही है । वह सबसे अलग है और यही अंदाज़े-बयां अथवा बयान का अनोखापन मिर्ज़ा 'ग़ालिब' को उर्दू का सबसे बड़ा शायर बना देता है । हर व्यक्ति के अन्दर एक सर्जक, एक कलाकार छिपा होता है लेकिन क्योंकि हम अपनी कलात्मकता को प्रकट करने अथवा अपने भावों को व्यक्त करने की अपनी व्यक्तिगत विशिष्ट शैली से अपरिचित होते हैं अत: हम हमेशा ही सामान्य बने रहते हैं । हम अपनी व्यक्तिगत विशिष्ट शैली का विकास करने के बजाय दूसरे सफल व्यक्तियों की नक़ल करने का ही अधिक प्रयास करते रहते हैं । कई बार दूसरे सफल व्यक्तियों की नक़ल करने का प्रयास ही हमारे स्वाभाविक विकास में सबसे बड़ी बाधा बन जाता है ।

प्रश्न उठता है कि नक़ल करना कहां तक उचित है ? यह अच्छी बात है अथवा ख़राब ? कम से कम परीक्षाओं में नक़ल करना तो ख़राब बात ही है । इसके बहुत ज़्यादा नुक़सान हैं । जब हम नक़ल करके पास होते हैं तो इसका सीधा-सा अर्थ है कि हममें योग्यता नहीं आती और इसका

परिणाम यह होता है कि जब हम वास्तविक जीवन में कर्म के क्षेत्र में उतरते हैं तो सफलता नहीं मिलती । हमारा अज्ञान न केवल मानसिक रूप से परेशान करता रहता है, अपितु व्यावहारिक रूप में भी बाधाएं खड़ी करता रहता है । बार-बार लोगों से सुनने को मिलता है कि रिश्वत देकर पास हुए थे या नक़ल करके । उस समय मन में आता है कि काश हमने नक़ल करने की बजाय ठीक से पढ़ाई कर ली होती लेकिन अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गयी खेत ।

फ़िल्मी दुनिया का तो हर वर्ग पर गहरा असर देखने को मिलता है । वहां की हर चीज़ हमारे यहां घर कर रही है । वहां की रियल लाइफ ही नहीं रियल लाइफ़ भी हमारे सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाल रही है । इसके अच्छे और बुरे दोनों तरह के प्रभाव सुसाइटी पर पड़ रहे हैं लेकिन अच्छे कम और बुरे ज़्यादा । फ़िल्मी दुनिया के नक़ल के प्रभाव से न केवल साहित्य, संस्कृति व कलाओं का घोर बाज़ारीकरण या व्यावसायी-करण हुआ है अपितु नैतिक मूल्यों, जीवन मूल्यों व संबंधों की गरिमा का भी ह्रास हुआ है । जहां फ़िल्मी दुनिया की नक़ल का दुष्प्रभाव नहीं है, वहां हर क्षेत्र में मौलिकता देखी जा सकती है । जीवन का एक महत्वपूर्ण तत्व है मौलिकता । वास्तव में नक़ल मौलिकता की शत्रु है । जीवन का कोई भी क्षेत्र क्यों न हो मौलिकता का बड़ा महत्व है । मौलिकता में नवोन्मेष होता है, सर्जनात्मकता होती है । जीवन में उन्नति के लिए नवोन्मेष तथा सर्जनात्मकता दोनों ही अनिवार्य हैं । अनुकरण अथवा नक़ल नवोन्मेष तथा सर्जनात्मकता दोनों की ही गला घोंट देते हैं । मौलिकता का ये अर्थ भी नहीं कि हम नयेपन के नाम पर ऐसी ऊलज़लूल हरकतें करें जो हमें संकट में डाल दें अथवा जिनसे समाज व राष्ट्र कमज़ोर हो । वही मौलिकता ग्राह्य हो सकती है जिससे हमारे विकास के साथ-साथ हमारी संस्कृति और सभ्यता का विकास भी संभव हो सके । मौलिकता में एक आकर्षण होता है ।

जो दूसरों की नक़ल करते हैं उनकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं देता और न उनका अनुकरण अथवा अनुसरण ही करता है । मौलिकता में न केवल एक आकर्षण होता है अपितु उसका अनुकरण भी किया जाता है । यदि आप में मौलिकता है तो लोग आपसे बात करेंगे, आपके बारे में जानना चाहेंगे । ये आपको भी अच्छा लगेगा कि लोग आप में रुचि ले रहे हैं । जो दूसरों के रहन-सहन, खानपान व कपड़ों-जूतों अथवा हेयर स्टाइल आदि की नक़ल करते हैं लोग उनको नक़लची बन्दर कहकर न केवल उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं अपितु उनसे दूर भी रहने का प्रयास करते हैं । यह हमारे लिएउ सबसे दुख की बात होती है यदि कोई हमारी उपेक्षा करता है अथवा हमारा मज़ाक़ उड़ाता है ।

जो दूसरों की नक़ल करते हैं उनकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं देता और न उनका अनुकरण अथवा अनुसरण ही करता है । मौलिकता में न केवल एक आकर्षण होता है अपितु उसका अनुकरण भी किया जाता है । यदि आप में मौलिकता है तो लोग आपसे बात करेंगे, आपके बारे में जानना चाहेंगे ।

नक़ल करना अच्छी बात है यदि हम आदर्श और अच्छी बातों की नक़ल करें । नक़ल अच्छे लोगों की करनी चाहिए । हर व्यक्ति, हर समाज व हर राष्ट्र में कुछ अच्छाइयां व कुछ बुराइयां होती हैं । अपने विरोधियों अथवा प्रतिद्वंद्वियों की भी अच्छाइयां हमारे हित में होगा । नक़ल उन्नति के लिए हो बेईमानी अथवा दिखावे के लिए नहीं ।

कहा गया है कि नक़ल के लिए भी अक़ल चाहिए । इसी में छुपा है नक़ल करने अथवा नक़ल न करने का पूरा दर्शन । सामान्यतः लोग इसका यह अर्थ निकालते हैं कि नक़ल, चीटिंग, पायरेसी अथवा बेईमानी के लिए अक़ल की ज़रूरत होती है । जो जितना अक़लमंद होता है वह उतनी ही अच्छी तरह से नक़ल, चीटिंग, पायरेसी अथवा बेईमानी करने में सक्षम होता है और लाभांवित भी । यह धारणा ही मिथ्या है । नक़ल के लिए भी अक़ल की ज़रूरत होती है इसका सीधा-सा अर्थ है कि जो जितना अक़लमंद होता है वह उतनी ही अच्छी तरह से जानता है कि किसकी नक़ल करनी चाहिए और कितनी तथा किसकी नक़ल नहीं करनी चाहिए और क्यों नहीं करनी चाहिए । जिसमें ऐसा विवेक उत्पन्न हो जाता है वह सही व्यक्ति अथवा सिद्धांत की नक़ल करता है न कि चीटिंग, पायरेसी अथवा बेईमानी करता है । जिसको सही नक़ल करने की अक़ल आ गयी वो न केवल अपने जीवन में सफलता प्राप्त करता है, अपितु वही सही मायनों में एक कलाकार भी है ।

दूसरों की ज़रूरतें पूरी करना

■ मजदी फ़तहुल सैयद

वर्तमान काल में जहां आपाधापी की वजह से हर जगह 'मैं, मैं' (अहंकार) की आवाज़ गूंज रही है । बेहतरीन दावत वह है जो दूसरे मुसलमान बहन-भाइयों के हितों और ज़रूरतों को पूरी करने की भरपूर कोशिश करती है । दूसरों की ज़रूरतों को पूरी करने से अंतत: दान-ख़ैरात की राहें खुलती हैं और मुसलमानों के बीच सहयोग और आपसी ज़िम्मेदारियों का एहसास व इरादा होता है ।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया, ''जिसने किसी मोमिन की सांसारिक परेशानियों में से कोई परेशानी दूर की, अल्लाह तआला क़यामत के दिन की तकलीफ़ों में से उसकी तकलीफ़ और परेशानी दूर कर देगा और अल्लाह उस वक़्त तक बन्दे की मदद करता रहता है, जब तक वह अपने भाई की मदद करता रहता है ।''

इमाम हसन बसरी (रह॰) फ़रमाते हैं कि मुझे ज़रूरतमंद मुसलमानों की कोई ज़रूरत पूरी करना एक हज़ार रक्अत नमाज़ पढ़ने से ज़्यादा महबूब है और किसी भाई की ज़रूरतों की पूर्ति, मुझे दो महीने के एतिकाफ़ से ज़्यादा पसन्दीदा है । जनाब मरदास बिन हदीर (रह॰) फ़रमाते हैं कि ऐ काश, मेरी दो जानें होतीं, एक जान अल्लाह की राह में जिहाद करती और दूसरी मुसलमानों की ज़रूरतों को पूरी करने की कोशिश करती ।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि किसी मुसलमान घराने की एक महीना, एक सप्ताह, या जितनी देर अल्लाह चाहे, भरण-पोषण करना और उनकी ज़रूरतों को पूरी करना मुझे बार-बार हज करने से ज़्यादा प्रिय है । अपने दीनी भाई को एक दिरहम भरी प्लेट का उपहार पेश करना मुझे अल्लाह की राह में दीनार ख़र्च करने से ज़्यादा महबूब है । हमारे सदाचारी पूर्वजों ने ज़रूरतमंदों की सहायता के महत्व को ख़ूब समझा और उसका ख़ूब एहतिमाम किया है । इस सिलसिले में निम्नलिखित उदाहरण यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

सदाचारी पूर्वजों में से कुछ लोग अपने भाई की मृत्यु के बाद चालीस वर्ष तक अपने उस भाई की औलाद की देखभाल करते रहे । प्रतिदिन उनके पास जाते और उन्हें अपने धन से अनुदान प्रदान करते । इस तरह दिवंगत बाप के बच्चे केवल बाप के अस्तित्व की कमी ही महसूस करते थे, अन्यथा उनकी सारी जीवन में उपयोग होने वाली वस्तुएं तो अपने बाप के जीवन में मिलने वाली सुविधाओं से भी ज़्यादा आसानी और फ़रावानी के साथ पूरी हो रही थीं । कुछ बुज़ुर्ग तो अपने भाई के घर जाकर यह भी पूछते थे, क्या तुम्हारे पास ज़रूरत के लिए तेल और नमक मौजूद है ? क्या कोई काम तो नहीं जो हम कर दें ?

जनाब मुहम्मद बिन इसहाक़ (रह॰) बयान करते हैं कि मदीना में कुछ लोग रहते थे, लेकिन उन्हें यह पता नहीं ाि कि उन्हें जीवन गुज़ारने के लिए ज़रूरी वस्तुएं कहां से प्राप्त हो रही हैं और कौन उपलब्ध करा रहा है । जब हज़रत ज़ैनुल आबिदीन बिन हुसैन (रह॰) की मृत्यु हो गयी, तो उन्हें जीवनयापन का सामान मिलना बन्द हो गया, तब उन्हें मालूम हुआ कि हज़रत ज़ैनुल आबिदीन (रह॰) ही उन्हें रात के समय उनकी ज़रूरतों का सामान पहुंचाया करते थे । जब इन्होंने उनकी मृत्यु के बाद ग़ुस्ल दिया, तो उनकी

कमर और कंधों पर, बेवाओं और यतीमों के घर के लिए ज़रूरी सामानों के थैले उठाकर ले जाने के निशान पड़े हुए थे ।

ग़ौर कीजिए कि यवे नुबूवत के घराने के सम्मानित व्यक्ति किन लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए मेहनत करते थे । निर्धनों, अनाथों और बेवाओं के लिए वे कितनी तकलीफ़ें उठाते थे । उनकी सारी चाहत व तड़प यह थी कि बेवाओं, अनाथों और ग़रीबों के दिल ख़ुशी से भर जाएं और वे यह कठिन काम केवल अल्लाह की प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए करते थे, क्योंकि ग़रीबों और मुहताजों को उनकी मृत्यु तक यह मालूम ही नहीं था कि उनकी ज़रूरतों को कौन पूरी कर रहा है ।

सदाचारी पूर्वजों में से कुछ लोग अपने भाई की मृत्यु के बाद चालीस वर्ष तक अपने उस भाई की औलाद की देखभाल करते रहे । प्रतिदिन उनके पास जाते और उन्हें अपने धन से अनुदान प्रदान करते । इस तरह दिवंगत बाप के बच्चे केवल बाप के अस्तित्व की कमी ही महसूस करते थे, अन्यथा उनकी सारी जीवन में उपयोग होने वाली वस्तुएं तो अपने बाप के जीवन में मिलने वाली सुविधाओं से भी ज़्यादा आसानी और फ़रावानी के साथ पूरी हो रही थीं । कुछ बुज़ुर्ग तो अपने भाई के घर जाकर यह भी पूछते थे, क्या तुम्हारे पास ज़रूरत के लिए तेल और नमक मौजूद है ? क्या कोई काम तो नहीं जो हम कर दें ?

एक मुस्लिम महिला को चाहिए कि दुर्दशाग्रस्त मुसलमान बहनों की ज़रूरतों का विशेष रूप से ध्यान रखें । तुम्हारी बहन की ज़रूरत, चाहे तुम्हारी ज़रूरत से ज़्यादा अहम हो या कम, तुम हर ज़रूरतमंद बहन की ज़रूरत के समय उसके काम आओ, इस फ़र्ज़ से कभी असावधान न रहो । ठीक उसी तरह जिस तरह तुम ख़ुद अपनी और अपनी ज़रूरतों से असावधान नहीं रहती, बल्कि तुम्हें चाहिए कि तुम उसे सवाल करने और अपनी ज़रूरत ज़ाहिर करने की नौबत ही न आने दो । अर्थात उसके सवाल करने से पहले ही उसकी ज़रूरत पूरी कर दो और फिर अपने इस अमल को भूल जाओ । उसकी ज़रूरत पूरी करके तुम्हें उस पर अपना कोई हक़ नहीं जताना चाहिए । किसी की ज़रूरत पूरी करके उससे बदले की उम्मीद या प्रशंसा की इच्छा भी न करना ।

जनाब इब्ने शबरमा (रह०) बड़े नेक बुज़ुर्ग थे । उन्होंने अपने एक भाई की बहुत बड़ी ज़रूरत पूरी कर दी, वह उनके लिए उपहार लेकर आये, तो इब्ने शबरमा ने पूछा यह क्या है ? उनके भाई ने कहा कि यह आपके लिए उपहार है, क्योंकि आपने मेरे साथ बड़ी नेकी की है । इस पर जनाब इब्ने शबरमा बोले, "अल्लाह तुम्हें शांति व सलामती से नवाज़े । अपना उपहार वापस ले लो, क्योंकि जब तुम अपने भाई से किसी ज़रूरत को पूरा करने का सवाल करो और वह तुम्हारी ज़रूरत पूरी करने की भरपूर कोशिश न करे तो तुम नमाज़ के लिए वुज़ू करो और उस पर चार तकबीरें पढ़कर उसकी गिनती मुर्दों में कर लो ।"

जब तुम अपनी बहनों की ज़रूरतें पूरी करके नेकी का काम करती हो, तो नेक काम की बदौलत अल्लाह तआला अपने बन्दे को बुरी मौत से बचा लेता है और जन्नत में उसका स्थान बुलन्द कर देता है ।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–

"नेक काम बुरी मौत से बचाते हैं ।" "नोक काम" विशिष्ट गुण और स्वस्थ चिंतन का नाम है, जो आदमी को लोगों की आंख का तारा बना देता है और उनके निकट वह एक सम्मानित व्यक्ति बन जाता है और उसके आसपास हैबत, प्रेम व मुहब्बत का घेरा स्थापित हो जाता है और वह सबके निकट एक दानशील और प्रिय व्यक्ति बन जाता है ।

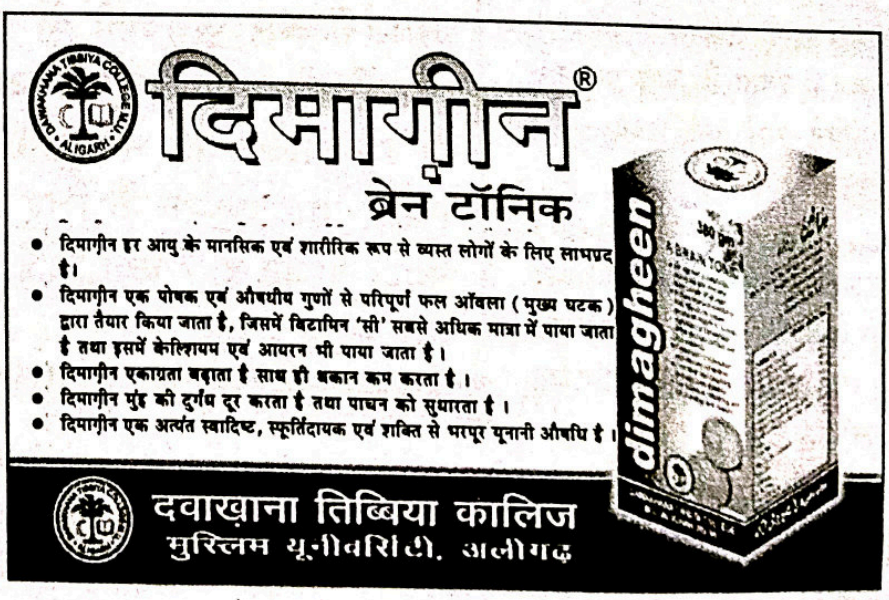

हज़रत फ़ातिमा ज़ह्रा (रज़ि०)

■ संपादन प्रभाग

बीबी फ़ातिमा (रज़ि०) प्यारे नबी (सल्ल०) की सबसे छोटी पुत्री थीं। आपका जन्म हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के नबी होने से लगभग पांच वर्ष पूर्व उस समय हुआ था, जब कुरैश के लोग काबा का नव-निर्माण कर रहे थे।

प्यारे रसूल (सल्ल०) को नन्हीं फ़ातिमा से बहुत प्यार था। जब आप घर आते तो दरवाज़े पर आकर सलाम करते। आपकी आवाज़ सुनते ही नन्हीं फ़ातिमा दौड़कर आतीं और अपने अब्बू जान की उंगली पकड़कर अन्दर ले जातीं। प्यारे अब्बू जान नन्हीं फ़ातिमा को अच्छी-अच्छी बातें सिखाते थे। नन्हीं फ़ातिमा भी अपने माता-पिता से बड़े अनोखे प्रश्न करती थीं, जिससे छोटी बच्ची की प्रतिभा और बुद्धिमता का भली-भांति अंदाज़ा होता है। एक बार उन्होंने अपनी अम्मी जान, हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) से पूछा, "अम्मी जान जिस अल्लाह ने हर चीज़ को पैदा किया है, क्या उसे हम देख सकते हैं ?"

अम्मी जान ने समझाया, "बेटी ! अगर हम किसी को अल्लाह का साझी न बनाएं, केवल उसी की इबादत करें और उसके बन्दों पर दया करें, तो क़ियामत के दिन हम अल्लाह के दर्शन कर सकेंगे।"

कभी-कभी अम्मी जान पूछतीं, "आज तुमने अब्बू जान से क्या-क्या सीखा ?" नन्हीं फ़ातिमा तुरन्त सब कुछ बता देतीं। घर में माता-पिता की बातों को ध्यानपूर्वक सुनतीं और तौर-तरीक़ों को ग़ौर से देखती रहतीं और स्वयं भी उसी को अपनाने की कोशिश करतीं। जो बात एक बार सुन लेतीं, कभी न भूलतीं।

बीबी फ़ातिमा बचपन से ही शान्त स्वभाव वाली और एकान्तप्रिय थीं। बचपन में भी घर से निकलना आपको पसन्द न था। दिखावे की बातों से आपको नफ़रत थी। एक बार किसी के विवाह में सम्मिलित होने के लिए अम्मी जान ने अच्छे-अच्छे कपड़े और गहने दिये। लेकिन उन्होंने पहनने से इन्कार कर दिया और साधारण कपड़े ही पहनकर गईं। जब आपके पिता, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह ने रसूल बनाया, तो आप पर अधर्मियों द्वारा तरह-तरह के अत्याचार होनें लगे। इससे आप बहुत दुखी होतीं और आपकी आंखों से आंसू छलक पड़ते। प्यारे रसूल (सल्ल०) आपको ढाडस बंधाते।

एक बार प्यारे नबी (सल्ल०) 'काबा' में नमाज़ पढ़ रहे थे। जब आप सजदे में गए, तो एक दुष्ट ने ऊंट की ओझड़ी आपकी गरदन पर रख दी उसके बोझ से नबी (सल्ल०) दब गये। दुष्ट और शरारती लोग देख-देखकर ठहाके मारने लगे। किसी ने घर पर सूचना दी, फ़तिमा दौड़ी-दौड़ी आईं और बड़ी मुश्किल से अब्बू जान के ऊपर से ओझड़ी हटाई और कहा, "दुष्टो, अल्लाह तुम्हें सज़ा देगा।

लगभग बीस वर्ष की अवस्था में हज़रत अली (रज़ि०) के साथ आपका विवाह हुआ। पति-पत्नी का जीवन प्रेमपूर्वक बीता। बीबी फ़ातिमा के पांच बच्चे पैदा हुए, जिनमें तीन पुत्र–हज़रत हसन (रज़ि०) हज़रत हुसैन (रज़ि०), और हज़रत मुहसिन (रज़ि०) थे और दो बेटियां हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) और हज़रत उम्मे-कुलसूम (रज़ि०) थीं।

हज़रत फ़ातिमा बड़ी परिश्रमी थीं। घर के काम-काज में किसी से सहायता तक न लेतीं। चक्की पीसते-पीसते हाथों में गट्टे पड़ गये थे। इसी प्रकार पानी की मशक उठाते-उठाते कन्धे और सीने पर निशान पड़ गये थे। हर समय काम-काज में व्यस्त रहने से कपड़े भी मैले हो-हो जाते थे। फिर भी वे यही कहा करतीं, "मैं अल्लाह और उसके रसूल से इस हाल में राज़ी और सन्तुष्ट हूं।"

इसीलिए आपको रज़िया की उपाधी मिली।

एक बार हज़रत अली (रज़ि०) ने हज़रत फ़ातिमा के बारे में कहा कि वे जन्नत का सुगंधित फूल थीं, जिसके मुरझा जाने अर्थात मृत्यु के बाद भी उसकी ख़ुशबू अब तक बसी हुई है। इसीलिए आपको 'अज़-ज़ह्रा' कहा जाता है। एक बार आप बीमार पड़ गईं। प्यारे रसूल (सल्ल०) देखने आए तो बोलीं, "दर्द से बेचैन हूं और भूख से निढाल। घर में खाने को कुछ भी नहीं है।"

प्यारे रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, "बेटी दुनिया की

कठिनाई से न घबराओ । तुम जन्नत की महिलाओं की सरदार हो ।

हज़रत फ़ातिमा ने अपनी संतान का पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा बड़ी सावधानी एवं अत्यन्त प्रेम से किया । एक बार आपकी बेटी हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) क़ुरआन का पाठ कर रही थीं । अनजाने में उनकी ओढ़नी सिर से उतर गयी । प्यारी अम्मी जान ने तुरन्त ओढ़नी सिर पर डाल दी और कहा, "बेटी ! अल्लाह की किताब का पाठ नंगे सिर नहीं करते ।"

एक बार हज़रत हुसैन (रज़ि॰) और हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) में लड़ाई हो गयी । प्यारी अम्मी जान ने दोनों बच्चों को क़ुरआन की आयतें पढ़कर सुनायी और फ़रमाया, "बच्चो अल्लाह तआला लड़ाई-झगड़े से नाराज़ हो जाता है ।" बच्चे फिर कभी नहीं लड़े ।

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) अल्लाह की याद और इबादत में हर समय लीन रहतीं । खाना बनाते समय तथा चक्की पीसते हुए या तो क़ुरआन की आयतें पढ़ती रहतीं या अल्लाह का ज़िक्र करती रहतीं । पूरी-पूरी रात इबादत में बिता देतीं । घर का काम-काज करते हुए भी वे अल्लाह की सच्ची बन्दगी करती रहीं । इसीलिए आपको 'बतूल' भी कहा जाता है ।

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) अत्यन्त दानशील और आज्ञाकारी थीं । हज़रत हसन (रज़ि॰) कहते हैं कि एक बार हमें एक वक़्त में फ़ाक़े के बाद खाना मिला । अब्बू जान, मैं और हुसैन खाना खा चुके थे । अम्मी जान ने रोटी हाथ में ली ही थीं कि एक भूखे व्यक्ति ने आवाज़ लगाई– "रसूल की पुत्री मैं दो वक़्त से भूखा हूं । मेरा पेट भर दो ।" अम्मी जान ने मुझसे कहा, 'खाना इस (भूखे) को दे दो । मुझे तो एक ही वक़्त का फ़ाक़ा है, जबकि इस व्यक्ति को दो वक़्त से भोजन नहीं मिला है ।

M/s. ABBAS SOAP FACTORY

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें ।

PRODUCTS

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 08100226137 (Mohd. Abbas)
M : 09831496237 (Mohd. Khalid)
M : 08981605834 (Mohd. Khalid)

कविता

क़त्ल कलबुर्गी का

मैंने
नहीं सुना था नाम
कलबुर्गी का
उनके क़त्ल से पहले
मैं नहीं जानता
क्या थी उनकी विचारधारा
जानना भी नहीं चाहता
लेकिन
एक बात निश्चित है
यूं ही नहीं कर देता
क़त्ल कोई किसी का
कोई न कोई ग़ैर-ज़रूरी चीज़
ज़रूर रही होगी कलबुर्गी में
कोई न कोई
ग़लत बात ज़रूर
करता होगा कलबुर्गी
और ग़लत बात ?
सच बोलने से बड़ी
ग़लत बात
कोई नहीं
कलबुर्गी ने भी
की होगी ग़लती
बोलने की सच
और अगर
ग़लती हो तो
सच बोलने की ही बेशक
मार देना गोली भी
नहीं लगता ग़ैरवाजिब
लेकिन
सभी ग़लत आदमियों को
मार दी जाए गोली
तो ये दुनिया पूरी की पूरी
हो जाए आदमियों से ख़ाली
और इसलिए
कभी-कभी
हो जाता है बहुत ज़रूरी
क़त्ल किसी कलबुर्गी का
किसी दाभोलकर का
बचाए रखने के लिए
कुछ बेजान मूर्तियां
मिट्टी-पत्थर की
चलाए रखने के लिए
दुकानदारी मज़हब की
कारोबार अंधविश्वास का ।

सीताराम गुप्ता
ए॰डी॰-106-सी, पीतमपुरा
दिल्ली-110034

कोलकाता में क़याम के लिए उमदा रिहाइश का मर्कज़

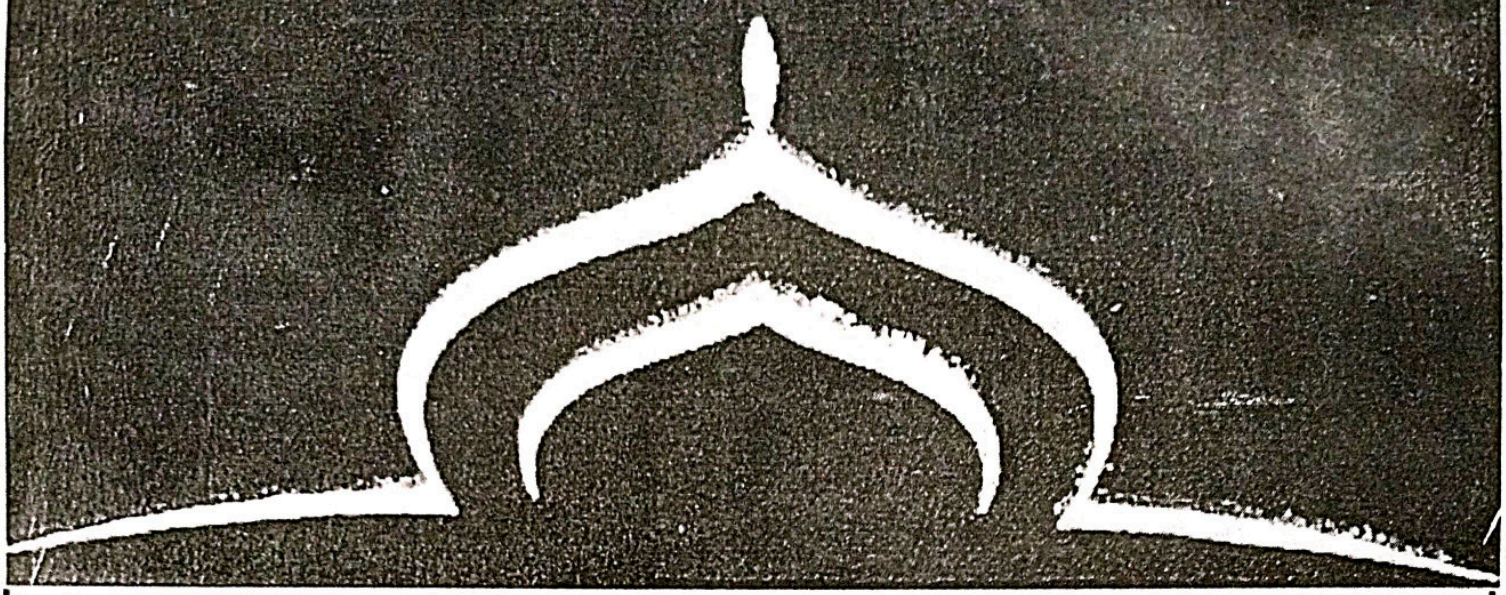

HOTEL AL-FALAH

Ph. : 033-22837901 , Cell : 9836015030
E-mail : hotelal_falah@hotmail.com

A/c Rooms & Non A/c Rooms
With
Attatch Bath Rooms

कोलकाता के शहर के दामन में (पार्क सर्कस) मुनासिब दामों पर रिहाइश का माकूल इन्तिज़ाम

एक बार ख़िदमत का मौक़ा ज़रूर दें।

83, Fazlul Haque Sarani, Kolkata - 700 017
WEST BENGAL

विजय

■ जीतसिंह चौहान

एक बस्ती है, शराबियों और बदमाश गुंडों की । पूरी बस्ती में झोंपड़ियां ही हैं । झोंपड़ियों में सभ्यता, सहानुभूति एवं मनुष्यत्व का अभाव है । झगड़ों, मदिरा तथा गंदगी की बदबू पूरी बस्ती में दानव और नीचों का बास है ।

पर, लाल गुदड़ी में ही पलते हैं !

बस्ती के मध्य भाग में एक महान शक्ति है । झोपड़ी का द्वारा? प्राची की ओर है । उसके एक कोने में एक टूटी-सी मेज़-कुर्सी पड़ी है । कुर्सी पर बैठी बालिका इतिहास पृष्ठों पर नयन गड़ाये अभ्यास कर रहीं है । अध्याय में सिकन्दर के विचारों में भारत को देखकर हुए द्वंद्व युद्ध का वर्णन है ।

''नील के किनारे खड़ा सिकन्दर सपनों में खोया है–सत्य, भारत क्या है ?... एक स्वर्ग है ! विचित्र दरेश है !... दिवस में अंशुमाली नीले नभ को जलाकर अस्त हो जाता है । रजनी में शुभ्र शशि अपनी स्निग्ध चांदनी से आकाश को शीतलता देता है । देश के ऊपर झिलमिलाते सितारे, चमचम चमकते जुगुनू !... सत्य ही भारत स्वर्ग है ।

देश का शिरोभूषण हिमालय श्वेत तुषार मुकुट धारण किये एक प्रहरी की भांति खड़ा है, सजग संतरी की तरह स्थिर भाव से । युद्ध सफल न होने देने में इसने सदैव ही अपनी टांग अड़ायी है । कलकल की धुन पर छमछम का गीत-संगीत सुनाती सरिताएं, हिम-नदियां, जिनमें जल नहीं, अमृत भरा है । जिनमें जीवन के श्वांस हैं, सभ्यता है, स्नेह है और सहानुभूति है ।

तालवन गर्व से माथा ऊंचा किये खड़े हैं । कहीं विराट वृक्ष अपनी स्नेह छाया से लोगों को प्राण दे रहा है । मद मातंग गिरि और वनों में विचरते स्वाधीन पशु-पक्षी !... चारों ओर शांति, अहिंसा और बंधुत्व !

भारत के लोग देवता हैं । इनकी देह में ब्रज-सी शक्ति है, नयन में सूर्य की दीप्ति है, वक्ष-स्थल में आंधी-सा साहस है और मुख पर शिशु सरल !... शौर्य को पराजित करने में आनंद !... सचमुच, भारत का हर मनुष्य मनुष्य नहीं, वरन देवता है ! हिन्दुस्तान के कण-कण में मनुष्यत्व के छक्षण हैं ।

याद आया, जब मैंने पुरु को क़ैद कर यह पूछा था कि अब तुम्हारे साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाए तो बड़ी निर्भिकता और निष्कम्पता से उसने उत्तर दिया था–जो एक राजा को दूसरे राजा के प्रति करना चाहिए । और हां जब सिपाहियों ने गुप्तचर का कार्य करते हुए चन्द्रगुप्त को क़ैद कर मेरे सामने प्रस्तुत किया, तब मैंने पूछा था, ''तालपत्र पर क्या लिख रहे थे युवक ?... सत्य बोलना, असत्य बोलने का परिणाम तुम स्वयं सोच लो ।'' तो उसने बड़े स्वाभिमान और गौरव से कहा था–सत्य बोलूंगा महाराजा, असत्य बोलना तो भारतीयों ने अभी तक सीखा नहीं । अहिंसा एवं सत्य तो हमारा कवच तथा मुकुट है ।... मैं सम्राट के साम्राज्य का सेना संचालन, ब्यूह रचना प्रणाली और सामरिक नियम आदि लिख रहा था, जो अब तक आपके सेनापति से सीखे । सचमुच भारतीय मानव देवता हैं !... और मैं इस पवित्र भूमि पर !...''

खट...खट...चूं...खट...चूं...चूं...

किवाड की आवाज़ ने पढ़ती हुई बालिका का ध्यान अपनी ओर खींच लिया । किवाड़ खोलकर एक आदमी अन्दर आया । बोला, ''नाश्ता तैयार है गीता ?''

''जी पिताजी, अभी लायी ।'' कहकर वह रसोई से खाना लाने चली गयी ।

''आज बहुत जल्दी में हैं पिता जी, क्या बात है ?'' परोस कर गीता ने पूछा ।

''सुना है धिंगु ने गुलजार का ख़ून कर दिया है ।''

''तो अब ?''

''अब मैं उसे...।''

''इससे क्या लाभ है पिता जी ?''

'लाभ !... मूर्ख, अपने सच्चे शागिर्द के रक्त का प्रतिकार और नाम की कीर्ति ।''

''नहीं, बदला नहीं, दुश्मनी मोल लोगे पिता जी । कीर्ति नहीं, अपकीर्ति मिलेगी । यदि आप ख्याति चाहते हैं तो

कीर्ति के कर्म करिये । विश्व में ऐसी कोई शक्ति नहीं जो उच्च, सरल, सत्य तथा कर्मण्य जीवन के प्रभाव का कम कर दे ।''

''क्या ईंट का जवाब पत्थर से देने के अतिरिक्त भी कोई उपाय है ?''

''हे पिता जी, और वह है क्षमा ।''

''क्षमा करना तो भीरूता है बेटी । इससे बैरी को बढ़ावा मिलता है ।''

''नहीं पिता जी, आपका विचार ग़लत है । क्षमा तो सत्य, भूत, भविष्य, तप और पवित्रता है । क्षमता ने ही संपूर्ण जगत को धारण कर रखा है ।''

''इस प्रकार के दार्शनिक दृष्टिकोण, पुस्तकीय ज्ञान और उपदेशों ने ही तो मेरी ये दशा कर रखी है बेटी ।''

''मुझे तो पुरुष उच्चाशा और उसकी हिंसा प्रवृति पर आश्चर्य होता है पिताजी ।... मानव दानव हो गया है । मनुष्य मनुष्य का शिकार बटेर की मानिंद करता है । बस, उसे खाता नहीं । वह क्यों नहीं खाता पिता जी ? क्या इस लिए कि वह स्वादिष्ट नहीं होता ?''

''स्वादिष्टता का प्रश्न नहीं, प्रथा का है बेटी ।''

''तो इसकी प्रथा को क्यों नहीं आरंभ कर देते आप ? इससे 'जंगली' लोगों में आपका नाम रोशन होगा ।''

''गीता !...''

''पिता जी आप लोग इतने रक्त पिपासु क्यों हैं ? और कोई प्रवृत्ति क्यों नहीं है आप लोगों के हृदय में ?''

''कौन-सी प्रवृत्ति ?''

''वही प्रवृत्ति जो बापू में थी, सहानुभूति, प्रेम और करुणा ।''

''मेरे पास ये सब प्रवृत्तियां हैं पर...।''

''असत्य ! स्वार्थ, परपीड़न, अविचार अत्याचार तथा दुर्भावनाओं के अतिरिक्त आपके पास कुछ भी नहीं है ।''

''जानता हूं बेटी, सब कुछ जानता हूं । मैं तुमसे कहीं अधिक किताबें घोट के पी चुका हूं । तुम अभी नादान हो । जीवन से अपरिचित हो । जब तुम जीवन-सीढ़ियों पर क़दम रखोगी तब तुम्हें अपने पिता की क्षीणता का भान स्वयं हो जाएगा ।''

अगर मैं नादान होती पिता जी, तो मेरे विचारों में भी आपकी तरह कूप मंडूपता होती ।''

''गीता बेटी, दो अक्षर पढ़ते ही तुम्हें दिमाग़ हो गया है । बाप को भी नेताओं के उपदेश देने लगी हो ।''

''पिताजी, मेरे उपदेश नेताओं के नहीं, मेरे हैं । ये उपदेश आपको बदल कर छोड़ेंगे । कल आप स्वयं ही कहोगे कि मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं, बल्कि परिस्थितियां मनुष्य की दास हैं ।''

''बेटी, तुम्हारी पढ़ाई से क्या लाभ ? पढ़कर मौलिकत्व नष्ट करने के अतिरिक्त तुम कुछ नहीं कर रही हो ।''

''आपके विचारानुसार तो सर्वाधिक मौलिक पशु-पक्षी समाज हुआ पिताजी ।''

''.....''

''पढ़ने से मौलिकत्व नष्ट होता है तो आपने क्यों इतना विद्या अप्रयास किया पिता जी ? मौलिकत्व तो दूषित वातावरण से नष्ट होता है पिता जी ।''

''तुम मेरा अपमान करने पर उतारू हो गीता बेटी ।''

''पिता जी, मैं आपका निरादर ! एक कन्या में अपने पिता का अपमान करने की सामर्थता कभी नहीं हो सकती, कभी नहीं ।''

''तुमने मुझे जानवरों की श्रेणी में गिना है, यह क्या कम निरादर है ?''

''क्षमा चाहती हूं पिता जी, मैंने तो उदाहरण दिया था न कि...।''

''तुम बंद करो यह बकवास...अकेली संतान हो, वह भी लड़की, नहीं तो...।'' कहकर वह बाहर चला गया ।

अपने आसपास के स्थानों का पक्का गुंडा हैं वह । सब उससे घबराते हैं । उसे देखा नहीं कि नानी मेरी । पेशा है–शराब बनाना तथा क्रय-विक्रय और ख़ून का धंदा करना । आधुनिक शिक्षा का महत्व कितना है, वह भली-भांति जानता है । एम०ए० है वह भी । कार्यालयों में मारा-मारा फिरा, नौकरी के लिए । जीवन रजकण से विलीन हो गया । भूख ने पत्नी को छीना । कोई सहारा न मिलने पर यह धंधा अपनाया उसने ।

संभव है असत्य, बेकारी, हिंसा, निर्दयता तथा दुर्व्यवहार की अधिकता ही एक दिन विश्व मुख की नींव बने ।

●●

इतिहास पृष्ठ बदलते ही गीता के कानों में आवाज़ आयी, 'गीता, क्या मैं आ सकता हूं ?''

''अवश्य, अवश्य मंगू । कहो, क्या बात है ?''

''कुछ विशेष नहीं ।... संभव है तुम्हें स्मरण हो कि

कुछ दिन पूर्व मैंने तुम्हारे सामने विवाह का प्रस्ताव रखा था ।''

''तो फिर ?''

''मैं तुम्हारे विचार जानना चाहूंगा ।''

तुम्हारा प्रस्ताव मुझे स्वीकार नहीं है मंगू ।''

''क्यों ?''

''क्षमा चाहती हूं, क्योंकि तुम्हारे जैसे असूरों से बंधकर मैं अपना जीवन नष्ट करना नहीं चाहती । फिर, मुझ में और तुममें धरती आकाश का अंतर है । विवाह सदैव समान व्यक्ति से किया जाना चाहिए ।''

''मैं कारण नहीं पूछना चाहता हूं । एक जवाब दो हां या न ।''

''मंगू ! तुमका पुरुष, नीच और ख़ूनी हो ।''

नीच और ख़ूनी तुम्हारे लिए नहीं, दूसरे के लिए हूं । मैं तो तुम्हारा प्रेमी हूं । मैं तुम से प्यार करता हूं । सहज सरल उत्तर दो विवाह करोगी या नहीं ।''

''प्रेम के भी प्रकार होते हैं मंगे । प्रेम और वासना में उतना ही अंतर है जितना कांच और कंचन में । तुम्हारा प्रेम वासना पूर्ण है । यह मुझे क़तई पसंद नहीं ।''

''लगता है तुम लकीर के फ़क़ीरों द्वारा बनाये गये क़ानूनों से डर गयी हो । क्योंकि तुम्हारी मां की मृत्यु...।''

''मंगू !''

''पर ध्यान रखो गीता, क़ानून घोड़े को पानी दिखा सकता है, पिला नहीं सकता ।''

''तुम्हारा दृष्टिकोण ग़लत है मंगू । क़ानून तो अधिकार देता है । क़ानून मनुष्य को अवसर देता है । अधिकार का उपयोग करने की शक्ति और अवसर से लाभ उठाने की सामर्थता यदि आदमी में न हो तो बात दूसरी है ।''

''ख़ैर छोड़ो क़ानून बानून । मैं इनके चक्कर में पड़ना नहीं चाहता ।''

मैं भी साफ़ कह देती हूं कि तुम्हारे साथ विवाह करने की अपेक्षा मैं एक अपंग, कुष्ठ रोगी बधिर से विवाह करना श्रेष्ठ समझती हूं ।... अधम निकल जा यहां से ।''

''तुम एक बार और सोच लो गीता ।... रोगी तुम्हें क्या दे सकता है ? भीख मांगोगी भीख ! ज़िन्दगी भर रोओगी, समझी ?''

''तू निकल जा नीच यहां से । निकल...।''

''ठीक है, मैं चला जाता हूं । पर ध्यान रहे, समय आने पर सब देख लूंगा । देखता हूं पहियां घूमता है या नहीं । मेरी ओर भी भाग्य-चक्र फिरता है या नहीं ।''

''पिता जी, आप इस धंधे को तिलांजली क्यों नहीं देते ?''

''तो भूखों मरूं बेटी ?''

''कुछ काम खोज लो ।''

''दो वर्षों तक तो दफ़्तरों की ख़ाक छानी है । फिर, अब तो दुनिया जान गयी है कि मैं कौन हूं ? क्या हूं ? कहां हूं ?''

''आप तो एम०ए० हैं, कोई कारोबार ही कर लो ।''

''इस कारोबार से अधिक जान किस कारोबार में है गीता बेटी ?''

''ऐसे कारोबार से क्या लाभ पिता जी, जिसमें प्रतिपल अपने जीवन का भय रहे । जिस दिन आप से कोई तगड़ा हो गया, उस दिन समझ लो टुकड़ा बरबाद ।''

''तुम सच कहती हो बेटी ।'' सोचकर उसने कहा ।

''इस जीने से क्या लाभ पिता जी ? ऐसे तो कुत्ता भी जीता है, बन्दे नाले में कीड़े भी अपनी ज़िन्दगी काटते हैं ।''

''तो क्या करूं बेटी ? अब तू ही बता, मुझे तो कुछ समझता ही नहीं ।''

''अगर आप यह सब छोड़ दें तो, आपको नौकरी मिल सकती है पिता जी ।''

''हां पिता जी, सेठ सुन्दरलाल के लड़के वीरेन्द्र ने आपको नौकरी देने का वादा किया है ।''

''मैं यह सब कुछ त्यागने को तैयार हूं बेटी ।''

''सच पिता जी !''

सच बेटी, मैं इस जीवन से उकता गया हूं । मगर क्या करूं, दूसरा कोई चारा भी तो नहीं है ।''

''इसमें आपका कोई दोष नहीं है पिता जी, यह सब समय और भाग्य का चक्कर है ।''

''हां बेटी, सच ही कहा तुमने । सच–समय बड़ा बलवान है ।''

''पिता जी !''

''बेटी !''

पिता पुत्री को गले लगा हर्षा उठा । चेहरे पर एक गर्वमयी मुस्कान उमर आयी, जो विजय का भास लिए थी ।''

विजय !... स्वयं की विजय स्वयं पर ।

طبقات دوزخ سات ہیں۔ سقر۔ سعیر۔ فطی۔ حطمہ۔ جحیم۔ جہنم اور ہاویہ۔

قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY

قادری قبض روجن ®

گیسٹک کے درد میں؟



بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے

زعفرانی تیل ®

گھٹیا کے درد میں؟



کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ۔ گھٹیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

پشتک چورن ®

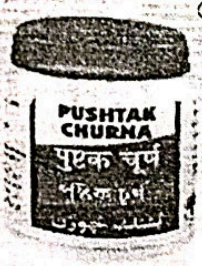

جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

ذیابطیش سی ®

شوگر کی کامیاب دوا



مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

زعفرانی مالٹ

ہر عضو کی کمزوری کے لئے



دماغ و اعصاب کے لئے محرک ہے۔ ضعف باہ کو دور کرتی ہے اور اعلیٰ درجہ کا ممسک بھی ہے۔ اس کے متواتر استعمال سے مردانہ قوت اور خواہش میں اضافہ ہوتا ہے۔

مقدار خوراک۔ صبح و شام۔ ۵ گرام دودھ کے ساتھ

کیسر فورٹ

قوت باہ کی طاقت میں اضافہ کے لئے



اگر سردی کی قوت میں مردانگی میں کمزوری واقع ہو تو اس کو ضعف باہ کہتے ہیں اور اگر وظیفہ زوجیت ادا کرنے کے بالکل قابل نہ ہو تو اس کو نامردی کہتے ہیں۔ ان کا تکالیف کو دور کرنے کے لئے ادارہ قادری دواخانہ نے قیمتی یونانی جڑی بوٹیوں کے مرکب سے ایک ایسی کیسر فورٹ ایجاد کر لی ہے جو اعصاب کو طاقت دے کر باہ کی طاقت کو بڑھاتی ہے اور کمزوری کو دور کرنے میں بہت ہی مفید ہے۔

مقدار خوراک روزانہ ایک گولی سوتے وقت دودھ کے ہمراہ

Qadri Dawakhana ™
B-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24
(O) S-152, S. A. Farooque Road. (Akra Road) Kolkata- 700 018
Ph. No. 2469-3173-2489-3539 (M) 9830009616 / 9674013169
Website : www.qadridawakhana.com
Email : qadridawakhana80@yahoo.co.in

STOCKIST

Qadimi Dawakhana
1397, Ballimaran, Delhi - 6
Ph : 011 23966395

M/s. Shifa Clinic
A-280, Moti Masjid Road,
P.O. Chikamberpur, Shaheed Nagar,
Ghaziabad, Ph : 0120 - 2621286

ग्रीन टी के फ़ायदे

ग्रीन टी स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है । ग्रीन टी पीने से न केवल सामान्य बीमारियां दूर रहती हैं बल्कि कैंसर और अल्जाइमर के मरीज़ों के लिए यह फ़ायदेमंद है । मोटापा कम करने में ग्रीन टी बहुत मदद करती है । ग्रीन टी पीने से आप तरोताज़ा महसूस करेंगे । ग्रीन टी को कैमिला साइनेंसिस की पत्तियों को सुखाकर तैयार किया जाता है ।

ग्रीन टी विटामिन सी, पालीफिनोल्स के अलावा अन्य एंटीआक्सीडेंट मौजूद होते हैं जो कि शरीर के फ्री रेडीकल्स को नष्ट कर इम्यून सिस्टम को मज़बूत बनाते हैं । दिन में तीन से चार कप ग्रीन टी शरीर में लगभग 300-400 मिग्रा पालीफिनोल पहुंचाती है, इससे शरीर में बीमारियां होने का ख़तरा कम होता है और शरीर रोग-मुक्त होता है ।

ग्रीन टी कैंसर के सेल को बढ़ने से रोकती है । ग्रीन टी मुंह के कैंसर के लिए बहुत ही फ़ायदेमंद है । इसके नियमित प्रयोग से पाचन नली और मूत्राशय के कैंसर की आशंका न के बराबर रहती है । इसलिए कैंसर के मरीज़ों के लिए ग्रीन टी अत्यंत उपयोगी है ।

ग्रीन टी पीने से मेटाबॉलिज़्म का स्तर बढ़ता है । जिसके कारण शरीर में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा संतुलित रहती है । कोलेस्ट्रॉल की मात्रा संतुलित रहने से रक्तचाप सामान्य रहता है । ग्रीन टी ख़ून को पतला बनाये रखती है जिससे ख़ून का थक्का नहीं बन पाता । ग्रीन टी पीने से हार्ट अटैक आशंका बहुत कम रहती है ।

मोटापा कम करने में ग्रीन टी बहुत मदद करती है । खाने के बाद एक कप ग्रीन टी पीने से पाचन की गति बढ़ जाती है । ग्रीन टी में मौजूद कैफीन से कैलोरी ख़र्च करने की गति भी बढ़ जाती है । इसके कारण वज़न कम होता है ।

ग्रीन टी मुंह के लिए बहुत फ़ायदेमंद होती है । ग्रीन टी में ऑक्सीकरण रोधी पॉलीफिनॉल पाया जाता है जो मुंह में उन तत्वों को ख़त्म कर देता है जो सांस संबंधी परेशानियों के लिए ज़िम्मेदार होते हैं ।

ग्रीन टी शरीर में ग्लूकोज़ की मात्रा को नियंत्रित करती है, और इंसुलिन दवा के हानिकारक प्रभावों को कम करने में भी मदद करती है । यूनीवर्सिटी ऑफ़ मेरिलैंड मेडिकल सेन्टर के अनुसार ग्रीन टी शरीर में न सिर्फ़ टाइम 1 साइबिटीज को कम करता है बल्कि इसके बुरे प्रभाव को भी कम करता है । ग्रीन टी पर हर रोज़ नये-नये शोध हो रहे हैं । ग्रीन टी कई रोगों के इलाज में उपयोगी साबित हुई है । ग्रीन टी अल्जाइमर, पार्किंसन, मल्टीपल स्कलेरोज, कैंसर, मौटापा और हृदय संबंधी रोगों के लिए फ़ायदेमंद है ।

कविता

अधिकार

वे मुस्काते फूल नहीं
जिनको आता है मुर्झाना
वे तारों के दीप नहीं
जिनको भाता है बुझ जाना ।
वे नीलम के मेघ नहीं
जिनको है घुल जाने की चाह
वह अनंत रितुराज नहीं
जिसने देखी जाने की राह ।
वे सूने से नयन नहीं
जिनमें बनते आंसू मोती
वह प्राणों की सेज नहीं
जिसमें बेसुध पीड़ा सोती ।
ऐसा तेरा लोक वेदना नहीं
नहीं जिसमें अवसाद
जलना जाना नहीं
नहीं जिसने जाना मिटने का स्वाद !
क्या अमरों का लोक मिलेगा
तेरी करुणा का उपहार
रहने दो हे देव ! अरे
यह मेरा मिटने का अकिार !

● महादेवी वर्मा

दुनिया के महानतम व्यक्तित्व

■ प्रो॰ मिर्ज़ा रफ़ीउद्दीन अहमद

[यह लेख 22 नवम्बर1988 ई॰ को हुसैनी सोसाइटी द्वारा आयोजित 'सीरत-सभा' में पढ़ा गया था ।]

दुनिया में ऐसे तो लाखों पैग़म्बर और सुधारक आते रहे और बड़े-बड़े इन्क़िलाब लाते रहे । लेकिन जो इन्क़िलाब मुहम्मद (सल्ल॰) के द्वारा आया और जिस प्रकार और जिस थोड़ी अवधि में आया उसका उदाहरण दुनिया के इतिहास में न मिला और न मिलेगा ।

आप (सल्ल॰) ने इस्लाम को जिस प्रकार लोगों के सामने प्रस्तुत किया वह दूसरे धर्मों से नितान्त भिन्न है । विशेष रूप से इन अर्थों में कि यह एक सामाजिक आन्दोलन था, जिसका उद्देश्य दुनिया में न्याय की स्थापना और शोषण को समाप्त करना था । इस आन्दोलन ने न केवल पूरी क़ौम का स्वभाव बदल दिया बल्कि समाज के आर्थिक, नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक ढांचे को पूर्णत: परिवर्तित कर दिया । यह एक चमत्कार था । ऐसा चमत्कार जिससे दुनिया के बड़े-बड़े दुद्धिमान और विचारक आश्चर्य में पड़ गये ।

आप (सल्ल॰) के समय अरब की हालत

छठी शताब्दी ई॰ के अन्तिम काल में अर्थात् 571 ई॰ में जब पैग़म्बर (सल्ल॰) अरब की धरती पर पधारे, उस समय अरब का समाज न केवल अज्ञानग्रस्त था । बल्कि पूर्णत: अज्ञानता में डूबा हुआ था । उसमें वे सारी बुरी मान्यताएं और अमानवीय व गंदे रीति-रिवाज प्रचलित थे, जो मानवता को पशुता के स्तर पर पहुंचा देते हैं । यह एक अंधकारमय युग था, जिसमें मानवता बर्बरता और पशुता के पैरों तले दम तोड़ रही थी ।

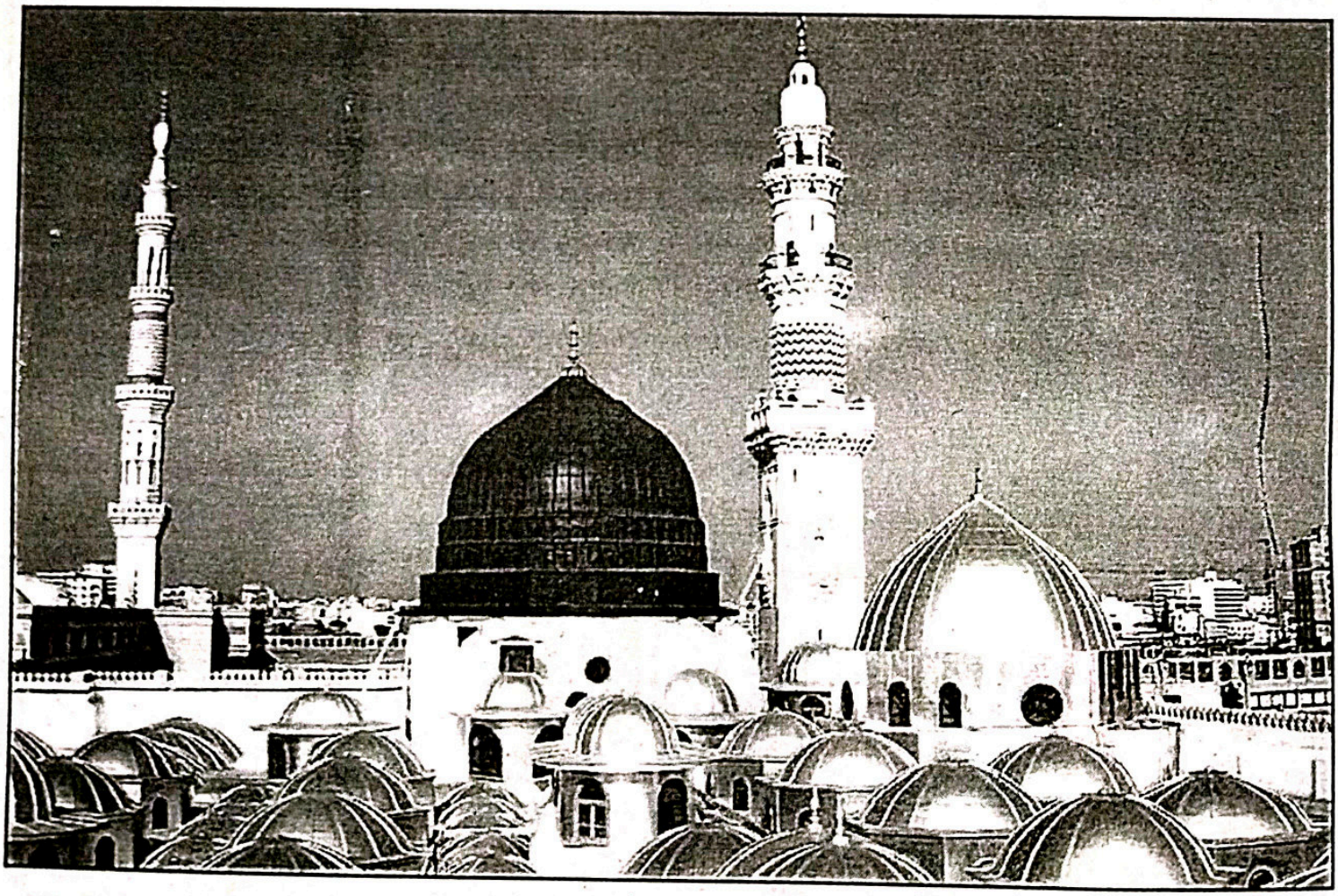

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

सामाजिक निरीक्षण

किसी भी समाज को समझने के लिए प्रसिद्ध समाजशास्त्री C. Wright Mills ने तीन बातें बताई हैं–

1. उस समाज का ढांचा किस प्रकार का है और उसके विभिन्न विभाग एक-दूसरे से किस प्रकार का संबंध रखते हैं ?

2. मानव-इतिहास में उस समाज का क्या स्थान है, और मानवता के स्वांगीण विकास का उसके यहां कया अर्थ समझा जाता है ?

3. और किस प्रकार के लोगों का उस समाज पर वर्चस्व है ?

अरब के समाज को इन तीनों प्रश्नों को लेकर देखा जाए तो यह उत्तर मिलेगा–

(1) यह क़बीलों में विभक्त और भेद-भाव पर आधारित समाज था, जिसमें समाज के विभिन्न अंग एक-दूसरे का शोषण करते थे । यही उनका पारस्परिक संबंध था और वे परस्पर एक-दूसरे के साथ विरोधात्मक नीति अपनाए हुए थे । काले-गोरे में भेद-भाव तथा ऊंच-नीच की धारणाएं व मान्यताएं उस समाज का विशिष्ट गुण बन चुकी थीं ।

(2) मानव इतिहास में उस समाज का स्थान अत्यन्त निम्न था । मानवता से यह समाज कोसों दूर था, क्योंकि यहां तो धन की पूजा होती थी और मानवता को धन के पैरों तले कुचला जाता था । मानवता के उत्थान की कोई संभावना उस समाज में शेष न थी ।

(3) जिन लोगों को उस समय समाज में सत्ता और अधिकार प्राप्त था वे धन के पुजारी, भोग-विलास में लिप्त, अहंकारी, ऊंच-नीच के ध्वजावाहक तथा शोषण के समर्थक और मानवता के उन्मूलक थे । सत्य की धारणा उनमें सिरे से न थी । वे असत्य और अनैतिकता की जीती-जागती तस्वीर थे । यह तो था उस समाज का एक समग्र विश्लेषण, जो समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण या सर्वेक्षण पर आधारित है । यह मैं इसलिए बता रहा हूं कि जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) दुनिया में पधारे तो आपके सामने कितनी बड़ी चुनौती थी । यह चुनौती थी एक बिगड़े हुए समाज को एक मानवतावादी समाज में बदलने की ।

युद्धप्रियता की यह हालत थी कि छोटी-से-छोटी बात पर लड़ना-मरना और एक-दूसरे का सिर काट लेना उनकी दृष्टि में एक मामूली बात थी ।

क़बीलों में बंटा होना

अरब समाज छोटे-छोटे क़बीलों में विभक्त था और वहां का हर क़बीला दूसरे क़बीले से और हर ख़ानदान दूसरे ख़ानदान से लड़ने में व्यस्त था । लड़ाइयों का सिलसिला वर्षों तक चलता रहता था । उन लड़ाइयों को इतिहासकार "अय्यामुल अरब" (अरब की विपत्ति के यादगार दिन) कहते हैं, जिनकी संख्या सैकड़ों से अधिक है । 'मीदानी नेशापुरी' (मृत्यु 518 हि०) ने "किताबुल अमसाल" में उनमें से 132 लड़ाइयों के नाम बताए हैं और कहा है कि– "गणन-कला पूर्णत: उनकी गणना करने में असफल है । इसलिए जो कुछ मैंने बयान किया है उसी पर मुझे सन्तोष करना पड़ा ।"

ये वे लड़ाइयां थीं, जो इस्लाम से चालीस-पचास वर्ष पूर्व लड़ी गयीं । क़बीलों के बीच मानव-मित्रता, समानता तथा एक क़ौम होने की भावना ही सिरे से नहीं पायी जाती थी । लड़ने-मरने और मारने को ही अज्ञानकाल का श्रेय और क़बीले की शान समझी जाती थी । हिंसा, निर्दयता, हत्या और लूट-मार की अत्यन्त बुरी घटनाएं घटित होती रहती थीं ।

मदिरापान

मदिरा-पान जो हर प्रकार की बुराइयों, अत्याचारों, दुष्कर्मों और व्यभिचार का मूल कारण है अरब के लोगों में उसका इतना अधिक रिवाज था कि हर घर शराबख़ाना बन गया था । शराब के रिवाज का अनुमान इससे हो सकता है कि अरबी भाषा में शराब के ढाई सौ नाम हैं । सभी घरों में शराब की बैठकें लगती थीं । घर की औरतें और बच्चे

साक़ी (शराब पिलाने वाले) बनते थे । साथ ही, उनके सामने व्यभिचारिणी (दुश्चरित्र) गाने वाली औरतें गाती-बजातीं और पुरुष उसी नशे की हालत में अश्लीलता की बातें करते । अज्ञानकाल का प्रसिद्ध कवि तुरफ़ा ने भी इन बैठकों में जो अश्लीलता होती थी, उसका चित्र अपनी रचनाओं में किया है ।

जुआबाज़ी

मदिरापान के साथ उनमें जुआ खेलने का भी रिवाज आम हो गया था । जुए में धन-दौलत हारने के पश्चात् लोग पत्नी तथा बच्चों तक पर दांव लगा देते थे । यह जुआबाज़ी और वह भी शराब की बदमस्ती की हालत में प्रायः मारपीट और लड़ाई पर समाप्त होती थी । अबस और ज़ियान की चालीस साल की लड़ाई घुड़दौड़ की जुआबाज़ी का परिणाम थी । धन की प्राप्ति और नाम कमाने के इस अवैध साधन से ख़ानदान-के-ख़ानदान बरबाद हो जाते थे ।

सूदख़ोरी

अरब के इस क़बायली समाज में हर प्रकार की बुराइयों के साथ मानवीय शोषण का एक घिनौनी सूरत सूदखोरी थी । सूद का आम तरीक़ा यह था कि एक निश्चित दर पर क़र्ज़ देते थे और उस मूलधन के लौटाने के लिए एक समय निश्चित कर देते थे । जब अवधि समाप्त हो जाती तो उसका तक़ाज़ा करते और अगर ऋणी उसका भुगतान नहीं कर सकता तो उस अवधि में बढ़ोत्तरी कर देते थे और उसके बदले सूद की दर बढ़ा देते थे । परन्तु उसका एक और अत्याचारी रूप भी था कि जब सूद के भुगतान की अवधि समाप्त हो चुकती और ऋणी ऋण का भुगतान नहीं कर पाता तो अवधि बढ़ा देते, परन्तु उसके बदले मूलधन में भी बढ़ोत्तरी की लेते, यहां तक कि कभी-कभी यह बढ़ोत्तरी दुगुनी-चौगुनी तक पहुंच जाती थी और इस प्रकार बढ़ोत्तरी होते-होते ऋणी की कुल सम्पत्ति डूब जाती । यह मामला अधिकतर ग़रीबों और किसानों के साथ होता था, जिसका परिणाम यह था कि ग़रीबों और किसानों का पूरा वर्ग कुछ धनवानों के हाथ बंधक था । अगर बंधक रखने वाले अपने बंधक रखे हुए माल एंव सामान को अवधि समाप्त होने तक नहीं छुड़ा सकता तो बंधक रखने वाला (महाजन) उसका मालिक हो जाता था । निर्धन लोग अपने धन-दौलत को ही नहीं, अपनी औरतों और बच्चों तक को भी बंधक रखवाते (बुख़ारी कअब बिन अशरफ़ द्वारा उल्लिखित)। तात्पर्य यह कि यह एक धन का पुजारी समाज था । दौलत के आगे मनुष्य का कोई मूल्य न था । दिखावा, भोग-विलास (ऐयाशी), कठोरता एवं क्रूरता का चलन आम था । पूंजीवाद का तो उस समय जन्म नहीं हुआ था, परन्तु क़बायली समाज पूंजीवाद के सभी प्रकार के अभिशापों से भरा हुआ था ।

लूटमार

अरब में प्रतिदिन की लूटमार ने यद्यपि क़बीले को लुटेरा और डाकू बना दिया था, फिर भी कुछ क़बीलों में इस प्रकार के कुछ विशेष जत्थे बन गये थे, जिन्होंने लूटमार को ही अपनी आजीविका का साधन और दिनचर्या बना लिया था । एक क़बीला दूसरे क़बीले के धन-दौलत, मवेशी ही नहीं, बाल-बच्चों तक पर डाका डालने के लिए तैयार रहते थे । व्यापारियों और सौदागरों के क़ाफ़िले (जत्थे) बिना किसी भारी इनाम के किसी मैदान से सही सलामत न गुज़र सकते थे । एक क़बीला दूसरे क़बीले की औरतों और बच्चों को पकड़कर किसी दूसरे के पास बेच दिया करते थे और मवेशियों को हांक कर ले जाते थे । सफल डाकू अपने कारनामों को कविताबद्ध करते और उसे गर्वपूर्वक पढ़ते थे ।

चोरी

डकैती के अतिरिक्त परिस्थिति से मजबूर होकर देहातियों (बद्दुओं) में चोरी का भी चलन था । विभिन्न क़बीलों के ऐसे बहादुर जो क़बीलों में अपना कोई विशिष्ट स्थान रखते थे, वे विशेषकर चोरी का धंधा अपना लेते थे और इसकी चर्चा गर्व के साथ करते थे ।

बलात्कार और अश्लीलता

बलात्कार और दुराचार आम था । इब्ने अब्बास (रज़ि॰) ने बयान किया है कि अज्ञानकाल में लोग यद्यपि खुलेआम बलात्कार को जायज़ नहीं समझते थे, परन्तु छिपकर करने में कोई हर्ज नहीं समझते थे और खुल्लम-खुल्ला करना तो कमीनापन है लेकिन छिपकर करने में कोई हर्ज नहीं ।

(तफ़सीर तबरी)

व्यभिचारिणी अपने घरों के सामने झंडियां लगाकर

बैठती थीं और उनकी संतान वैध और हलाल संतान के बराबर समझी जाती थीं । बड़े-बड़े रईस अपने घर की लौंडियों (दासियों) को आदेश देते थे कि व्यभिचार के द्वारा कहीं से धन कमाकर लायें और उनकी भेंट चढ़ाएं । इन व्यभिचारों पर कविता में प्रशंसा के पुल बांधे जाते थे ।

निर्लज्जता

काबा के हज में हज़ारों आदमी एकत्र होते, लेकिन (कुरैश के सिवा) शेष सभी लोग बिल्कुल नंगे होकर काबे का चक्कर लगाते । औरतें जब नंगी होकर चक्कर लगाती तो लोगों से कहतीं कि हमको कोई इतना कपड़ा दे दो, जिससे गुप्तांगों को ढांका जा सकता ।

महिलाओं पर अत्याचार

सौतेली माताओं पर अधिकार जमाकर उसे पत्नी बना लेते थे । महिलाओं को विरासत में हिस्सा नहीं मिलता था । निकाह की कोई सीमा नहीं थी । तलाक़ के लिए कोई मुद्दत और इद्दत न थी अर्थात जब तक पति चाहे औरत न पति के पास रह सकती थी न किसी और से विवाह कर सकती थी । (सीरतुन्नबी, लेखक सुलेमान नदवी भाग-4)

बेटी की हत्या

बेटी की हत्या का रिवाज आम था लड़की पैदा होती तो उसको मैदान में ले जाकर ज़मीन में ज़िन्दा गाड़ देते थे । एक व्यक्ति ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास आकर बताया था कि उसने अपने हाथ से आठ लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ दिया था । लोग लड़कियों के अस्तित्व को संकट और मुसीबत समझते थे । माताएं स्वयं अपनी लड़कियों को क़ुरबानी के लिए हवाले कर देती थीं, और अरबों के लिए किसी को दामाद बनाकर लाना लज्जाजनक था ।

गुलामी

अरब के भेद-भाव वाले समाज का एक बहुत बड़ा अभिषाप गुलामी का रिवाज (दास-प्रथा) था । गुलाम ख़रीदे और बेचे जाते थे और उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जाता था ।

रसूल (सल्ल०) ने उन परिस्थितियों का सामना किस प्रकार किया ?

यह था वह समाज, जो एक चुनौती के रूप में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को मिला; एक रूढ़िवादी समाज, जो अपने ग़लत व पुराने रस्मों को छोड़ने को तैयार न था । चालीस साल की उम्र (अवस्था) के बाद आप (सल्ल०) ने जब नबी होने का एलान किया तो उस रूढ़िवादिता को चुनौती दी और एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया । अल्लाह फ़रमाता है–

"और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो उतारा है उसके पास और रसूल (सल्ल०) के पास आओ, तो कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादा को जिस तरीक़े पर पाया है, वही हमारे लिए काफ़ी है । क्या उनके बाप-दादा न कुछ जानते हों और न सीधे रास्ते पर हों तब भी वे उन्हीं का अनुसरण करेंगे ?" (क़ुरआन, 2 : 170)

सत्य और असत्य की जो लड़ाई अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को करनी पड़ी वह वास्तव में इसी रूढ़िवादिता और आधुनिकता की लड़ाई थी । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने एक रूढ़िवादी, जीर्ण-शीर्ण, न्यायहीन, अमानवीय, शोषण-प्रिय और असमानतापूर्ण समाज के स्थान पर एक आधुनिक, न्यायसंगत, मानवतावादी, समतावादी और शोषण-मुक्त समाज का ढांचा प्रस्तुत किया । आप (सल्ल०) ने उस अंधकार युग के एक-एक अमानवीय तथा अन्यायपूर्ण रस्म और रिवाज को चुनौती दी और उसे बदलकर रख दिया । यह एक चमत्कार नहीं तो और क्या है कि एक लड़ाकू समाज एक सदाचार प्रिय समाज बन गया, जिसमें मनुष्य की जान को एक मर्यादा एवं प्रतिष्ठा प्राप्त हुई और हत्या, लूट-मार छीन-झपट का स्थान शांति, समझौता और सहयोग ने ले लिया ।

क़बीला बन्दी

जो समाज क़बीलों में बंटा हुआ था उसमें अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने एक ऐसी बराबरी मानव मित्रता की रूह फूंकी दी कि सारे भेद-भाव मिट गये । गोरे-काले में भेद, क़बीलों के भेद, दास और स्वतंत्र में भेद सब समाप्त हो गये । पूरा समाज एक क़ौम और पूरी क़ौम एक लोहे की दीवार बन गया । जातीय भेद-भाव को मिटाने का यह एक अद्भुत उदाहरण है । भारत में गांधी जी ने दलितों व पिछड़े लोगों का ऊंची जाति वालों के साथ सामाजिक समता और बराबरी दिलाने की असाधारण कोशिश की यहां तक कि

स्वयं भी मैला ढोनेवालों की बस्ती में रहे । 1955 ई॰ में छूआ-छूत के विरुद्ध क़ानून भी पास हुआ, परन्तु छूआ-छूत अभी तक बाक़ी है । अब भी उन्हें मन्दिरों में जाने से रोका जाता है और उन्हें सामाजिक बराबरी अब तक नहीं मिल सकी है ।

समानता

असमानता को अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने इस प्रकार समाप्त किया कि जो समाज धन का पुजारी था और जिसमें मनुष्य की प्रतिष्ठा उसकी दौलत और शक्ति से आंकी जाती थी वहां आप (सल्ल॰) ने लोगों के दिलों में यह विश्वास बैठा दिया कि समाज में बड़ा वह नहीं है, जिसके पास दौलत अधिक है, बल्कि बड़ा वह है जिसके दिल में सबसे अधिक अल्लाह का भय (तक़वा) है । ईशभय आत्मा की उस अनुभूति का नाम है, जिसके आधार पर हर काम में ख़ुदा के आदेशानुसार व्यवहार करने की अत्यधिक श्रद्धा और उसके विरोध से अत्यधिक घृणा उत्पन्न होती है । सूरह अल-मुल्क में अल्लाह फ़रमाता है– "और जो लोग अनदेखे अपने परवरदिगार (पालनवर्ता प्रभु) से डरते हैं उनके लिए इनाम और अच्छा बदला है ।" जब यह निश्चित हो गया कि जिसमें सबसे अधिक ईश्वर का भय है वहीं सबसे बड़ा है तो फिर मनुष्य की प्रतिष्ठा उसके माल व दौलत से नहीं, बल्कि उसके आचरण और व्यवहार से होने लगी । समाज का ढांचा ही बदल गया । प्रसिद्ध समाजशास्त्री Alex Inkeles ने मानव की महानता में विश्वास और न्याय के बंटवारे की आधुनिकता को प्रमुख अंग बताया है । इस प्रकार इस्लाम ने एक आधुनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया और मात्र प्रस्तुत ही नहीं किया बल्कि उसे व्यावहारिकता का रूप देकर दिखा दिया ।

शराब बन्दी

ऊपर उल्लेख हो चुका है कि शराब किस प्रकार अरबवासियों की रग-रग में घुस गया था । जब क़ुरआन पाक (5 : 90) की यह आयत अवतरित हुई–

"ऐ ईमान वालो ! शराब, जुआ, बुत और पांसे नापाक और शैतान के काम हैं तो इनसे बचो ताकि सफलता प्राप्त हो ।"

तो उस समय भी शराब का रिवाज जारी था । सहीह बुख़ारी में स्वयं हज़रत अनस (रज़ि॰) की ज़ुबानी रिवायत है कि "मैं अबू उबैदा और उबई इब्ने काब और अबू तलहा को शराब पिला रहा था कि अचानक एक व्यक्ति ने आकर कहा कि शराब हराम (निषिद्ध) हो गयी । उस सभा में हाफ़िज़ इब्ने हजर के कथनानुसार ग्यारह व्यक्ति थे और नशे में झूम रहे थे (फ़तहुल बारी, भाग-10) तथापि ज्यों ही यह आवाज़ आई कि रसूल (सल्ल॰) ने शराब को हराम घोषित कर दिया है तो किसी ने पूछा तक नहीं और एकाएक शराब के मटके और प्याले तोड़ डाले । यह न केवल अबू तलहा के घर का हाल था, बल्कि सारे मदीना के गली-कूचों में शराब की नालियां बह गयीं । बुख़ारी में है, मदीना की गलियों में शराब बहती फिरती थीं । हम जानते हैं कि शराब का आकर्षण शराबी के लिए कितना अधिक होता है । लेकिन वहां दूसरा ही हाल हो गया । घड़े तोड़कर नालियों में बहाए गये और फिर कभी शराब को हाथ न लगाया गया । उस समय न तो कोई नशाबन्दी का अफ़सर (Prohibition Officer) होता था । न कोई सरकारी क़ानून था न पुलिस थी जा उसे लागू करती, लेकिन यह केवल अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के व्यक्तित्व का प्रभाव और मानवीय आचरण को बदलने की शक्ति थी कि एक पूरा समाज मदिरापान को छोड़कर उसे निषिद्ध घोषित कर दिया यह एक चमत्कार नहीं तो क्या था ?

जुआ

इसी प्रकार जुआ, सूदख़ोरी, व्यभिचार, महिलाओं पर अत्याचार लड़कियों को जीवित गाड़ देना, लूट-मार, हत्या और दासों पर अत्याचार जैसे अनेक अनैतिक कुकृत्य बन्द हो गये ।

सूद-ब्याज

जो लेग सूद-दर-सूद खाते थे उन्होंने सूद से इतना परहेज़ कर लिया कि अगर किसी को ऋण दिया तो उसकी दीवार के छाए में भी न बैठते थे कि कहीं यह ऋण के बदले लाभ उठाना न हो जाए, यह एक चमत्कार नहीं तो क्या है कि कहीं तो ऋणी का माल जायदाद यहां तक कि बाल-बच्चे तक ज़ब्त कर लिए जाते थे और कहां लोग ऋणी को ऋण देकर उससे दूर भागने लगे कि कहीं अनजाने में ऋण के बदले कोई लाभ न उठा लें । यह बात स्पष्ट

हो कि उस समय न कोई सरकार थी न नियम क़ानून न पुलिस जिसने सूद को निषिद्ध और हराम घोषित किया हो ।

ग़ुलामी

ग़ुलामी के अमानवीय रिवाज को धीरे-धीरे समाप्त कर दिया गया । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के आन्दोलन ने ग़ुलामों की स्वतंत्रता और उनके साथ उत्तम व्यवहार को एक अभिन्न अंग बना लिया । आप (सल्ल॰) ने कहा–

"जिसको ख़ुदा ने तुम्हारे अधीन कर दिया उसको वह खिलाओ जो तुम स्वयं खाते हो, और वही वस्त्र दो जो तुम स्वयं पहनते हो, और उसको इतना काम न दे दो जो उस पर भारी हो जाए और जो भारी काम दे तो उसके काम को पूरा करने में ख़ुद भी साथ मिलकर सहायता करो । (सहीह बुख़ारी, भाग-2) आप (सल्ल॰) के इस आदेश पर जब सहाबा (साथी) रज़ि॰ ने चलना आरंभ कर दिया तो यह भेद करना कठिन हो गया कि मालिक कौन है और दास कौन (सहीह बुख़ारी, भाग-2) इस प्रकार ग़ुलामी वास्तव में समाप्त हो गयी । इस सुधार के पीछे भी कोई सरकारी या राजनीतिक शक्ति या पुलिस या फ़ौज या नियम-क़ानून न था । यह सब चमत्कार था रसूल (सल्ल॰) के महानतम व्यक्तित्व का । रंग और वंश का भेद इस प्रकार समाप्त हो गया कि वही अरब जो काले लोगों से घृणा करते थे उन्हीं अरबों में एक हब्शी ग़ुलाम हज़रत बिलाल (रज़ि॰) मस्जिदे नबवी के मुअज़्ज़िन (अज़ान देने वाले) की हैसियत में प्रतिष्ठित हुए और उन्हें दुनिया में एक उच्च स्थान प्रदान किया गया ।

इक़बाल के शब्दों में–

एक ही सफ़ में खड़े हो गये महमूद व अयाज़
न कोई बन्दा रहा और न कोई बन्दा नवाज़ ।
बन्दा व साहेब व मुहताज व ग़नी एक हुए,
तेरी सरकार में पहुंचे तो सभी एक हुए ।

आर्थिक बदलाव

इस प्रकार समाज का आर्थिक ढांचा ऐसा बदला कि सूदख़ोरी और ग़ुलामी का अमानवीय रिवाज समाप्त हो गया । उत्तम ऋण ने सूदख़ोरी का स्थान ले लिया और पूंजीवादी मानसिकता के स्थान पर ग़रीबों, यतीमों और लाचारों को सहारा देने का रिवाज चल पड़ा । अब मनुष्य को धन की अपेक्षा श्रेष्ठता दी जाने लगी । सूरह तौबा में अल्लाह ने फ़रमाया–

"ऐ ईमान लाने वालो ! किताब वालों के अधिकांश धर्मज्ञाता और संसार त्यागी संत लोगों का माल नाजायज़ तरीक़े से खाते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं । जो लोग सोना और चांदी जमा करके रखते हैं तथा उन्हें अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं करते उन्हें दुखदायिनी यातना की मंगल सूचना दे दो, जिस दिन इस (सोना-चांदी के ढेर) पर जहन्नम की आग दहकाई जाएगी, फिर उससे इनके ललाट और इनके पहलू और इनकी पीठों को दाग़ा जाएगा । (और कहा जाएगा) यह वही है जिसको तुमने अपने लिए जमा कर रखा था, तो अब अपने जमा करने का मज़ा चखो ।"

(क़ुरआन, 9 : 34,35)

इस प्रकार क़ुरआन पाक ने पूंजीवादी विचारधारा के स्थान पर एक समाजपरक विचारधारा (Socialistic Approach) को उभारा और सामाजिक न्याय पर बल दिया ।

सामाजिक परिवर्तन

सामाजिक स्तर पर असमानता के स्थान पर समता स्थपित हो गयी । गोरे-काले और अमीर-ग़रीब का भेद समाप्त हो गया और श्रेष्ठता की कसौटी दौलत नहीं बल्कि तक़वा (ईश-भय) बन गया ।

सांस्कृतिक परिवर्तन

सांस्कृतिक और नैतिक स्तर पर दुराचार, बलात्कार और शराब सब बन्द हो गये और समाज ने एक साफ़-सुथरा और पवित्र रूप धारण कर लिया । औरतों पर अत्याचार बन्द हो गये, औरतों ने अश्लीलता के स्थान पर शालीनता और उत्तम आचरण को अपनाया और बदकारी (व्यभिचार) को इतना घिनौना समझा जाने लगा कि उसके लिए कठोर दंड निर्धारित की गयी । औरतों को विरासत में हिस्सा मिला और भ्रूण हत्या अर्थात नवजात बच्चियों की हत्या का रिवाज भी समाप्त हो गया ।

स्पष्ट रहे कि भारत में अभी तक राजस्थान, तमिलनाडु और अन्य भागों में अभी तक नवजात बच्चियों की हत्या का रिवाज-सा है । जबकि इसे अवैध घोषित हुए बहुत दिन हो गये । (India Today 31 Oct. 1988 ई॰)

सती प्रथा के विरुद्ध राजाराम मोहन राय ने 19वीं

शताब्दी में आवाज़ उठाई थी । इसके विरुद्ध क़ानून भी पास हुआ परन्तु 1987 ई॰ में राजस्थान में देवराला नायक स्थान पर सती के रस्म को बड़े धूम-धाम से मनाया गया, जिसमें एक विधवा रूप कुंवर ने अपने पति की मृत्यु पर अपने आपको अग्नि को समर्पित कर दिया । (देखिए Nothern India Patrika, Date 16 Dec. 1988 ई॰ और The Times of India 27 Dec. 1987 ई॰) इससे पूर्व भी सती की कई घटनाएं हुईं । क़ानून और देश के समाज सुधारक अभी तक इसे रोक न सके ।

राजनीतिक न्याय की स्थापना

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के इस इन्क़िलाब ने व्यक्तिगत या क़बाइली अधिनायकत्व के स्थान पर परामर्शदात्री सभा की स्थापना की और विरासती राज्य न रहा, बल्कि चुनाव पर आधारित हुआ । जनता को राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिला । शासक को शासित के आगे वास्तविक रूप से जवाबदेह होना पड़ा और यह तय पाया कि शासक को शासित के जीवन स्तर से उच्च स्तर पर रहना जायज़ नहीं है, जैसा कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन (आदरणीय सत्यनिष्ठ ख़लीफ़ा) ने सिद्ध करके दिख दिया ।

इस प्रकार एक ओर तो पूरी जनता का स्वभाव (Ethos) बदल गया, व्यक्तित्व आचरण बदल गये और दूसरी ओर सामाजिक ढांचा मानव-शत्रु के रूप को छोड़कर एक मानवता-प्रिय रूप में बदल गया । यह मौलिक परिवर्तन (Metamorphosis) व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों स्तरों पर हुआ और अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के जीवन के केवल बीस बर्षों में ।

रसूल (सल्ल॰) का कमाल

इन सारे मौलिक परिवर्तनों के पीछे जो एक आश्चर्यजनक बात है और जिस पर मानव की बुद्धि दंग रह जाती है वह यह है कि सभी बदलाव केवल बीस-बाइस सालों में अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने प्रस्तुत किए । और उस समाज में प्रस्तुत किए, जो एक अनपढ़ समाज था । जहां न छापा-ख़ाने थे, न पत्र-पत्रिकाएं, न किताबें थीं, न रेडियो, न टेलीविज़न थे, न टेलीफ़ोन और न आवागमन के वे साधन जो आज उपलब्ध हैं जैसे तेज़ गति से चलने वाली ट्रेनें, मोटर और हवाई जहाज़ इत्यादि । हुकूमत का भी संगठित रूप नहीं था । न विधानसभा, न लोकसभा, न पुलिस, न फ़ौज । ऐसी परिस्थिति में चालीस वर्ष की आयु में अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को नुबूवत (पैग़म्बरी) मिली और अपने जीवन काल के बीस-बाइस सालों में इतनी बड़ी क्रान्ति ला दी । यह एक ऐसा कारनामा है, जिसका उदाहरण दुनिया में न मिला है और न मिलेगा ।

कार्ल मार्क्स ने "दास कैपिटल" 1887 ई॰ में लिखा और रूस की समाजवादी क्रान्ति 1917 ई॰ अर्थात् तीस साल बाद हुई और उस समय की रूसी क्रान्ति को देखें तो पाते हैं कि रूस के समाज में शिक्षा भी थी, और प्रेस भी था, समाचार-पत्र और पुस्तकें भी थीं, और वे सभी संचार के साधन थे जो पैग़ाम को फैलाने के लिए आवश्यक है । फिर भी आश्चर्य है कि यह क्रान्ति पूरी न हो सकी । फिर यह कथित क्रान्ति 1994 ई॰ में अर्थात क्रान्ति के 77 वर्षों बाद सोवियत संघ के बिखराव के साथ ही अपना बचा-खुचा प्रभाव खो बैठी ।

"News Times" के Sept. 1988 ई॰ के अंक में Igor Arievich लिखते हैं कि "रूस में जब 1917 ई॰ में क्रान्ति आई तो समाज का ढांचा तो बदला लेकिन राष्ट्र का स्वभाव (Ethos) नहीं बदला । वह पूंजीवादी ही बना रहा और उसी पूंजीवादी सोच को लिए हुए रूस के समाज ने समाजवादी ढांचा अपना लिया ।" लेखक के अनुसार परिणाम यह हुआ कि जनता की शक्ति (Dictatorship of the Proletariat) के स्थान पर दल की शक्ति और दल की शक्ति के स्थान पर केवल एक व्यक्ति स्टॉलिन की शक्ति ने ले ली । देश में सही आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था उत्पन्न न हो सकी । लेखक के कथनानुसार नौकरियां और पदवी लोगों की क्षमता के अनुसार न देकर सामाजिक स्तर के आधार पर दिए जाने लगे । यही कारण है कि रूस में Glasnost (स्वतंत्र चिंतन) और Parestroika (नव निर्माण) के आन्दोलन बड़े ज़ोर-शोर से चल पड़े थे । वे सारी बुराइयां जो अब तक चलती रही हैं उनका भेद खोला जा रहा है, अर्थात स्वयं रूसी चिंतकों के अनुसार समाजवादी क्रान्ति सही रूप में आई ही नहीं । इस प्रकार ईसाइयत फैली मगर हज़रत ईसा (अलैहि॰) के बाद जैसा कि एक अमेरिकी लेखक Michael Hart ने अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है कि "यद्यपि ईसा

(अलैहि॰) ही ईसाइयत के विशिष्ट नैतिक और धार्मिक आस्थाओं के कर्णधार हैं, किन्तु ईसाई धर्मज्ञान को विशिष्ट प्रगति देने वाले 'सेंटपॉल' थे जो ईसाइयत के मुख्य प्रचारक थे और जिन्होंने New Testament के अधिकांश भाग लिखे।" (Reference : Michael H.Hart, The 100-A Ranking of the most influential person in History. (Hart Publishing INC. New York City, 1978, P-39)

दुनिया में बड़े-बड़े नेता और सुधारक आए, उन्होंने सुधार का काम किया, परन्तु ऐसा शायद ही कोई सुधारक या नेता रहा हो जिसने अपने जीवन के 20-22 वर्षों में अरब के ऐसे अनपढ़ समाज में जो अज्ञानता और मानव विरोधी सारी बुराइयों से भरा हुआ हो, व्यक्तिगत रूप से एक-एक व्यक्ति के स्वभाव को, सारी क़ौम के स्वभाव को और समाज के पूरे ढांचे को पूर्ण रूप से बदल दिया हो। यह एक ऐसा ऐतिहासिक प्रयोग है जो इतिहास की प्रयोगशाला में अनोखा और अकेला है। ऐसा प्रयोग सिवाय एक चमत्कार के और कुछ नहीं हो सकता, और ऐसा चमत्कार सिवाय एक नबी के और नबियों में यह विशिष्टता केवल मुहम्मद (सल्ल॰) को प्राप्त है। Michael Hart जिसका अभी ऊपर उल्लेख हुआ है, स्वयं एक ईसाई लेखक हैं। उन्होंने "The 100-A Ranking of the most Influential Person in History" नामक पुस्तक लिखी–इस पुस्तक में उन्होंने दुनिया के 100 महान व्यक्तियों का उल्लेख किया है। उनमें हज़रत ईसा (अलैहि॰) भी हैं, कार्ल मार्क्स भी है, हज़रत मूसा (अलैहि॰) भी हैं, अशोक भी हैं, कन्फ़्यूशियस भी हैं, फ़्रॉयड भी हैं, सेंटपॉल भी हैं, परन्तु आश्चर्य की बात है कि उन सभी एक सौ महानतम व्यक्तियों में उन्होंने पहला नाम हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का रखा है और पहला अध्याय आप (सल्ल॰) ही पर लिखा है। उन्होंने लिखा है– "दुनिया के सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्तियों में मुहम्मद (सल्ल॰) को प्रथम स्थान पर रखने का मेरा फ़ैसला कुछ लोगों को आश्चर्य में डाल देगा और कुछ विरोध करेंगे परन्तु वे इतिहास के एक व्यक्ति थे जो धार्मिक और सांसारिक दोनों स्तरों पर पूर्ण रूप से सफल रहे।" (पृष्ठ-33)

उन्होंने भी वही बात कही है जो मैंने ऊपर कही थी। उनके अनुसार–

"इस किताब में उल्लिखित अधिकांश व्यक्तियों को यह लाभ उपलब्ध था कि वे सभ्यता के केन्द्र और सांस्कृतिक रूप से प्रगतिशील समाज में जन्मे और पले-बढ़े, जबकि मुहम्मद (सल्ल॰) मक्का में पैदा हुए जो दक्षिणी अरब में है। वह उस समय दुनिया का एक पिछड़ा देश था। व्यापार, कला और ज्ञान-विज्ञान से कोसों दूर था।... यह अनोखा जोड़ है सांसारिक और धार्मिक प्रक्रिया का, जिसके परिणामस्वरूप मैं समझता हूं कि मुहम्मद (सल्ल॰) को मानव इतिहास का एक मात्र सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व समझे जाने का अधिकार प्राप्त है।" (पृष्ठ-40)

यह कौन-सा आकर्षण था, यह कौन-सी शक्ति थी, कैसी सत्यवादिता और सत्य निष्ठा थी जिसने इतनी बाधाओं और कठिनाइयों के होते हुए भी अपने जीवनकाल के छोटे से भाग में एक नये समाज को जन्म दिया और उसे चलाकर दिखा दिया। एक आदर्श आचरण दुनिया और विशेषकर मुसलमानों के सामने रख दिया। एक न्यायसंगत जीवन और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय पर आधारित समाज के न केवल सिद्धांत स्पष्ट कर दिए बल्कि उस समाज को स्थापित करके दिखा दिया।

मुसलमान और आदर्श आचरण

आइए अब हम यह देखें कि हम अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के अनुयायी होने का दावा करते हैं क्या उन सिद्धांतों का अनुसरण कर रहे हैं ? कुरआन मजीद की सूरह आले इमरान की आयत 110 में अल्लाह मुसलमानों से फ़रमाता है–

"तुम वह उत्तम समुदाय हो जिसे मानव के लिए पैदा किया गया है, तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह पर 'ईमान' रखते हो।" यह है वह कर्तव्य जो मुसलमानों पर डाला गया है। कुरआन और अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के आदर्श आचरण के रूप में हमारे हाथों में एक मार्गदीप दिया गया कि हम उससे अंधेरे दूरे करें और खुद भी उजाले में चलें और दूसरों को अंधेरे से निकालें। लेकिन हम दूसरों को तो क्या अंधेरे से निकालते खुद ही अंधेरों में खो गए। अब आप खुद विचार करें कि सज़ा के भागी कौन हैं ? वे लोग अधिक ज़िम्मेदार हैं जिन्हें मार्गदीप मिला ही नहीं या वे जिन्हें मार्गदीप मिला

और वे स्वयं अंधेरे में डूब गये ।

यह बात मस्तिष्क से निकाल दीजिए कि केवल मुसलमान घर में जन्म हो जाने से और एक मुस्लिम जैसा नाम रख लेने से आप पूरे मुसलमान हो गये । कुरआन में अल्लाह ने सूरह अल-हुजुरात की आयत 14 में साफ़-साफ़ फ़रमाया है–

''बद्दू कहते हैं कि ''हम 'ईमान' लाए ।'' कह दो : तुम ईमान लाए, परन्तु यों कहो : हम इस्लाम लाए हैं और अभी 'ईमान' अभी तुम्हारे दिलों में उतरा ही नहीं है और यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करोगे तो वह तुम्हारे कमाई में से कुछ कम नहीं करेगा निस्संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला और कृपाशील है ।''

अर्थात जब तक ईमान पूर्ण रूप से न लाया जाए इस्लाम लाने से हम 'मोमिन' (ईमान वाले) नहीं हो सकते । कुरआन मजीद की सूरह निसा की आयत 136 में है–

''ऐ ईमान लाने वालो ! ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और जो किताब अन्तिम रसूल पर उतारी है और उस किताब पर जिसे वह इससे पहले उतार चुका है ।''

किताब पर ईमान लाने का अर्थ ही यह है कि किताब में बताए गये सिद्धांतों और शिक्षाओं को माना जाए और उसमें लिखित आदेशों की पाबन्दी की जाए, नहीं तो फिर 'ईमान' लाने का अर्थ क्या हुआ ?

कुरआन पाक के कुछ आदेशों पर विचार कीजिए–सूरह बक़रा की आयत 188 में बताया गया है–

''और तुम आपस में एक-दूसरे का माल अवैध रूप में न खाओ, और न इसको (रिश्वतों के तौर पर) हाकिमों के पास पहुंचाओ कि इस तरह तुम जानते-बूझते लोगों के माल का कुछ भाग हक़ मारकर हड़प कर सको ।

सूरह हूद की आयत-85 में है–

''नाप तौल न्याय के साथ किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो और धरती में बिगाड़ न करते फिरो ।''

सूरह अल-मोमिनून में अल्लाह ने फ़रमाया है–

जो अपनी अमानतों और अपने वादे का ध्यान रखने वाले हैं और जो अपनी नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं ऐसे ही लोग वारिस होने वाले हैं 'फ़िरदौस' (जन्नत) के और वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे ।'' (23 : 8-11)

अब ज़रा सोचिए कि हममें से कितने हैं जो दूसरे का हक़ नहीं मारते, घूस लेने और देने से बचे रहते हैं, व्यापार में ईमानदारी दिखाते हैं, अमानतों और वादों का ध्यान रखते हैं । आज अधिकांश लोग दौलत के पुजारी हो गये हैं और समाज में प्रतिष्ठा उसी को अधिक देते हैं जिसके पास दौलत अधिक है, चाहे वह किसी भी तरीक़े से जमा की गयी हो । आज हम समाज में सबसे ऊंचे स्थान उसको नहीं देते जिसके दिल में अल्लाह का भय सबसे अधिक है । क्या ये सब बातें 'ईमान' से मेल खाती हैं ?

आज कहां हैं वे मुसलमान जिनके आचरण में कुरआन के आदेशों की पूर्ण झलक दिखाई देती हो और जो सामाजिक और आर्थिक न्याय पर दिल से विश्वास रखते हों।

अपनी कविता 'जवाबे-शिकवा' में अल्लामा इक़बाल ने क्या ख़ूब कहा–

शोर है हो गये दुनिया से मुसलमां नाबूद
हम कहते हैं कि थे भी कहीं मुस्लिम मौजूद ?
वज़ा में तुम हो नसारा तो तमद्दुन में हनूद
ये मुसलमां हैं जिन्हें देख के शर्माए यहूद
यूं तो सैयद भी हो मिर्ज़ा भी हो अफ़ग़ान भी हो,
तुम सभी कुछ हो बताओ तो मुसलमान भी हो ?

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने एक सद्क्रान्ति का नमूना हमारे सामने रख दिया । आदर्श आचरण का स्वरूप हमें दिखा दिया, फिर भी हम अनुसरण न करें तो दोष किसका है ?

मुसलमानों का कर्तव्य सामाजिक व आर्थिक-न्याय से लड़ना और न्याय की स्थापना के लिए प्रयत्न करना है और यही काम अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने किया ।

रसूल पाक (सल्ल॰) का आदर्श आचरण

व्यक्तिगत रूप से जो आचरण अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) का था उसे एक आदर्श (Ideal) चरित्र कहना ही उचित होगा । आप (सल्ल॰) बचपन से ही सच बोलने वाले और अमानतदार थे, नुबूवत से पूर्व ही आप (सल्ल॰) को अमीन की उपाधि मिल चुकी थी । आप (सल्ल॰) ने अज्ञानता की अमानवीय रस्मों को आरंभ से न माना ।

अत्याचार का भी साथ न दिया । सदा ग़रीबों और लाचारों की सहायता की । ऋण लिया तो ग़रीबों की सहायता के लिए लिया और भूखे रहे तो पेट पर पत्थर बांध लिया । वादा किया तो उसे निभाया । हमेशा से आप (सल्ल०) को सादगी पसंद थी । एक बार हज़रत अली (रज़ि०) ने एक व्यक्ति को निमंत्रण दिया । हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) ने कहा कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) भी आते और हमारे साथ भोजन करते तो अच्छा होता । हज़रत अली (रज़ि०) गये और नबी (सल्ल०) से निवेदन किया । आप (सल्ल०) आए, परन्तु दरवाज़े पर पहुंचे तो यह देखकर कि घर में दीवारों पर पर्दे लटक रहे हैं, लौट गये । हज़रत अली (रज़ि०) ने वापस होने का कारण पूछा तो नबी (सल्ल०) ने बताया कि पैग़म्बर की शान के विरुद्ध है कि वह किसी सज-धज वाले घर में प्रवेश करे । (अबू दाऊद, भाग-2, पृष्ठ-171)

एक बार नबी (सल्ल०) किसी युद्ध से वापस आए । हज़रत आइशा (रज़ि०) ने स्वागत के तौर पर घर की दीवार पर पर्दा लटका दिया था । आप (सल्ल०) घर के अन्दर आए तो हज़रत आइशा (रज़ि०) ने सलाम किया । आप (सल्ल०) का चेहरा-मुबारक से अप्रसन्नता के चिन्ह प्रकट होने लगे । इसके बाद आप (सल्ल०) पर्दे की ओर बढ़े और उसको फाड़ दिया और फ़रमाया–

"अल्लाह ने हमको ईंट-पत्थर को सजाने के लिए साधन नहीं दिया ।" (अबू दाऊद, भाग-2, पृष्ठ-219)

एक बार हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) के गले में सोने का हार देखा तो फ़रमाया– "क्या तुमको यह अप्रिय न लगेगा जब लोग कहेंगे कि पैग़म्बर (सल्ल०) की बेटी के गले में आग का हार है ।" (नसई, भाग-2, पृष्ठ-143)

एक बार हज़रत आइशा (रज़ि०) के हाथों में सोने के कंगन देखकर फ़रमाया–

"अगर इसको उतारकर 'वरस' के कंगन को ज़ाफ़रान से रंगकर पहन लेतीं तो अच्छा होता ।"

(नसई, भाग-2, पृष्ठ-143)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) कहा करते थे कि आदमी को उन कुछ चीज़ों के अतिरिक्त और किसी चीज़ का हक़ नहीं है–रहने के लिए एक घर, शरीर ढंकने के लिए एक कपड़ा और पेट भरने के लिए रूखी रोटी और पानी ।" (तिरमिज़ी) आप (सल्ल०) के घर में अक्सर उपवास (फ़ाक़ा) रहता और रात को तो आप (सल्ल०) और सारा घर प्राय: भूखा सो रहता । हज़रत आइशा (रज़ि०) बताती हैं कि पूरे जीवन अर्थात मदीना के जीवन-काल से मृत्यु तक आप (सल्ल०) ने कभी दो वक़्त भरपेट रोटी नहीं खाई (सीरतुन्नबी, भाग-1) । ग़रीबों से हमेशा प्यार करते थे । हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०) अपने आपको ग़रीबों से ऊंचा समझते थे । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उनसे कहा कि, "तुमको जो सहायता और रोज़ी ईश्वर की ओर से मिली है वह उन्हीं ग़रीबों के बदौलत मिली है ।"

(सहीह मुस्लिम)

सहनशीलता और सहानुभूति का यह हाल था कि आप (सल्ल०) नमाज़ पढ़ने मस्जिद जाते तो रास्ते में एक यहूदी औरत का घर पड़ता था । वह जानबूझकर ऊपर से आप (सल्ल०) पर कूड़ा फेंक देती थी । आप (सल्ल०) कूड़े को झाड़कर सीधे आगे बढ़ जाते और नमाज़ पढ़ते । एक दिन बुढ़िया ने कूड़ा न फेंका, तो उसके घर आप (सल्ल०) उसे देखने गये । वह दंग रह गयी और बोली मैं तो आप (सल्ल०) पर कूड़ा फेंकती थी । आप (सल्ल०) मेरे पास कैसे आए । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा– "आज तुमने कूड़ा न फेंका, तो मैंने समझा कि तुम बीमार हो गयी हो इसलिए मैं तुम्हारा हाल मालूम करने आया हूं ।" यही सहानुभूति जब राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर आई तो वह भी लाजवाब और अद्‌भुत थी । मक्का विजय के समय विजेता के रूप में आप (सल्ल०) जब मक्का वापस आए तो अपने भाषण में कहा–

"ऐ कुरैश के लोगो ! अब अज्ञानता का घमंड और वंश पर गर्व करना अल्लाह ने मिटा दिया । सब लोग आदम की नस्ल से हैं और आदम मिट्टी से बने थे ।"

(सीरतुन्नबी, भाग-1)

यह था वह महान पैग़ाम जिसने सारे विश्व के लिए मानव एकता की आधारशिला उपलब्ध करा दी । ख़ुतबे के बाद आप (सल्ल०) ने जन समूह की ओर देखा तो अत्याचारी कुरैश थे । उनमें वे महत्त्वाकांक्षी भी थे जो इस्लाम को मिटाने में सबसे आगे थे, वे भी थे जिनकी ज़ुबानें अल्लाह के रसूल (सल्ल०) पर गालियों की बौछार

करती थीं। वे भी थे जिनके अस्त्र-शस्त्र ने रसूल (सल्ल०) के साथ गुस्ताख़ियां की थीं, वे भी थे जिन्होंने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के रास्ते में कांटे बिछाए थे, वे भी थे जो नसीहत के वक़्त आप (सल्ल०) के एड़ियों को पत्थर मारकर लहूलुहान कर दिया करते थे, वे भी थे जो आप (सल्ल०) के ख़ून के प्यासे थे, वे भी थे जिनके हमलों की बाढ़ मदीना की दीवारों से आ-आकर टकराती थी, वे भी थे जो मुसलमानों को तपती रेत पर लिटाकर उनके सीनों पर आग से दाग़ लगाया करते थे।

सारे संसार के लिए रहमत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने उनकी ओर देखा और प्रभावी रूप से पूछा– "तुमको कुछ मालूम है, मैं तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करने वाला हूं ?" वे लोग यद्यपि अत्याचारी थे, निष्ठुर थे, बेरहम थे, लेकिन स्वभाव को पहचानने वाले थे। पुकार उठे, "तू शरीफ़ भाई है, और शरीफ़ भाई का बेटा है।" अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया–

"आज तुमपर कुछ इल्ज़ाम नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो।" क्या इस क्षमाशीलता, दयालुता, मानव प्रेम, सहनशीलता और इस अनोखे दयाभाव का कोई उदाहरण इतिहास प्रस्तुत कर सकता है ? और फिर यही नहीं मक्का के विरोधियों ने वहां से हिजरत करने वाले मुसलमानों के घरों पर अधिकार जमा लिया था और उन्हें मक्का से निकाल दिया था अब वही हिजरत करने वाले विजेता के रूप में मक्का वापस आए तो यह अवसर था कि उनके अधिकार उन्हें वापस दिए जाएं। लेकिन आप (सल्ल०) का कमाल देखिए कि आप (सल्ल०) ने मुहाजिरों को आदेश दिया कि वे भी अपनी जायदाद से दस्तबरदार हो जाएं। अर्थात अपने छिने हुए मकान जो हड़पने वालों ने ले लिए थे उन्हें भी वापस न लें।

दुनिया में जब भी किसी गिरोह को किसी दूसरे गिरोह पर विजय प्राप्त हुई, तो विजेता ने लूट-मार, हत्या, छीन-झपट, अत्याचार और हिंसा अवश्य किया है। विजित की जायदादों पर अपना अधिकार जमा लिया है और उसके साथ बेदर्दी से पेश आए हैं। यह एक अनोखा उदाहरण है कि जहां अल्लाह के रसूल (सल्ल०) और उनके साथियों ने एक ओर तो बेहद अत्याचार सहे, मक्का छोड़कर चले गये, जायदादों से हाथ धोया और फिर जब विजेता बनकर वापस आए तो अत्याचार करना तो दूर की बात है अपनी छीनी हुई जायदादें भी वापस न लीं। यह आचरण केवल सारे संसार के लिए रहमत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का ही हो सकता है। Michael Hart ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति घोषित किया तो, ग़लत नहीं किया।

एक सामाजिक विश्लेषण

ऊपर मैंने आरंभ में इस्लाम से पूर्व के अरब समाज का C.Wright Mills के दृष्टिकोण के आधार पर तीन बिन्दुओं पर विश्लेषण किया है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जो व्यक्तिगत और सामाजिक क्रान्ति लाई थी, उसके बाद अरब समाज का उन्हीं तीन बिन्दुओं पर विश्लेषण किया जाए तो इस प्रकार होगा–

1. समाज से असमानता समाप्त हो गयी, और मानव एकता और बराबरी पर आधारित समाज बन गया। समाज के विभिन्न भागों में शोषण और विरोधपूर्ण संबंधों के स्थान पर शोषणविहीन और न्यायसंगत संबंध स्थापित हुए। काले-गोरे और ऊंच-नीच का भेद मिट गया।

2. मानव इतिहास में इस नये समाज को अत्यंत उच्च स्थान प्राप्त हुआ। दौलत को मानवता की तुलना में श्रेष्ठता देने की बजाए वह समाज मानवता और ईश-भय को दौलत पर श्रेष्ठता देने लगा। मानवता के विकास का रास्ता खुल गया।

3. नये समाज में जो लोग सत्ता में आए वे मानवतावादी, विनीत, दयालु, मानव-समानता के ध्वजावाहक, शोषण के विरोधी और मानवता के सच्चे मित्र थे। असत्य से कोसों दूर और सत्य की एक जीती-जागती तस्वीर थे।

यह था वह सम्पूर्ण बदलाव जो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अपने जीवन के बीस-बाइस सालों में पेश किया।

आज दुनिया को इसी परिवर्तन की आवश्यकता है, जिससे आज की यह चीख़ती और व्याकुल मानव समाज ऊंच-नीच और अज्ञानता के भेद-भाव से मुक्ति पा सके, और चारों ओर केवल न्याय और परस्पर प्रेम और भाईचारे की रोशनी नज़र आए।

ब्याजरहित वैकल्पिक आर्थिक प्रणाली

■ डॉ॰ फ़रहत हुसैन

गत दो शताब्दियों में यूरोपीय देशों के विचारों के प्रभाव में विश्व में दो बड़ी आर्थिक प्रणालियां 'पूंजीवाद' और 'समाजवाद' का प्रादुर्भाव हुआ । कहीं-कहीं इन दोनों का मिला-जुला रूप 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' को अपनाया गया जिसे कल्याणकारी राज्य (Welfare State) का नाम भी दिया गया । पूंजीवादी आर्थिक प्रणाली स्वतंत्र अर्थव्यवस्था की अवधारणा संपत्तियों पर व्यक्तिगत अधिकार, लाभ कमाने का अधिकार जैसे सिद्धांतों पर आधारित है । साम्यवाद या समाजवाद में उत्पादन के साधनों पर सामूहिक या सरकारी निमंत्रण का सिद्धांत लागू किया गया, आर्थिक गतिविधियों पर नियंत्रण तथा आर्थिक नियोजन को अपनाया गया । मानव स्वभाव के प्रतिकूल होने के कारण समाजवादी प्रणाली धराशायी हो गयी । मिश्रित अर्थव्यवस्था में कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों का राष्ट्रीयकरण किया जाता है और शेष निजी क्षेत्रमें रहते हैं । इसमें भी आर्थिक नियोजन होता है मगर बाज़ार पर पूर्ण नियंत्रण नहीं किया जाता ।

यह सभी प्रणालियां ब्याज आधारित हैं । इन सब के उद्देश्यों में आर्थिक कल्याण को आधार माना गया है । लक्ष्य है कि देश में उपलब्ध संसाधनों के द्वारा नागरिकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो, उत्पादन एवं आय में वृद्धि हो, रोज़गार के अवसर उपलब्ध हों, देशवासियों का जीवन स्तर बढ़े और आर्थिक समृद्धि का वातावरण हो । उल्लेखनीय है कि जीवन के प्रति उनकी अपनी अवधारणा के कारण इन सबमें मानव कल्याण का केवल भौतिक पक्ष ही सामने रखा गया । इसमें कहीं भी आध्यात्मिक अथवा नैतिक पक्ष पर वार्ता नहीं की गयी । इन्सानियत की त्रासदी यह है कि खुशहाली और कल्याण के ये सांसारिक और भौतिक लक्ष्य भी कहीं प्राप्त नहीं किए जा सके । आम आदमी की खुशहाली का दावा लेकर विश्व के एक भाग में लागू होने वाली समाजवादी प्रणाली मैदान छोड़कर भाग खड़ी हुई । बाज़ार आधारित पूंजीवादी व्यवस्था ने कुछ बेहतर करने का प्रयास किया परन्तु इन्सान को आर्थिक समस्याओं के समाधान में बुरी तरह विफल हुई ।

सामाजिक न्याय की स्थापना तो दूर की बात है ग़रीबी, दरिद्रता, बेरोज़गारी, आर्थिक असमानता में वृद्धि विकसित तथा अविकसित सभी देशों में हुई है । महंगाई, मुद्रास्फीति, शेयर बाज़ार तथा वस्तु बाज़ार में उतार-चढ़ाव व्याप्त हैं । सभी देश तथा विदेशी ऋणों और उसके ब्याज से परेशान हैं । सट्टेबाज़ी ने व्यवसीाको तलपट कर रखा है । स्वार्थपरता और भौतिकता ने आर्थिक अपराध को बढ़ा दिया है । एक देश दूसरे देश के संसाधनों को लूटने के प्रयास में है । इसी मानसिकता के कारण युद्ध हो रहे हैं । स्वयं हमारे देश में ग़रीबी, बेरोज़गारी, महंगाई, धन के वितरण में नाबराबरी, उपभोक्तावाद के कारण फ़ुज़ूलख़र्ची और बर्बादी, रिश्वत और भ्रष्टाचार का बोलबाला है । किसान आत्महत्या पर विवश हैं ।

गंभीर आर्थिक संकट की इस पृष्ठभूमि में हर सोचने-समझने वाला व्यक्ति चिंतित है । अर्थशास्त्री भारी मंदी की आहट का आभास कर रहे हैं । प्रचलित प्रणालियों के विफल होने पर किसी वैकल्पिक समाधान पर ध्यान जाना स्वाभाविक है । हमारे विचार में यह विकल्प इस्लाम की ब्याजरहित आर्थिक प्रणाली है ।

वैकल्पिक व्यवस्था

इस्लाम ने जो आर्थिक प्रणाली प्रस्तुत की है वह प्रचलित प्रणालियों से भिन्न है । यह इस्लामी शिक्षाओं पर आधारित है जिसमें ब्याज को कोई स्थान नहीं । यह आर्थिक प्रणाली इस्लामी जीवन व्यवस्था की एक अंग है इसलिए इसमें आस्था तथा नैतिक मूल्यों को बुनियादी स्थान प्राप्त है तथा इन्सान के कल्याण Human Well-Being की व्यापक अवधारणा पायी जाती है । इसके अंतर्गत भौतिक व सांसारिक समृद्धि के साथ-साथ आध्यात्मिक तथा पारलौकिक सुख दोनों की प्राप्ति की बात कही गयी है । यह अवधारणा इन्सान को 'आर्थिक मानव' के स्तर से बहुत ऊंचा उठाकर नैतिकता के शिखर की आरे अग्रसर करती है । सामाजिक न्याय तथा हमदर्दी का भाव आर्थिक गतिविधियों में भी

सर्वोपरि रहता है । इस्लाम इन्सान को धरती पर अल्लाह का ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) घोषित करके संसाधनों पर एक अमीन और ज़िम्मेदार हैसियत प्रदान करता है । परलोक में जवाबदेही की अवधारणा और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का रोल मॉडल उसके व्यक्तित्व में उच्चता प्रदान करते हैं । परिणाम यह होता है कि आर्थिक क्रियाओं को नैतिक बंधनों के अधीन नियंत्रित कर दिया जाता है और मनुष्य को भौतिक संतुष्टि के साथ-साथ वास्तविक सुख की प्राप्ति होती है जो केवल इस्लाम की देन (Contribution) है ।

लक्ष्य

इस्लामी आर्थिक प्रणाली का लक्ष्य है कि आर्थिक संसाधनों को निपुणता एवं न्यायसंगत रीति से प्रयुक्त एवं वितरित किया जाए जिससे लोग दुनिया में एक खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकें तथा उनकी सोच तथा उनका आचरण उच्च हो । इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लोगों को जीवकोपार्जन का आदेश दिया गया (62:10)। उपार्जित धन को माता-पिता, रिश्तेदारों, पड़ोसियों और ग़रीबों पर ख़र्च करने की शिक्षा दी गयी (4:36) ज़कात तथा अन्य दान द्वारा आर्थिक दौड़ में पीछे रह जाने वालों का प्रबंध किया गया (9:60)। फ़ुज़ूलख़र्ची और कंजूसी दोनों से रोक कर एक मध्यमार्गी व्यवहार अपनाने का आदेश दिया गया (25:67)। ऐसी व्यवस्था की गयी कि धन दौलत केवल संपन्न वर्ग में ही चक्कर न लगाती रहे (59:7)। ब्याज पूर्ण रोक लगाकर समाज को सुरक्षा प्रदान की गयी (2:278) शराब, जुआ और सट्टा प्रतिबंधित (4:90) करके समाज को बिगड़ने से बचाने का प्रबंध किया गया । रिश्वत, ग़बन, चोरी-डकैती, जमाख़ोरी, नाप-तौल में हेरा-फेरी, व्यभिचार, वेश्यावृत्ति इन सब चीज़ों को रोक दिया गया । ईश्वर के सामने जवाबदेही तथा परलोक में दंड भोगने के विचार को लोगों के मन में बैठा कर स्वयं उनको इन कृत्यों से दूर रहने पर तैयार करना इस्लाम की विशिष्टता है ।

ब्याजरहित वित्तीय व्यवस्था

जैसा कि स्पष्ट है यह व्यवस्था ब्याजरहित है । ब्याज़ सदैव मनुष्यों के शोषण का माध्यम रहा है । पवित्र कुरआन में उन लोगों के विरुद्ध अल्लाह और रसूल की ओर से युद्ध की घोषणा जो सूदख़ोरी को नहीं त्यागते, यह बताने के लिएउ पर्याप्त है कि ब्याज मानवता के प्रति अपराध है (2:278)। ग़रीबों का शोषण, मजबूर की मजबूरी से फ़ायदा उठाना, इन्सानी हमदर्दी के बजाय स्वार्थ और धन-दौलत इकट्ठा करने का जुनून पैदा हो जाना ब्याज की कुछ बड़ी हानियां हैं । बयाज आधारित व्यवस्था में अमीर ग़रीब के बीच का अन्तर बढ़ना स्वाभाविक है । इसलिए इस्लाम ने प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रत्येक प्रकार के सूदी लेन-देन पर पूर्ण रोक लगायी । ऐसी वित्तीय प्रणाली प्रस्तुत की जो ब्याजरहित है । आज बैंक, बीमा कंपनियां और अन्य वित्तीय संस्थाएं ब्याज को अपरिहार्य बताते हैं और कहते हैं कि ब्याज समाप्त करने पर बैंकिंग और बीमा कार्य ठप हो जाएगा । हालांकि ब्याज के बग़ैर भी तमाम वित्तीय एवं आर्थिक गतिविधियां जारी रहती है, बल्कि और अच्छा प्रदर्शन करती हैं जो सामाजिक न्याय और मानव कल्याण को बढ़ाती हैं । सूद को समाप्त करके व्यापार तथा निवेश की अनेक रीतियां इस सिस्टम में मौजूद हैं ।

शिरकत तथा मुज़ारबत

व्यवयास में वित्तीय भागीदारी की दो प्रमुख रीतियां हैं । यदि निवेशकर्ता सक्रिय साझेदार बनता है तो यह 'शिरकत' कहलाती है । इसमें लाभ होने पर उसकी प्राप्ति अनुबंध के अनुसार होगी । हानि होने पर विनियोजित ध नराशि के अनुपात में उसे वहन करना होगी । यदि निवेशकर्ता व्यापार प्रबंधन में सक्रिय योगदान नहीं करना चाहता, केवल धन का निवेश चाहता है तो यह 'मुज़ारबत' कहलाता है । इसमें जो साझेदार वित्तीय साधन नहीं जुटा रहा है वह लाभ में तो भागीदार होता है परंतु हानि में नहीं । हानि धन के विनियोग करने वाले को ही वहन करनी पड़ती है।

विनियोग की इस प्रक्रिया हेतु शेयर बाज़ार, वित्तीय संस्थाएं तथा इस्लामी बैंक मध्यस्थ के रूप में कार्य कर सकते हैं । इस व्यवस्था में ब्याज कहीं भी नहीं, फिर भी संपूर्ण वित्त व्यवस्था कुशलतापूर्वक चलती है । इसमें निवेशकर्ता को लाभ का जो भाग प्राप्त होता है वह प्राय: ब्याज की प्रचलित दरों से अधिक ही होता है । और यदि कम भी हो तब भी न्यायपूर्ण होता है ।

साथ ही उद्योग व्यापार व्यवसाय तथा रोज़गार हेतु अनुकूल माहौल बनता है जिसमें अन्याय, शोषण, अत्याचार एवं अविश्वास नहीं होता ।

उपरोक्त सहभागिता की दोरीतियों 'शिरकत' तथा 'मुज़ारबत' के अतिरिक्त इस्लामी शरीअत ने कुछ अन्य रीतियां भी वैध घोषित की हैं । इसमें किस्त भुगतान पद्धति

एडवांस पद्धति, ठेका पद्धति (भवन अथवा किसी वस्तु के निर्माण के संबंध में) मुख्य है । इन पद्धतियों के तकनीकी नामों तथा उनकी व्याख्या की यहां आवश्यकता नहीं । बताने का उद्देश्य है कि शरीअत के सिद्धांतों के अंतर्गत पूर्ण वित्त प्रबंधन तथा बैंकिंग ब्याज की लानत के बग़ैर संभव है ।

चुनौतियां प्रचलित प्रणालियों की तुलना में ब्याजरहित वैकल्पिक व्यवस्था निस्संदेह आधुनिक युग के गंभीर आर्थिक संकट का समाधान रखती है परन्तु उसको लागू करना एक बड़ी चुनौती है । जमे जमाये सिस्टम को जिसके साथ शक्तिशाली लोगों के हित जुड़े हों, हटाकर दूसरा सिस्टम स्थापित करना आसान काम नहीं है ।

दूसरी बात यह है कि इस्लामी व्यवस्था चौदह सौ साल पहले पूर्ण रूप से लागू की गयी । इसके क्रांतिकारी परिणाम भी सामने आये और वर्षों तक वह व्यवस्था सफलतापूर्वक चलती रही । परंतु आज यह व्यवस्था अपने पूर्णरूप में कहीं भी लागू नहीं है । ब्याजरहित इस्लामी बैंकिंग ने निश्चित रूप से विश्व स्तर पर अपनी अस्तित्व मनवा लिया है मगर उत्पादन, विपणन, कृषि, मज़दूरी, उपभोक्ता व्यवहार तथा दूसरे आर्थिक क्षेत्रों में कोई मॉडल बड़े स्तर पर उपलब्ध नहीं है । हमारे देश में ब्याजरहित बैंकिंग को वाणिज्य बैंकों द्वारा आरंभ करने में क़ानूनी रुकावटें मौजूद हैं । यह हैं बड़ी चुनौतियां जिनको हल करके मानवता को ब्याज के दानव से मुक्ति दिलाना समय की मांग है ।

करने के काम

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विश्व के वर्तमान आर्थिक संकट का एक मात्र उचित समाधान ब्याजरहित अर्थव्यवस्था की स्थापना है, परन्तु यह कोई आसान कार्य नहीं है । हमारे करने के कुछ कार्य में है–

1. ब्याज की विनाशकारिता को लोगों के सामने बड़े पैमाने पर उजागर करें । विश्व के सभी प्रमुख धर्म ब्याज के लेन-देन के विरुद्ध हैं । प्रसिद्ध अर्थशास्त्री लार्ड कींज़ अपने सिद्धांतों में ब्याज दर को न्यूनतम (लगभग 2 प्रतिशत) तक रखने का उल्लेख कर चुके हैं । वर्ष 2010 में भारत के जाने-माने कृषि अर्थशास्त्री डॉ॰ एम॰एस॰ स्वामीनाथन किसानों की आत्म हत्याओं को रोकने के लिए इस्लामी बैंकिंग एवं वित्त व्यवस्था की वकालत कर चुके हैं TCN News 6-4-2010) विश्व स्तर पर ब्याज की ख़राबियों का उल्लेख होने लगा है । हमें अधिक स्पष्ट एवं तार्किक ढंग से इसको जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करना होगा ।

2. पूंजीवादी मानसिकता अपने हितों की पूर्ति हेतु उपभोक्तावाद को बढ़ावा दे रही है । विज्ञापनों तथा अन्य प्रभावशाली रीतियों द्वारा लोगों की उपभोग की वस्तुओं तथा नयी-नयी सेवाओं की ओर आकर्षित कर दिया गया है । वे अपनी आय से अधिक ऋण लेकर ख़र्च कर रहे हैं । उपभोक्तावाद के इस रुझान के तोड़ के लिए क़ुरआन तथा हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की उन शिक्षाओं को प्रस्तुत करना होगा जो सादा जीवन एवं मध्य मार्गी आर्थिक व्यवहार से संबंधित हैं । इसी प्रकार ग़रीबी, आर्थिक विषमता (अर्थात अमीर और ग़रीब की आय में बड़ा अन्तर), देश के संसाधनों पर ग़िने-चुने लोगों का आधिपत्य जैसी समस्याओं पर खुलकर चर्चा करनी होगी ।

3. जैसा की ऊपर कहा गया कि भारत में कमर्शियल बैंकों में ब्याजरहित और लाभ-हानि पर आधारित व्यवस्था को आरंभ करने में कुछ क़ानूनी रुकावटें हैं । हालांकि बैंकिंग एवं अर्थनीति से जुड़े कई विशेषज्ञ देशहित में इस नयी वैकल्पिक व्यवस्था के पक्ष में अपनी राय दे चुके हैं । आशा की जानी चाहिए कि ये रुकावटी अवश्य दूर होगी । फिर भी आवश्यकता है कि मौजूदा क़ानूनी ढांचे के अंतर्गत अनुमन्य सहकारिता व माइक्रो फाइनेंस आदि द्वारा ब्याजरहित वित्त ज़रूरतमंदों तक पहुंचे इसके लिए प्रयास किया जाना चाहिए ।

4. ब्याज की हानियों के साथ-साथ लाभहानि पर आधारित वैल्पिक व्यवस्था के गुणों एवं सकारात्मक प्रभावों को भी लोगों के सामने आना चाहिए । मलेशिया का उदाहरण सामने है, वहां के ग़ैर-मुस्लिम भाई बड़ी संख्या में इस्लामी बैंकों के खातेदार हैं और नयी व्यवस्था को अधिक लाभकारी मानते हैं ।

अंत में कहा जा सकता है कि प्रचलित आर्थिक प्रणालियों का झुकाव सरमायादारों के पक्ष में है । इन्सानों के रचयिता और पालनहार द्वारा प्रदत्त एवं रहमते आलम (सल्ल॰) द्वारा इस धरती पर लागू किया गया सिस्टम ही अमीर ग़रीब, कमज़ोर ताक़तवर, सबके हितों की रक्षा कर सकता है । काश सूद से पाक और ज़कात व दान पर आधारित व्यवस्था, जिसमें हमदर्दी, भाईचारा और आपसी प्रेम-भाव पाया जाता है, लागू हो जाए ताकि लोगों का भौतिक कल्याण भी और पारलौकिक सुख की भी प्राप्ति हो ।

हमारी पाठ्य पुस्तकें

आसान कहानियाँ	अफ़ज़ल हुसैन		10.00
अख़लाक़ी कहानियाँ – 1	अफ़ज़ल हुसैन		10.00
अख़लाक़ी कहानियाँ – 2	अफ़ज़ल हुसैन		10.00
अख़लाक़ी कहानियाँ – 3	अफ़ज़ल हुसैन		12.00
अख़लाक़ी कहानियाँ – 4	अफ़ज़ल हुसैन	[set 44.00]	12.00
क़ुरआन की बातें – 1(बच्चों के लिए)	सय्यद नज़र ज़ैदी		20.00
क़ुरआन की बातें – 2(बच्चों के लिए)	सय्यद नज़र ज़ैदी	[set 38.00]	18.00
नेक औरतें – 1	मतीन तरिक़ बाग़पती		15.00
नेक औरतें – 2	मतीन तरिक़ बाग़पती	[set 27.00]	12.00
नवीन सरल गणित – 1	सम्पादन समिति		30.00
नवीन सरल गणित – 2	सम्पादन समिति		35.00
नवीन सरल गणित – 3	सम्पादन समिति		50.00
नवीन सरल गणित – 4	सम्पादन समिति		50.00
नवीन सरल गणित – 5	सम्पादन समिति	[set 279.00]	114.00
प्यारे रसूल (सल्ल0)	अफ़ज़ल हुसैन		14.00
सामान्य ज्ञान (भाग – 1)	अफ़ज़ल हुसैन		08.00
सामान्य ज्ञान (भाग – 2)	अफ़ज़ल हुसैन	[set 18.00]	10.00
सच्चा दीन (पहला भाग)	अफ़ज़ल हुसैन		55.00
सच्चा दीन (दूसरा भाग)	अफ़ज़ल हुसैन		60.00
सच्चा दीन (तीसरा भाग)	मौलाना मुहम्मद यूसुफ इस्लाही		75.00
सच्चा दीन (चौथा भाग)	मौलाना मुहम्मद यूसुफ इस्लाही		80.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26981652, 26984347, Fax: 26987858
E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

सार्थक प्रयास से ही बदलेगी भ्रष्ट व्यवस्था

■ विद्या प्रकाश

किसी भी वारिधारा के जल की निर्दलता तथा स्वच्छता कल कल दल के सांगीतिक स्वर के साथ उसके निरंतर प्रवाह में निहित है । यदि उसका जल एक स्थान पर अवरुद्ध हो जाए तो उसमें काई, दुर्गन्धयुक्त कीचड़ और हानिकारक कीटाणु उत्पन्न हो जाया करते हैं । इसी प्रकार किसी भी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक व्यवस्था में लचीलापन होना चाहिए । वह इतनी परिस्थित्यानुकूल परिवर्तनशील तथा व्यवहारोपयोगी हो कि बदली हुई स्थितियों में स्वयं को ढालकर समायोजित कर सके ।

काल तथा स्थित्यानुसार खुद को समायोजित तथा परिवर्तित न कर सकने वाली व्यवस्था वक़्त के तक़ाज़ों, जनसामान्य की अपेक्षाओं तथा नवोत्पन्न परिस्थितियों की आवश्यकताओं को कदापि पूरा नहीं कर पाती । इस निष्प्राण बोझिल व्यवस्था की दशा उस बन्दरिया की भांति हो जाया करती है जो मर जाने के बावजूद शिशु की लाश अपनी छाती से चिपकाये दरख़्त की इस डाली से उस डाली पर छलांग लगाती रहती है । इस निष्प्राण अनुपयोगी व्यवस्था में जान फूंकने तथा उसमें रचनात्मक परिवर्तन अथवा उसके स्थान पर वैकल्पिक व्यवस्था की स्थापना हेतु स्पष्ट सर्वांगीण दृष्टिकोण की आवश्यकता पड़ती है । समय के साथ चलकर घिस-पिट चुकी व्यवस्था का विरोध किया जाना चाहिए और उसके स्थान पर वैकल्पिक व्यवस्था लागू की जानी चाहिए । मगर भ्रष्ट परंपरागत व्यवस्था में बदलाव उस वक़्त कठिन महसूस होने लगता है जब अवसरवादी खुदगर्ज़ व्यवस्थापोषक तत्व बदलाव को किसी भी स्थिति में तैयार व रज़ामंद नहीं होते । स्थिति तब और मुश्किल भरी हो जाया करती है जब लोग भ्रष्ट व्यवस्था में जीने के अभ्यस्त हो जाया करते हैं तथा उनकी विरोध चेतना कुंठित हो जाती है या लोग व्यवस्था का विरोध करते भी हैं तो पूर्ण रूप से न करके अलग-अलग टुकड़ों में करते हैं, जिससे विरोध का स्वर कभी सफल नहीं हो सकता ।

स्वदेश की वर्तमान व्यवस्था ब्रिटिश शासन से विरासतन हासिल की गयी है, जिस पर हम लोकतंत्र का ठप्पा लगा कर लोकतांत्रिक बनने का ख़ूब दावा करते नहीं अघाते । आज लोकतंत्र धनाढ्य पूंजीपतियों तथा भ्रष्ट राजनेताओं के हाथ की कठपुतली बन गया है और उनके हाथों गिरवी है । समाजवाद तथा धर्मनिरपेक्षता के नाम पर जनता को बेवक़ूफ़ बनाकर अपना उल्लू सीधा किया जा रहा है । भ्रष्टाचार का घुन व्यवस्था को अन्दर-अन्दर चाल कर कमज़ोर किये डाल रहा है । जन हितकारी योजनाएं प्रशासनाधिकारियों तथा विभागाधिकारियों के लिए सोने का

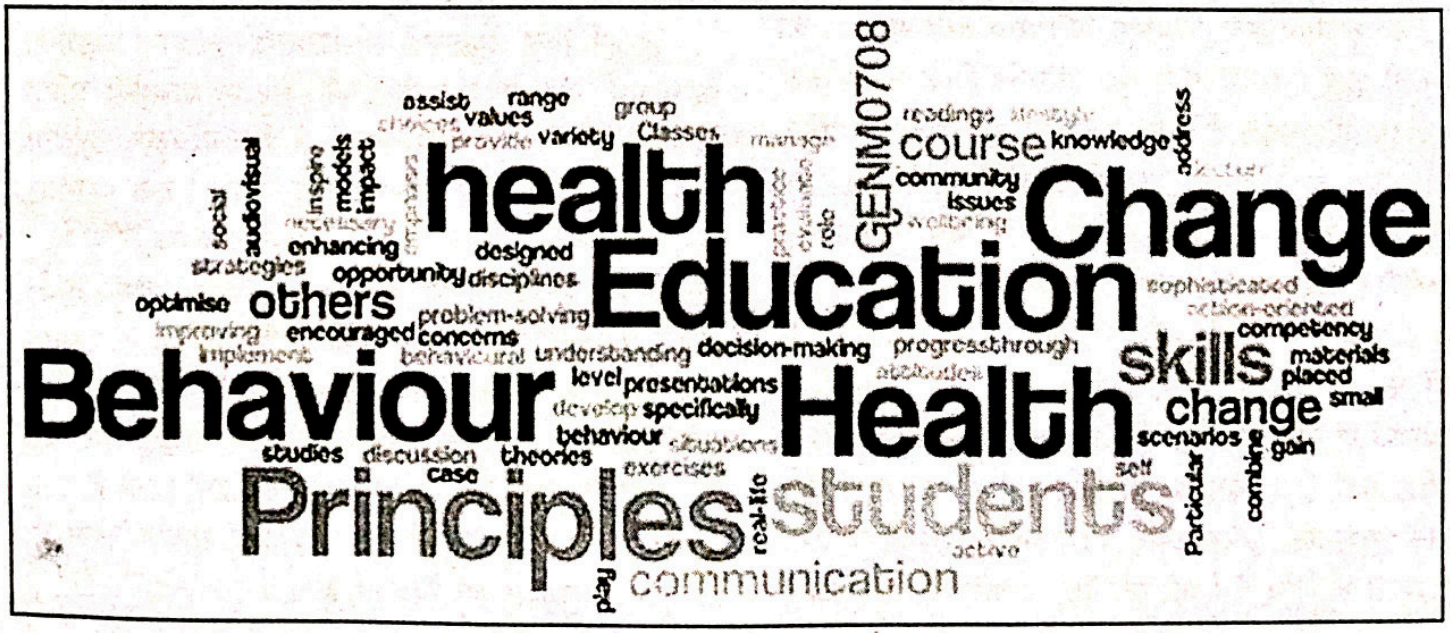

अंडा देने वाली मुर्ग़ी साबित हो रही है । हम धर्म के मर्म को अमल में नहीं लाते मगर बाह्य धार्मिक प्रतीकों को लेकर साम्प्रदायिक दंगा फ़साद पर आमादा हो जाते हैं । चारा घोटाला, कामनवेल्थ खेल घोटाला, कोयला घोटाला, यादव सिंह घोटाला वग़ैरह की शक्ल में नवीन-नवीन घोटालों के प्रकरण आये दिन प्रकाश में आ रहे हैं । उच्चतम तथा उच्च न्यायालय में तो ग़नीमत है । जनपद स्तर पर न्यायालयों में इन्साफ़ खुल्लमखुल्ला बिक रहा है । मुक़दमे की संजीदगी के अनुसार न्यायाधिकारियों के फ़ैसलों का अलग-अलग रेट निर्धारित है । मनचाहा रुपया दीजिए । माफ़िक़ फ़ैसला लीजिए । अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य का अर्थ अपशब्दों का प्रयोग हो गया है । बिहार के विधानसभा चुनाव के दौरान जिस प्रकार दलगत राजनेताओं द्वारा एक-दूसरे के ख़िलाफ़ शैतान, चारा चोर, नरभक्षी तथा ब्रह्मपिशाच जैसे अपशब्दों का सार्वजनिक मंच से खुल्लम-खुल्ला प्रयोग किया गया, क्या वह लोकतंत्र के लिए औचित्यानुकूल, अनुमोदनीय तथा ग्राह्य है ? जनशक्ति भी दलगत, जातिगत तथा सम्प्रदायगत आधार पर विभक्त तथा असंगठित है । भ्रष्ट राजनेता कब चाहेंगे जनता एक हो । वे तो चाहेंगे ही जनता इसी प्रकार अलग-अलग बंटी रहे ताकि उनका सियासी कारोबार मुस्तक़िल तौर पर बेख़ौफ़ मुसलसल फलता-फूलता रहे ।

पिछले दिनों व्यवस्था से असंतुष्ट नयनतारा सहगल, काशीनाथ सिंह, मुनव्वर राणा और अशोक बाजपेयी सहित अनेक नामी-गिरामी साहित्यकारों ने विरोधस्वरूप साहित्य अकादमी का प्रतिष्ठित पुरस्कार लौटा दिया । क्या पुरस्कार लौटा देने मात्र से भ्रष्ट व्यवस्था में बदलाव आ जाएगा ?

हम वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था के विरोध तथा परिवर्तन की बात तो ख़ूब करते हैं मगर यह परिवर्तन सिर्फ़ ऊपर-ऊपर से बाह्यारोपित होता है न कि आंतरिक चेतना से आलोकित और ऊष्मा से संजीवित । सशक्त विरोध का संबंध संपूर्ण सामाजिक दर्शन तथा चिंतन से है । हम एक तरफ़ राजनीतिक तथा शैक्षणिक बदलाव की आवश्यकता पर ज़ोर देते हैं मगर सांस्कृतिक और धार्मिक ह्रास को गंभीरता से नहीं लेते । धार्मिक अंधविश्वासों और जड़ सांस्कृतिक परंपराओं से ग्रस्त हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रसार के प्रति संजीदा नहीं है । व्यवस्था परिवर्तन की हालत यह है कि ख़ाली राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल तथा मुख्यमंत्री तो पांच वर्ष की निर्धारित अवधि में बदल जाया करते हैं मगर शेष व्यवस्था यथावत रहती है । ऐसा नहीं है कि प्रधानमंत्री अथवा मुख्यमंत्री बदल जाने के बाद चौराहे पर वाहन चालकों से कांस्टेबल की वसूली तथा कार्यालयों में भ्रष्टाचार रुक जाता हो । व्यवस्था परिवर्तन के नाम पर केवल कफ़न बदल जाता है और लाश वही रहती है । भ्रष्ट व्यवस्था के स्थान पर हमारे पास कोई विकल्प नहीं है तथा ग़लत व्यवस्था में ऊपर-ऊपर से संशोधन कर, पैचिंग कर हम संतुष्ट हो जाया करते हैं । भ्रष्टाचार के विरोध का हमारा ढंग सशक्त तथा कारगर नहीं होता । सशक्त विरोध का मतलब न सड़क पर हल्ला-गुल्ला है, न संसद तथा विधानसभाओं में तोड़-फोड़ और उठा-पटक है और न पब्लिक प्लेटफार्म पर आरोप-प्रत्यारोप और गाली-गलौज ।

सड़क पर व्यवस्था के विरोध का नेतृत्व जो लोग कर रहे हैं, वे खुद दिशाहीन, ग़ैर-ज़िम्मेदार, अदूरदर्शी तथा वैचारिक दृष्टि से अपरिपक्व हैं । भ्रष्ट व्यवस्था के विरोध में बुद्धिजीवियों की भूमिका नगण्य है । इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, सिविल तथा कलेक्ट्रेट बार एसोसिएशन, प्राथमिक, माध्यमिक तथा विश्वविद्यालय शिक्षक संघ, पत्रकार संघ वग़ैरह संगठनों से जुड़े पदाधिकारी तथा सदस्य सामाजिक और राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों के निर्वहन से उदासीन हैं । वे व्यवस्था विरोधी तो हैं मगर परिवर्तन हेतु व्यावहारिक स्तर पर प्रयासशील नहीं होना चाहते ।

पिछले दिनों व्यवस्था से असंतुष्ट नयनतारा सहगल, काशीनाथ सिंह, मुनव्वर राणा और अशोक बाजपेयी सहित अनेक नामी-गिरामी साहित्यकारों ने विरोधस्वरूप साहित्य अकादमी का प्रतिष्ठित पुरस्कार लौटा दिया । क्या पुरस्कार लौटा देने मात्र से भ्रष्ट व्यवस्था में बदलाव आ जाएगा ?

आज भ्रष्ट व्यवस्था के सशक्त विरोध तथा उसके स्थान पर विकल्प की स्थापना हेतु आगे आने की आवश्यक है । भ्रष्टाचार की तरफ़ से शुतुरमुर्ग़ाना अंदाज़ में आंख मूंद लेने अथवा मुख़ालफ़त के नाम पर निरर्थक चीख़ने-चिल्लाने और शोर गुल मचाने से प्रयोजन पूर्ति नहीं होने वाली है और न सार्थक बदलाव संभव है । इस दिशा में सार्थक पहल से ही मुल्को-मआशरे का विकास होगा ।

हिन्दी काव्य में दलित चेतना

■ प्रा॰ डॉ॰ संजय गडपायले
परभणी (मराठवाडा)

दलित इस शब्द का अर्थ दमन, शोषत, उपेक्षित, घुणित, वंचित आदि है । दलित इस शब्द के अंतर्गत सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक शोषण निहित है । मनु द्वारा निर्मित सामाजिक व्यवस्था में सबसे निचली पायदान पर दलित व्यक्ति आता है । वर्ण व्यवस्था ने इसे दलित और अधूत कहा है ।

दलितों ने अपनी भोगी हुई पीड़ा, दुख-दर्द, जीवन संघर्ष को जब साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति दी तो वह दलित साहित्य कहलाया । संघर्ष, आक्रोश, विद्रोह और जिजीविषा से भरा दलित साहित्य है । दलित चेतना इन्सान और इन्सानियत को महत्व देते हुए मनुष्य की मुक्ति को महत्व देती है । दलित साहित्य अपनी अस्मिता की तलाश में है । वह अधिकार के साथ सत्ता में भागीदार चाहता है । जिसे समाज ने नकारा तथा जो मानवीय अधिकारों से वंचित है उसकी चेतना दलित चेतना है । यह दलित साहित्य की प्रेरणा अम्बेडकर वाद से आयी है । दलित चेतना का संबंध अंबेडकर दर्शन से है । शताब्दियों से वर्ण व्यवस्था में जकड़े दलित के सारे दरवाज़े बंद थे, इन्हें ज्योतिबा फुले जी और डॉ॰ अम्बेडकर जी ने दार्शनिक आधार दिया ।

आरंभ में भारतीय साहित्य में राजा, उच्च वर्ग, भगवान आदि ही प्रमुख रूप से रहे । निम्न, शोषत, क्षुद्र वर्ग को साहित्य से दूर रखा गया । साहित्य समाज का दर्पण होता है । दलित साहित्य की लंबी परंपरा रही है । मनुस्मृति और वेदपुराण की एक चिंतन धारा तो गौतम बुद्ध और संत कबीर की दूसरी ! गौतम बुद्ध और कबीर ने इस सामाजिक विषमता के ख़िलाफ़ वैचारिक सुधार करने का प्रयास किया ।

आरंभ में भारतीय साहित्य में राजा, उच्च वर्ग, भगवान आदि ही प्रमुख रूप से रहे । निम्न, शोषत, क्षुद्र वर्ग को साहित्य से दूर रखा गया । साहित्य समाज का दर्पण होता है । दलित साहित्य की लंबी परंपरा रही है । मनुस्मृति और वेदपुराण की एक चिंतन धारा तो गौतम बुद्ध और संत कबीर की दूसरी ! गौतम बुद्ध और कबीर ने इस सामाजिक विषमता के ख़िलाफ़ वैचारिक सुधार करने का प्रयास किया ।

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में सिद्धो ने वर्णवादी व्यवस्था पर कड़ा प्रहार किया जहां दलित चेतना दिखायी देती है । 'ब्राह्मण न जानते भेद ! यो ही पढ़े ये चारो वेद ।' सिद्धो के बाद नाथों ने भी वर्ण व्यवस्था का विरोध करते हुए कहा 'छोडो वेद वनज व्यापार, पढ़वा गुणिवा लोकाचार' । सिद्ध बुद्ध से अधिक प्रभावित थे ।

कबीर ने हिन्दी काव्य में दलितों के दुख-दर्द, शोषण, वर्ण व्यवस्था की कटु आलोचना की 'जाति-पाति पुछे न कोई हरी को भजे सो हरी का होई' । 1828 में राजा राममोहन राय ने भी ब्रह्म समाज की स्थापना कर वर्ण भेद जाति भेद का विरोध किया । 1867 में प्रार्थना समाज द्वारा दलितों में सुधार का प्रयास हुआ । आधुनिक युग में दलित आन्दोलन तेज़ी से उभरा । 'सरस्वती' में प्रकाशित की कविता को अनेक विद्वानों ने हिन्दी की पहली कविता माना । जयशंकर प्रसाद, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, पंत, निराला, डॉ॰ रामकुमार वर्मा आदि ने दलित चेतना को प्रखरता से प्रस्तुत किया ।

कवि नवीन 'जूठे पत्ते' कविता में भिखारियों को संबोधित करते हुए कहते हैं–छोड़ आसरा आलस्य शक्ति का, रे नर, स्वयं जगत्पति है तू, तू यदि जूठे पत्ते चाटे तो तुझ पर लानत है ।' नवीन ने दलित, शोषित, पीड़ितों को मुक्त करवाने का प्रयास किया वे सर्वत्र समानता चाहते थे ।

निराला ने दलित जीवन से संबंधित अनेक कविताएं

लिखी । दलित, शोषित, पीड़ितों के दुख-दर्द को उन्होंने अपनी कविता के द्वारा वाणी दी । 'वह तोड़ती पत्थर' में दलित शोषित स्त्री का चित्रण है । वह आर्थिक विषमता से संघर्ष करते हुए पूंजीपति वर्ग, जो संवेदना हीन है उसे अपने हथौड़े से तोड़ने की कोशिश करती है । उसका यह प्रहार आर्थिक विषमता पर है ।

राम कुमार वर्मा ने 'एकलव्य' के द्वारा वर्णव्यवस्था, जाति व्यवस्था की कटु आलोचना की–'जातिभेद नही, वर्ग वंश-भेद भी नहीं, शिक्षा प्राप्त करने के सभी है अधिकारी ।' कृषक वर्ग, किसान वर्ग, नारी सुधार आदि आधुनिक कवियों के विषय रहे । भगवती चरण वर्मा कहते हैं–'पशुओ पर है दया, मनुष्यो पर है अत्याचार । व्यंग्य मात्र है और अतीत यह सब तेरा आचार ! अरे ये इतने कोटि अधूत, तुम्हारे वे कौड़ी के दास ।'

प्रगतिवादी काव्य में-दलित चेतना का स्वर प्रखर रहा । नागार्जुन तो दलितों में नवसंकल्प चाहते हैं-'तन जर्जर है भूख प्यास से । व्यक्ति-व्यक्ति दुख दैन्य-ग्रस्त है-लो मशाल अब घर-घर को आलोकित कर दो ।' नागार्जुन की कविता में आस्था, विश्वास और उज्ज्वल भविष्य की कामना है । पूंजीपतियों को वे कहते हैं 'कैसा असहय, कितना जर्जर । यह मध्य वर्ग का निचला स्तर ।' सामाजिक विषमता के ख़िलाफ़ नवनिर्मिति एवं संघर्ष का संदेश देते हुए वे कहते हैं । 'तो उठो । मन और तन की समुची ताकद लगाकर । विघ्न बाधा के पहाड़ो को गिरा दो, ढाह दो । अमंगल के, अशुभ के उन हेतुओं को ध्वस्त कर दो ।'

ये कवि सामाजिक प्रतिष्ठा, समानता, स्वातंत्र्य, राजनीति में दलितों की भागीदारी, तथा नारी मुक्ति की भावना रखते हैं । समाज में व्याप्त वर्ग संघर्ष, पूंजीवाद, आर्थिक विषमता को नष्ट कर मानवीयता को प्रतिष्ठित करना इनका उद्देश्य है । आज वर्तमान में ये दलित कवि विरोध, आक्रोश और आत्मविश्वास के साथ अपना अधिकार प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं । दलित चेतना का संबंध स्वाभिमान, अस्मिता, उपेक्षित आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से ही है ।

आज दलित साहित्य समृद्ध हो रहा है । कविता के क्षेत्र में अनुसया, कुसुम वियोगी, लक्ष्मीनारायण आदि तो कहानी के क्षेत्र में ओमप्रकाश वाल्मीकि, विपिन बिहारी आदि तथा नाटक के क्षेत्र में नेमिशराय, माता प्रसाद एवं उपन्यास के क्षेत्र में सत्यप्रकाश, प्रेम कपाडिया आदि चर्चित है । महिलाओं में कावेरी, समुन प्रभा आदि महत्वपूर्ण है । दलित रचनाकार की आर्थिक स्थिति दयनीय है, इसलिए वह प्रकाशन से कोसो दूर हैं । लेकिन निश्चित ही यह एक दिन महत्वपूर्ण साहित्य होगा । हिन्दी दलित साहित्य का विकास तभी होगा जब दलित वर्ग आर्थिक एवं सामाजिक रूप से संपन्न और स्वतंत्र होगा ।



ग़रीबी उन्मूलन में ज़कात का महत्वपूर्ण योगदान

■ संपादन प्रभाग

इस्लाम ने भीख मांगने की प्रवृत्ति को अवैध ठहराया है और उसने इस व्यवसाय की कठोर निंदा की ताकि प्रत्येक व्यक्ति मेहनत, परिश्रम से ही धन अर्जन करे और ग़रीबी समाप्त हो सके । आप (सल्ल॰) ने कहा "जिसने भीख मांगने का रास्ता अपनाया, अल्लाह उसके लिए ग़रीबी का रास्ता खोल देता है ।" व्यक्ति की बुनियादी आर्थिक समस्या यह है कि देश के विकास को बनाये रखते हुए किस प्रकार उसकी आवश्यकताओं को पूरा किया जाए और किस प्रकार क्षमता एवं योग्यता के अनुसार अपने एवं समाज के विकास तथा अपने लक्ष्य तक पहुंचने के अवसर उसे प्राप्त हो सकें । इस्लाम के आर्थिक प्रबंधन में इन्हीं मूल समस्याओं का समाधान होता है । संपूर्ण मानवता की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु साधनों की उपलब्धता उसकी दृष्टि में रहती है । इस प्रकार व्यक्ति जब धन कमाने लगता है तो उस पर धन कमाने में वैधता की लगाम भी लगायी जाती है कि वह अवैध एवं भ्रष्ट तरीक़े न अपनाए तथा इस्लाम, संपत्ति को जोड़-जोड़कर संग्रह करने की क्रिया की भी स्पष्ट शब्दों में निंदा करता है, क्योंकि इस प्रकार से संपत्ति की परिक्रमा कुछ ही लोगों तक सिमटी रह जाती है । दूसरी ओर प्राकृतिक रूप से संपत्ति समेट-समेट कर एकत्रित करने वाला स्वयं की कुआचरण के रोग, कंजूसी से ग्रस्त हो जाता है । इस संबंध में पवित्र कुरआन (3:180) में उस व्यक्ति को दुष्परिणाम का संकेत देता है, "और जो लोग कंजूसी करते हैं उस चीज़ में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल (कृपा) में से दिया है, वे हरगिज़ यह न समझे कि यह उनके हक़ में अच्छा है । बल्कि यह उनके हक़ में बहुत बुरा है । जिस चीज़ में वह मंहूसी कर रहे हैं उसका क़ियामत के दिन उन्हें तौक़ पहनाया जाएगा । आकाशों और धरती की विरासत अल्लाह ही के लिए है, और अल्लाह जो कुछ भी तुम करते हो, उसे जानता है ।"

इस्लाम कहता है कि ख़र्च करने से व्यक्ति ग़रीब नहीं हो जाएगा बल्कि उसकी संपत्ति बढ़ेगी और उसमें बरकत होगी । "शैतान तुम्हें निर्धन होने से डराता है और कंजूसी जैसी शर्मनाक बात का आदेश देता है मगर अल्लाह तुमसे बख़्शिश और अधिक व्यापकता का वादा करता है ।"

पवित्र कुरआन (9:34) में कहा गया–"ऐ ईमान लाने वालो ! अह्ले किताब के अक्सर विद्वान व धर्मगुरु लोगों के माल अवैध तरीक़ों से खाते हैं और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और जो लोग सोना-चांदी जमा करके रखते हैं और उन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, उन्हें भयंकर दुख देने वाली यातना की मंगल सूचना दे दो ।"

यह इस्लाम की आर्थिक नीति की वे शिक्षाएं हैं जो पूंजीवाद की जड़ पर सीधा प्रहार करती हैं क्योंकि पूंजीवाद का उद्देश्य बचत को जमा कर संपत्ति को बढ़ाने में उस संग्रहित संपत्ति को लगाने तक सीमित रहता है । लेकिन इस्लाम ग़रीबी को मिटाने हेतु ख़र्च करने की शिक्षा देता है जिनमें कल्याणकारी कार्य निहित होते हैं । पवित्र कुरआन इस संबंध में (2:219) बताता है कि–".

..और वह तुम से पूछते हैं कितना ख़र्च करें ? कह दो : जो तुम्हारी आवश्यकता से अधिक हो...।''

''और तुम्हारी संपत्ति में मांगने वाले और धनहीन का हक़ है ।'' (कुरआन, 51:19)

इस्लाम कहता है कि ख़र्च करने से व्यक्ति ग़रीब नहीं हो जाएगा बल्कि उसकी संपत्ति बढ़ेगी और उसमें बरकत होगी । ''शैतान तुम्हें निर्धन होने से डराता है और कंजूसी जैसी शर्मनाक बात का आदेश देता है मगर अल्लाह तुमसे बख़्शिश और अधिक व्यापकता का वादा करता है ।''

(कुरआन, 2:268)

वास्तव में इस्लाम के ये दृष्टिकोण बहुत ही मज़बूत आधारों पर स्थापित हैं, क्योंकि धन को संग्रहित करने और उसको ब्याज के द्वारा समाज में चलाने से धन सिमट-सिमटकर कुछ लोगों के हाथों में इकट्ठा हो जाता है और जनसाधारण की ख़रीदने की शक्ति दिन-प्रतिदिन घटती चली जाती है जिसके परिणामस्वरूप उद्योग, व्यवसाय की आर्थिक नीति में मंदी का दौर दिखायी देने लगता है । इस प्रकार अनेकों की आर्थिक ज़िन्दगी विनाश के दुहाने पर पहुंच जाती है जो अंततः पूंजीवाद के भी विनाश का कारण बन जाती है ।

ऐसे विनाश को रोकने के लिए इस्लामी आर्थिक नीति ज़कात का प्रबंधन हितकारी बन जाता है, और उन लोगों को जिन्हें अपने परिश्रम से आवश्यकता से अधिक धन प्राप्त किया जाता है उन्हें धन संग्रहित न करते हुए बहुत से दान में ख़र्च किया जाता है जिसमें सोसायटी के निम्नवर्ग के लोग ही लाभ उठा सकते हैं । इस प्रकार इस्लाम जहां अपनी उत्तम शिक्षा एवं प्रेरणा के प्रभावी उपायों से समाज में कल्याण, बंधुत्व एवं एकता तथा पारस्परिक सहयोग की चेतना पैदा करता है वहीं ज़कात के प्रबंधन द्वारा पूंजीवादियों की संपत्तियों में से एक भाग सोसायटी के कल्याण हेतु अति आवश्यक रूप से निकलवाता है ।

''ऐ नबी ! तुम उनके मालों में से 'सदक़ा' लेकर उन्हें पवित्र करो और नेकी की राह उन्हें बढ़ाओ ।''

(कुरआन, 9:103)

ज़कात की ऐसी व्यवस्था पर कहा जाता है कि यह मुस्लिम समुदाय की कोऑपरेटिव सोसायटी है, यह उनकी इंश्योरेंस कंपनी है, यह उनका प्रोविडेंट फंड है, यह उनका असहायों का दान पूंजी है, यह उनके अपाहिजों, बीमारों, अनाथों, विधवाओं का आर्थिक साधन है । और इन सबसे बढ़कर यह वह चीज़ है जो मिल्लत को भविष्य की चिंता से मुक्त कर देती है । उसका सीधा-सादा सिद्धांत यह है कि आज तुम धनी हो तो तुम दूसरों की सहायता करो और अगर कल तुम असहाय हो गये तो दूसरे तुम्हारी सहायता करेंगे । तुम्हें यह चिंता करने की आवश्यकता नहीं है कि ग़रीब हो गये तो क्या होगा ? मृत्यु हो गयी तो पत्नी और बच्चों का कैसे बनेगा ? कोई आपदा आन पड़ी, रोगी हो गये, घर में आग लग गयी, बाढ़ से नुक़सान हो गया, दीवालिया निकल गया, तब इन सब परेशानियों से निकलने का क्या रास्ता होगा ? यात्रा में रुपये न रहे तब शेष सफ़र कैसे संभव होगा ? इन सब चिंताओं से मात्र ज़कात परेशानी को दूर करने का माध्यम बन जाती है । तुम्हारा काम मात्र इतना है कि अपनी जमापूंजी में से ढाई प्रतिशत राशि को अल्लाह की इंश्योरेंस कंपनी में अपना बीमार करा लो । क्योंकि इस समय तुम को इस धन की आवश्यकता नहीं है । यह उनकी आवश्यकताओं का धन है जिसे उसकी आवश्यकता रखते हैं । कल जब तुम उसकी आवश्यकताओं में आओगे या तुम्हारा कोई इस धन की आवश्यकता की श्रेणी में आएगा तो न मात्र तुम्हारा अपना दिया हुआ माल बल्कि उससे भी अधिक तुमको वापस मिल जाएगा ।

इस प्रकार इस्लामी आर्थिक नीति के इन उद्देश्यों से ग़रीबी को मिटाना अत्यधिक संभव है । क्योंकि इस्लाम ज़कात, दान द्वारा धन को सभी व्यक्तियों तक पहुंचाता है ताकि प्रत्येक व्यक्ति क्रय-विक्रय में भागीदार बन सकें । लघु उद्योगों को बढ़ाने में तथा उसके द्वारा खेतियां फलें-फूलें व्यापार से अत्यधिक मिल सके तथा जनसाधारण में कुछ एक करोड़पति, लखपति न हो बल्कि सब खुशहाल प्रसन्नचित हों ।



अपराध के साये में मजबूर ज़िन्दगी

■ डॉ॰ अनुराग श्रीवास्तव

शहर के मध्यस्थ प्रमुख चौराहे पर दिन-दहाड़े आटो रिक्शा से खींचकर अध्यापक को गोली मारी, तगादे से लौट रहे गल्ल्य व्यवसायी के मुनीम से चार लाख की सरे बाज़ार लूट, कोचिंग सेंटर से लौट रही छात्रा का अपहरण, बैंक से लौट रहे व्यक्ति से तमंचा सटाकर तथा 2 लाख छीनकर नक़ाबपोश बदमाश नौ दो ग्यारह.....ये वे उन चन्द शीर्षकों के उदाहरण हैं जो आये दिन समाचार पत्रों में शक्ल व अलफ़ाज़ बदल-बदलकर हमारी निगाहों से दो चार होते रहते हैं ।

यदि मुख़्तलिफ़ वारदातों में किसी प्रकार का फ़र्क़ रहता है तो ख़ाली घटना स्थल तथा तारीख़ में मगर क़त्ल की वारदात में सड़क पर बहा गर्भ गाढ़ा लहू वही रहता है । यह ख़ून किसी जाति और धर्म संप्रदाय से ताल्लुक़ रखने वाले दलित, सवर्ण, हिन्दू, मुसलमान अथवा सिख का नहीं, किसी निरपराध निर्दोष इन्सान का ही होता है । अग़वा और अस्मतफ़रोशी के बाद बेरहमी से गला घोंटकर मार डाली गयी किशोरी किसी न किसी की पुत्री अथवा भगिनी होती है । आये दिन किसी न किसी दिन किसी न किसी इलाक़े में घटने वाली बलात्कार, डकैती, छिनैती तथा दहेज हत्या जैसी आपराधिक वारदातों का शीघ्र न थम सकने वाला सिलसिला एक के बाद एक करके मानवीय अन्तरात्मा तथा इन्सानी संवेदना को झिंझोड़ डालता है तथा हमारे मानस पटल पर क़ानून व्यवस्था तथा अमन बहाल से जुड़े अनेकानेक प्रश्न प्रतिप्रश्न तैरने लगते हैं और वे वतन के हुक्मरानों, उनके पैरवीकारों और अवामी नुमाइन्दों से जवाबदेही को कुलबुलाने छटपटाने लगते हैं ।

अपराध का मानव समाज से पुराना प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष संबंध है । मानव समाज को सुव्यवस्थित रूप से संचालित करने के उद्देश्य से जहां एक तरफ़ विधि व्यवस्थापकों द्वारा नियम क़ानून का निर्माण किया गया, वहीं दूसरी तरफ़ स्वार्थ पूर्ति तथा लाभ प्राप्ति के लिए पूर्व स्थापित नियमोपनियमों का उल्लंघन करने वालों की भी समाज में कभी कमी नहीं रही । समाज में विभिन्न रूपों में पहले भी आपराधिक घटनाएं घटित होती रही हैं मगर विगत कुछ दशकों के दौरान इनकी संख्या में जिस हिसाब और रफ़्तार से इज़ाफ़ा हुआ है, वह चिंताजनक तथा ख़तरनाक है । आदमी के चरित्र की हक़ीक़त की पहचान और शिनाख़्त कर सकना दुश्वार हो गया है । ऊपर से शराफ़त की नक़ाब ओढ़े आदमी अन्दर से कितना दूषित-कलुषित है, कौन जानता है । बालिकाओं की इज़्ज़त और अस्मत की हिफ़ाज़त के नज़रिये से सबसे बेहतर, विश्वसनीय तथा इत्मीनानबख़्श जगह घर परिवार से अधिक और क्या हो सकता है मगर जब घर के चाचा व चचाज़ाद भाई जैसे नज़दीकी रिश्तेदार ही उनकी इज़्ज़त आबरू को पलक झपकते भर में चिथड़ा कर डालें तथा भूखे भेड़िये की तरह उसके जिस्म पर झपट कर पाक रिश्तों को तार-तार कर निमिष मात्र में शर्मोहया को नोच कर रख डालें बेचारी असहाय बालिका अपना सम्मान बचाने हेतु कहां जाए, किससे फ़रियाद गुहार करे ?

स्वाधीनता दिवस तथा गणतंत्र दिवस जैसे राष्ट्रीय पर्वों पर देश हित में निष्ठापूर्वक कार्य करने का संकल्प करने वाले ही ज़्यादातर सरकारी योजनाओं में रिश्वतख़ोरी व कमीशनख़ोरी कर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को दीमक सा खोखला कर डाल रहे हैं ।

स्वाधीनता दिवस तथा गणतंत्र दिवस जैसे राष्ट्रीय पर्वों पर देश हित में निष्ठापूर्वक कार्य करने का संकल्प करने वाले ही ज़्यादातर सरकारी योजनाओं में रिश्वतख़ोरी व कमीशनख़ोरी कर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को दीमक सा खोखला कर डाल रहे हैं । विगत कुछ वर्षों के दौरान अलग-अलग तारीख़ों में हुए चारा घोटाला कांड, कामनवेल्थ खेल कांड, कोयला घोटाला कांड, विदेशी बैंकों में अवैध

ढंग से संचित धनराशि वग़ैरह आपराधिक मामले उन आपराधिक कृत्यों से अलहिदा नहीं है जो हत्या, डकैती, छिनैती, दुष्कर्म, दुराचार वग़ैरह की शक्ल में हमारी अंतरात्मा को झिंझोड़ कर रख डालते आ रहे हैं । तंदूरी हत्या कांड, आयुषि हत्याकांड, थरूर कांड आदि आपराधिक कांडों की एक लंबी फ़ैहरिस्त है जो मानवीय संवेदनाओं के क्षरण का उदाहरण है ।

भोगवादी वृत्ति के प्राबल्य, अल्पकाल तथा अल्प श्रम प्रयास में अधिकाधिक संग्रह की अदम्य कामना, पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण, प्रतिशोध, प्रतिद्वंद्विता, आत्म नियंत्रण के अभाव, विलासितापूर्ण जीवन जीने की दुर्दम्य महत्वाकांक्षा आदि अनेकानेक कारणों से आज समाज के पूर्व प्रचलित परंपरागत मापदंड धराशायी तथा परिवर्तित हो रहे हैं जिसका घातक दुष्परिणाम हमें चतुर्दिक आर्थिक अपराध तथा योनापराध के पृथक-पृथक रूपों में दृष्टिगत तथा अनुभूत हो रहा है । तमाम विधि व्यवस्था, सतर्कता अधिष्ठान, न्यायालय तथा पुलिस संगठनके बावजूद इस प्रकार के आर्थिक यौनकेन्द्रित अपराध का दायरा दिन प्रतिदिन मुसलसलज बढ़ता जा रहा है । चतुर्दिक अराजकतापूर्ण स्थिति है ।

बलात्कारियों, दुष्कर्मियों, दुराचारियों, घोटालेबाज़ों, चोर उचक्कों तथा डकैतों के मन में न क़ानून व्यवस्था का ख़ौफ़ शेष रह गया है और न पुलिस संगठन का ।

प्रश्न है हम कब तक ऐसे असुरक्षित तथा अपराध बोझिल सामाजिक परिवेश में घुट-घुटकर जीवन यापन को अभिशप्त रहेंगे ? कब तक जवान लड़कियां जिस्मफ़रोश बलात्कारियों के ज़ालिम हाथों द्वारा नोची जाती रहेंगी ? कब तक हम इस अनिश्चय में जीते रहेंगे कि प्रात:काल प्रयोजनवश निकला किसी का बेटा अथवा कोचिंग-ट्यूशन के लिए निकली किसी की बिटिया सुरक्षित घर लौट पाएगी या नहीं ?

राजनीतिक दलों तथा आपराधिक की अप्रकट गठजोड़ की समाप्ति, अपराधियों के ख़िलाफ़ कार्रवाई में तत्परता, व्यावहारिक जीवन में ईमानदारी, त्याग तथा सच्चाई को प्रोत्साहन आदि के माध्यम से काफ़ी हद तक अपराधोन्मूलन संभव है । इस दिशा में संगठित सार्थक प्रयास कर ही अपराध मुक्त भ्रष्टाचारविहीन समाज़ की स्थापना तथा अमनबहाली की राह में कामयाबी मुमकिन है ।

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com



छोटे ऊंट जैसा जानवर 'लामा'

● संपादन प्रभाग

ऊंट एकमात्र ऐसा जानवर है जो झाड़ियों, कंटीले पेड़ों के पत्ते खाकर गर्म रेगिस्तान में भी बिना पानी पिये कई दिनों तक ज़िंदा रह सकता है । भारत ही नहीं, विश्व के तमाम रेगिस्तानी इलाक़ों में जहां आवागमन और परिवहन के साधन नहीं हैं, वहां ऊंट एक उपयुक्त सवारी का काम करता है । रेगिस्तानी इलाक़ों में इसकी बहुउपयोगिता के कारण ही इसे रेगिस्तान का जहाज़ भी कहा जाता है ।

ऊंट का ज़िक्र आते ही हमारे समक्ष एक डीलडौल वाली आकृति उभरती है । जिसकी गर्दन लंबी और कूबड़धारी पीठ हो । ऐसे में अगर हम बिना कूबड़ वाले ऊंट की बात करें तो सहसा विश्वास नहीं होता ।

यह बात बिल्कुल सच है कि दक्षिण अमेरिका के एंडीज वन प्रांतर में पाया जाने वाला जीव लामा एक विशेष प्रकार का ऊंट ही है । इसकी पीठ पर कूबड़ नहीं होता । इसका आकार ऊंट से थोड़ा छोटा होता है । पूंछ भी थोड़ी छोटी होती है और सारा शरीर बालों से ढंका रहता है ।

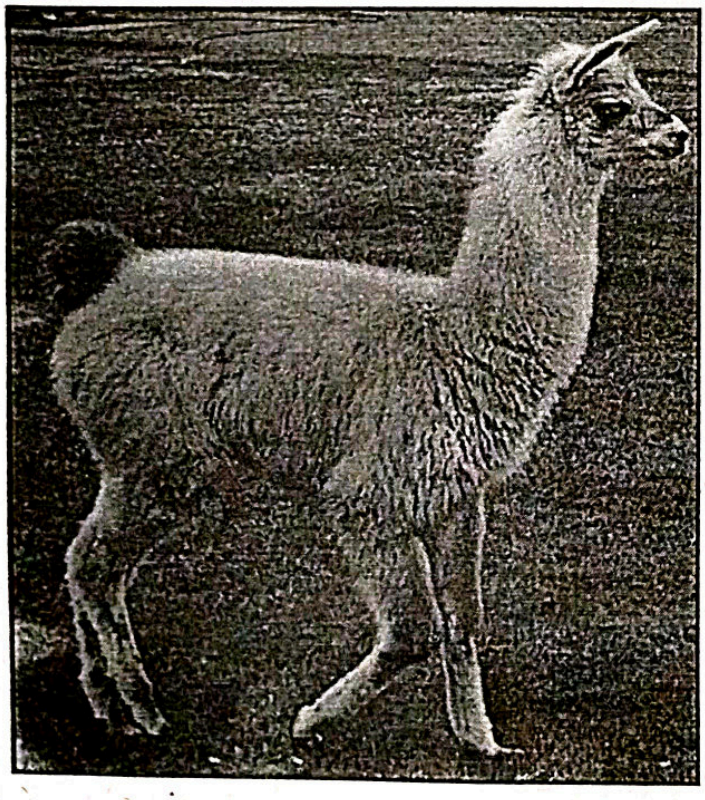

तीन से चार फुट की ऊंचाई वाले लामा का रंग सफ़ेद और काला होता है । यह झुंड में विचरण करता है । झुंड के ही कुछ लामा चौकीदार की तरह रखवाली करते हैं । किसी ख़तरे या शत्रु के आने की आशंका होने पर वे चीख़ का अपने साथियों को सचेत कर देते हैं । कहते हैं कि 1953 में फ्रांस्सिको पिजारो के सेनापतित्व में स्पेन के सैनिकों ने जब दक्षिण अमेरिका के पेरू प्रदेश में प्रवेश किया तो इस ठिगने क़द काठी के बिना कूबड़ वाले ऊंट को देखकर वे आश्चर्य में पड़ गये ।

स्वभाव से शर्मीला एवं स्वछंद विचरण करने वाले लामा को कई बार पालतू भी बनाया जाता है । मादा लामा से दूध प्राप्त होता है, जबकि पालतू लामा नर लामा भार ढोने के काम आते हैं । छोटे लामा 60 पौंड तक और बड़े लामा दो सौ पौंड तक भार वहन कर सकते हैं । और इतने ही वज़न के साथ वे 20 से 25 मील की यात्रा आसानी से तय कर लेते हैं । लामा की तीन प्रमुख श्रेणियां हैं, ग्वानको, अल्पका और विक्यूना । ग्वानको दक्षिण अमेरिका के मैदानों में मिलता है । अल्पका लामा की पालतू क़िस्म की जाति है । जिसका शरीर मुलायम रेशों से ढका रहता है । इससे रेशम तैयार किया जाता है । पर्वत की ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पायी जाने वाली विक्यूना प्रजाति को यहां के मूल निवासी राजसी लामा भी कहते हैं । इनकी रेशमी खाल और मख़मली मुलायम रोएं काफ़ी क़ीमती होते हैं ।

पूर्व समय में ये लामा भार ढोने के अलावा पेरूवासियों के संदेश लाने और ले जाने का काम भी करते थे ।

जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ते महासागरों के 'मृत क्षेत्र'

पिछले हिम युग की समाप्ति के समय महासागरों के तापमान में अचानक हुई वृद्धि से संभवत: एकाएक आक्सीजन कम हुई होगी जिससे उत्तरी प्रशांत क्षेत्र में बड़े पैमाने पर 'मृत क्षेत्र' बन गये ।

यू॰एस॰ नेशनल साइंस फाउंडेशन के महासागरों विज्ञान विभाग के कार्यक्रम निदेशक कंडेस मेजर ने नये अध्ययन के हवाले से बताया 'यह अध्ययन लंबे समय से चली आ रही इस बहस को सुलझाता है कि किन कारणों से महासागरों में 'आक्सीजन मिनिमम जोंस' का विस्तार हुआ जिन्हें 'मृत क्षेत्र' भी कहा जाता है । इस अध्ययन के परिणाम सतह के तापमान में वृद्धि और मृत क्षेत्रों के बीच गहन संबंधी को दर्शाते हैं । क़रीब 14,700 और फिर 11,500 साल पहले बड़े पैमाने पर तापमान में वृद्धि की घटनाएं तेज़ी से हुई थीं । इसके चलते उत्तरी प्रशांत में आक्सीजन की कमी पैदा हो गयी । अध्ययन से इस चिंता को बल मिलता है कि यदि भविष्य में महासागरों के तापमान में वृद्धि होती है तो निम्न आक्सीजन वाले क्षेत्रों का फिर से विस्तार होगा । हाल ही में उत्तर पूर्वी प्रशांत महासागर और बेरिंग सी में असामान्य गर्मी को उसी पैमाने पर नापा गया है जिनका अध्ययन में ज़िक्र है । यदि इस प्रकार की गर्मी बनी रहती है तो आक्सीजन की कमी होने की आशंका अधिक है । सागर में एक अंतराल पर तापमान में दो बार हुई अचानक वृद्धि के बीच स्पष्ट संबंध नज़र आता है जिससे पिछले हिम युग की समाप्ति हुई ।

अध्ययन के प्रमुख लेखक व अमेरिका में कार्नेगी इंस्टीट्यूट फार साइंस के समर प्रेतोरियस ने बताया 'तापमान में वृद्धि की प्रत्येक घटना के दौरान आक्सीजन की कमी अचानक से हुई और यह स्थिति क़रीब एक हज़ार साल तक बनी रही ।' अध्ययन के सहलेखक व आरेगोन स्टेट यूनीवर्सिटी के एलन मिक्स कहते हैं 'बहुत से लोगों का अनुमान है कि जलवायु परिवर्तन धीरे-धीरे होगा और उसका पूर्वानुमान लगाया जा सकेगा लेकिन अध्ययन दर्शाता है कि जलवायु परिवर्तन के जैव पारिस्थितिकीय प्रभाव व्यापक और अचानक हो सकते हैं जिसमें हो सकता है कि चेतावनी बहुत देर से मिले ।' यह अध्ययन नेचर जर्नल में प्रकाशित हुआ है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

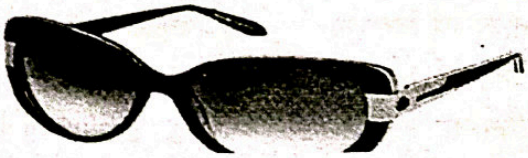


Asian Optics

a multibrand showroom

SNP Area, Sakchi ,Jsr.
2221184

Main Road, Golmuri ,Jsr.
2341175

With Best Compliments From :

DILKUSHA NURSING HOME PVT. LTD

94A, Dilkusha Street, Kolkata-700 017
Phone : (033) 2287 4318, 22803639, 2290 1971
Fax : (033) 2290 1970
E-mail : ddilkusha@gmail.com

- This is a 36 bedded Modern Nursing Home including 6 bedded Elegant INTENSIVE CARE UNIT general surgery LAPAROSCOPIC, GALL BLADDER, APPENDEX AND ORTHOPAEDIC Surgery with latest C-ARM IMAGE INTENSIFIER and also provision for all categories of patients including Maternity and Modern Nursery attached with full fledged DIAGNOSTIC DIVISION equipped with latest U.S.G., X-Ray machines and PATHOLOGY UNIT etc.
- Maxillofacial & Microvascular Reconstruction of the Oro-Facial Region with Radial Forearm Flap. Plastic and Cosmetic Surgery Piles Removal by imported IRC etc. are regularly done. Specialists in all streams including Oncolgy, Urology, Gastroenterology etc.
- Polyclinic, In-house Medicine Shop, 24-hours expert Doctors, RMOs, Matrons, Trained Nursing Staff.
- charges moderate.

Posted on 20-21 December 2015
January 2016
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.12.2015
Total Pages-52 (With Covers)

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017

Cell no:9822150053(R.K)
9822100083(R.K)
9822163036(J.K)
8600825867(S.K)
Office no: 08326450183

KHAN BROS



M/s. GOA BARREL SUPPLIERS
M/s. HINDUSTAN CONTAINERS
M/s. GOA GUNNY TRADERS
M/s. JAY KAY PLASTICS

PLOT: S/2, COLVALE INDUSTRIAL ESTATE-COLVALE-MAPUSA- GOA
(Dealers in all industrial Scrap materials & reconditioning of input materials)





